ॐ

वर्ष-6, अंक-17, 1-15 सितम्बर, 2021 (पाक्षिक)

चाणक्य वार्ता

ISSN 2456-1207

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

मूल्य : 50 रुपये

कुल पृष्ठ 44

नई दिल्ली में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्तक का भव्य लोकार्पण

देहरादून में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्तक पर परिचर्चा

चेन्नई में 'चरैवेति! चरैवेति!! के तमिल संस्करण का भव्य लोकार्पण

नहीं रहे हिन्दुत्व के पुरोधा कल्याण सिंह

स्वामी द्वारा एकांत में कहे गए गुप्त रहस्यों को मूर्ख व्यक्ति द्वारा ही प्रकट किया जाता है।

VISIT…

नई दिल्ली स्थित कंस्टीट्यूशन क्लब में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्तक के लोकार्पण समारोह की कुछ झलकियाँ

दीप प्रज्जवलन एवं जन गण मन के साथ समारोह का प्रारम्भ करते हुए महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी, पीयूष गोयल, अश्विनी चौबे एवं अन्य अतिथिगण।

मंचासीन अतिथियों भगत सिंह कोश्यारी, पीयूष गोयल, अश्विनी चौबे, श्याम जाजू, लक्ष्मीनारायण भाला व प्रमोद माहेश्वरी का सम्मान करते हुए चाणक्य वार्ता के पदाधिकारी

पुस्तक संकलन में सहयोग प्रदान करने हेतु डॉ. अमर सिंघल, डॉ. हरीश जैन एवं यशवंत सिंह नेगी का सम्मान करते हुए मंचासीन अतिथि, साथ में हैं पुस्तक के प्रकाशक एवं सम्पादक डॉ. अमित जैन

चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा आयोजित लोकार्पण समारोह में उपस्थित अनेक विशिष्ट जन

विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें पृष्ठ 14 पर

28.8.2021

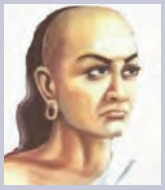

चाणक्य वार्ता

सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 6, अंक : 17, 1-15 सितम्बर, 2021

अनुक्रम

5 सम्पादक के नाम पत्र

6 सम्पादक की कलम से

राष्ट्रीय

9 तालिबान की पंजशीर के शेरों से टक्कर : रंजना मिश्रा

11 नहीं रहे हिन्दुत्व के पुरोधा कल्याण सिंह : डॉ. कुलदीप त्यागी

राज्यों से

14 दिल्ली—चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्तक का ऐतिहासिक विमोचन समारोह संपन्न

18 उत्तराखंड—देवभूमि उत्तराखंड में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्तक पर परिचर्चा का भव्य समारोह संपन्न

23 तमिलनाडु—चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक की पुस्तक चरैवेति! चरैवेति!! के तमिल संस्करण का चेन्नई राजभवन में भव्य लोकार्पण संपन्न

नई दिल्ली कार्यालय
मुख्यालय :
'सन्निधि', ए-28, मनसाराम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
कॉरपोरेट कार्यालय :
321, तृतीय तल, वर्धमान मॉल, प्लॉट-2, सेक्टर-19, द्वारका, नई दिल्ली-110077
सम्पर्क : 09871909808, 08571841127
ई-मेल : **chanakyavarta@gmail.com**

उत्तर क्षेत्र कार्यालय
एस.सी.ओ. 24, द्वितीय तल, सेक्टर-11, पंचकूला, हरियाणा-134112
सम्पर्क : 0172-4672424, 09466988764

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यालय
116, कॉमर्स हाउस, एम.जी. रोड, फैंसी बाजार निकट ऐक्सिस बैंक, गुवाहाटी, असम-781001
सम्पर्क : 09101834214, 9864337619

दक्षिण क्षेत्र कार्यालय
13, नल्लन्ना मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600 079
सम्पर्क : 9342302248, 9941245660

संरक्षक
डॉ. योगेन्द्र नारायण (पूर्व महासचिव, राज्यसभा)
कुलाधिपति, गढ़वाल विश्वविद्यालय
लक्ष्मीनारायण भाला (वरिष्ठ साहित्यकार)

परामर्श मंडल
ए. सूर्य प्रकाश (पूर्व अध्यक्ष, प्रसार भारती)
पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि
(कुलाधिपति, रोमा विश्वविद्यालय)
वेणुगोपालन (वरिष्ठ पत्रकार)

सम्पादक मंडल
सम्पादक : **डॉ. अमित जैन**
राजनीतिक सम्पादक : **ओम प्रकाश पाल**
उप सम्पादक : **सारांश कनौजिया**

राष्ट्रीय समन्वयक
घनराज भम्बी
(वरिष्ठ पत्रकार—रक्षा सेनाएँ एवं अर्द्ध सैनिक बल)

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार प्रभारी
दिलीप बैनर्जी, कोलकत्ता

आर्थिक सलाहकार मंडल
सी.ए. मन्त्रेश्वर कर्ण
सी.ए. स्वीटी जैन

अन्तरराष्ट्रीय सलाहकार मंडल
धर्मपाल महेन्द्र जैन, टोरंटो, कनाडा

विधि सलाहकार मंडल
योगेश कुमार (चेयरमैन, नेचर व्यू)
अजय नागर (स्वतंत्र पत्रकार)
डॉ. भरत कुमार, (शिक्षाविद्), बनारस

राज्य प्रभारी
उत्तर क्षेत्र प्रभारी—**विशाल शर्मा**, चंडीगढ़
पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रभारी—**राजीब अगस्ती**, गुवाहाटी
दक्षिण क्षेत्र प्रभारी—**नवरतन पींचा जैन**, चेन्नई
पश्चिमी क्षेत्र प्रभारी—**आशा सिंह देवासी**, मुम्बई
पूर्वी क्षेत्र प्रभारी—**प्रकाश बेताला**, भुवनेश्वर
कर्नाटक प्रभारी—**हर्ष गोयल**, बेंगलुरु
तमिलनाडु प्रभारी—**जे.पी. ललवानी**, चेन्नई
मध्य प्रदेश प्रभारी—**लखनलाल चौरसिया**, भोपाल
पश्चिमी उ.प्र. प्रभारी—**अंकित जैन**, मेरठ

चिंतन

29 राष्ट्र ध्वज : भगवा या तिरंगा : कांग्रेस और संघ : एक सिंहावलोकन-29 : कृष्णानंद सागर
30 आचार्य चाणक्य की ये बातें-जीवन में अवश्य काम आएंगी : रमेश जैन

व्यंग्य

32 गलत मुद्दों में फँसा देश : धर्मपाल महेंद्र जैन

समाचार जगत

33 खबरों में देश-विदेश : सोनम जैन
34 उत्तर भारत की खबरें : विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन
35 पूर्वोत्तर भारत की खबरें : राजीब अगस्ती/आलोक सिंह
36 दक्षिण भारत की खबरें : नवरतन पिंचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय
39 पश्चिम भारत की खबरें : आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

जॉब अलर्ट

41 सरकारी नौकरी के अवसर : सीए स्वीटी जैन

सबरंग

42 सिनेमा, टेलीविजन, आयोजन : डॉ. महेश्वर

देश भर में 'चाणक्य वार्ता' के प्रतिनिधि

राज्य ब्यूरो चीफ
धीरेन्द्र मिश्र, नई दिल्ली
डॉ. अमर सिंहल, जयपुर, राजस्थान
शैलेन्द्र जैन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
इन्द्रमोहन मिश्रा, हरिद्वार, उत्तराखंड
डॉ. गुलाब सिंह, यमुना नगर, हरियाणा
शरद छिब्बर, चंडीगढ़
रमेश गुप्ता, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर
एस.के. व्यास, जलंधर, पंजाब
गुरुवचन सिंह, शिमला, हिमाचल प्रदेश
सतीश सिंह, गुवाहाटी, असम
आलोक सिंह, शिलांग, मेघालय
शुभ्रांशु दाम, धर्मनगर, त्रिपुरा
तुम्बम रीबा 'लीली', ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश
हुरई जेलियांग, दीमापुर, नागालैंड
डॉ. ललमुआनओमा साइलो, आईजोल, मिजोरम
किरन कुमार, इम्फाल, मणिपुर
डॉ. छुकी लेप्चा, गंगटोक, सिक्किम
वेद प्रकाश पाण्डेय, बेंगलुरु, कर्नाटक
ईश्वर करुण, चेन्नई, तमिलनाडु
जी. गौरीशंकर, हैदराबाद, तेलंगाना
उमा महेश्वर रेड्डी, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश
श्रीकांत कण्णन, पुडुचेरी
अरुण लक्ष्मण, तिरुवन्तपुरम, केरल
धीरेन बरोट, अहमदाबाद, गुजरात
अमोस छेत्री, पणजी, गोवा
किशोर आपटे, मुम्बई, महाराष्ट्र
विनायक भिषे, सतारा, महाराष्ट्र
विनोद कुशवाहा, भोपाल, म.प्र.
आदेश ठाकुर, रायपुर, छत्तीसगढ़
सियानंद मंडल, पटना, बिहार
गौतम चौधरी, राँची, झारखंड
दिनेश जैन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
राजेन्द्रपाल शर्मा, पोर्टब्लेयर, अंडमान निकोबार

नेशनल सोशल मीडिया हेड
आदित्य जैन, यमुनानगर

नेशनल मार्केटिंग हेड
पीयुष जैन, नई दिल्ली

जिला ब्यूरो चीफ
अविनाश पाठक, नागपुर, महाराष्ट्र
अनमोल जैन, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
सुनीता गोस्वामी, मथुरा, उत्तर प्रदेश
डॉ. डी.के. अस्थाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
संजय सक्सेना, कानपुर, उत्तर प्रदेश
सोनम जैन, दिल्ली
अजय भट्ट, देहरादून
ए. रणजीत, आईजोल, मिजोरम

*नोट : देश के कोने-कोने में आप अपने समाचार पत्र हॉकर के माध्यम से घर बैठे 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका मँगा सकते हैं। यदि आपको पत्रिका मिलने में कठिनाई होती है, तो आप 'चाणक्य वार्ता' के मुख्य प्रसार कार्यालय, नई दिल्ली में **08586858185** पर सम्पर्क कर सकते हैं अथवा*

***chanakyavarta@gmaiD.com** पर ई-मेल भी कर सकते हैं।*

—प्रसार प्रबंधक

© सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय रहेंगे।

इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसाइटी, नई दिल्ली का पाक्षिक प्रकाशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमित जैन के लिए विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद से मुद्रित एवं ए-28, मनसाराम पार्क, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : अमित जैन।

आवरण व लेआउट : **स्वपन कम्यूनिकेशन, दिल्ली**

वेबसाइट : www.chanakyavarta.com

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर अपने विचार या कोई सुझाव हमें हमारी ई-मेल आईडी response50123@gmail.com पर भेज सकते हैं। स्थान की उपलब्धता के अनुसार हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
—सम्पादक 'चाणक्य वार्ता'

तमिलनाडु राजभवन में आयोजित चरैवेति! चरैवति!! के तमिल संस्करण के विमोचन कार्यक्रम में आमंत्रण के लिये आपका बहुत आभार। कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। मैं उनकी भी बहुत आभारी हूं कि जिन्होंने मुझे इस कार्यक्रम में भागीदारी का अवसर दिया।

कुमुद वार्ष्णेय
समाजसेविका, चेन्नई, तमिलनाडु

चाणक्य वार्ता का अंक-16 'तमिलनाडु का साहित्य सौन्दर्य परिशिष्ट' में सभी लेखकों ने तमिलनाडु की यात्रा के लिए एक अद्भुत प्रेरणा पैदा की है। विशेष रूप से डॉ. लता सुरेश द्वारा लिखित लेख 'वल्ललार के सिद्धांतों में आत्म-ज्ञान : एक परिचय' के माध्यम से 'रामलिंगम स्वामी' द्वारा लिखित ग्रंथ 'तिरुअरुत्पा' का ज्ञान हुआ और ग्रंथ को पढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिला। अध्यात्म के बारे में उनकी बातें अत्यंत उपयोगी हैं। उन्होंने बताया है कि अहंकार कैसे उत्पन्न होता है और उसे दूर कैसे रखा जा सकता है। इसी प्रकार डॉ. दिलीप धींग का लेख 'तमिल साहित्य के संवर्धन में जैनों का योगदान : एक विहगावलोकन' अति प्रभावशाली लेख है और किस कारण जैन धर्म को राजाश्रय प्राप्त हुआ, यह जानना अत्यंत उपयोगी है। जैनों द्वारा रचित तमिल साहित्य एवं जैनों द्वारा रचित तमिल जैन साहित्य का संक्षिप्त वर्णन अति ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक है। लता वेंकटेश का लेख 'शैव भक्ति के संवर्धन में तमिल की महान नारियों का योगदान' तमिलनाडु की ऐसी वास्तविकता में झाँकने का द्वार खोलता है जो बाहरी दुनिया के लिए अधिकतर अनजान है। वास्तव में इस संस्करण ने तमिलनाडु को बाहरी दुनिया के बीच लाकर प्रेम प्रसंगयुक्त कर दिया है। ऐसे विशेषांक प्रकाशित करने का चाणक्य वार्ता का प्रयास बहुत प्रशंसनीय है। दूसरे राज्यों पर भी ऐसा ही विशेषांक 'चाणक्य वार्ता' द्वारा समय-समय पर प्रस्तुत किया जाता रहे, यह हमारा आग्रह है।

महादीप सिंह जमवाल
ऊधमपुर, जम्मू कश्मीर

चाणक्य वार्ता के 16 अगस्त के तमिलनाडु परिशिष्ट में जे.पी. ललवानी का बनवारी लाल पुरोहित पर लेख पढ़ा। मोदी सरकार ने उनकी प्रतिभा को देखते हुये ही पहले पूर्वोत्तर में उन्हें राज्यपाल की जिम्मेदारी दी और उसके बाद उन्हें दक्षिण भारतीय राज्य तमिलनाडु का राज्यपाल बनाया। दोनों राज्यों की भाषा और संस्कृति बनवारी लाल जी के लिये नई थी। इसके बाद भी उन्होंने जिस कुशलता के साथ अपने दायित्वों का निर्वाहन किया, उसकी जितनी प्रशंसा की जाये कम ही है। मोदी सरकार आने के बाद एक व्यवस्था के तहत अधिकांश राज्यपालों को उनका 5 वर्ष का कार्यकाल समाप्त होने के बाद कार्यमुक्त कर दिया जाता है, किंतु बनवारीलाल जी पुरोहित की उत्कृष्ट कार्यशैली को देखते हुये, केंद्र सरकार ने उन्हें पंजाब राज्य का राज्यपाल नियुक्त किया है। इसके साथ ही वे केंद्र शासित प्रदेश चण्डीगढ़ के प्रशासक भी रहेंगे। मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं।

आर. अश्विन
बैंगलुरु, कर्नाटक

चाणक्य वार्ता के 16 अगस्त के तमिलनाडु परिशिष्ट में डॉ. के. वत्सला 'किरण' का तमिल विद्वान तिरुवल्लुवर की रचना तिरुक्कुरल के बारे में लेख पढ़ने का अवसर मिला। मैं उत्तर भारत में रहता हूं। साहित्य में रुचि होने के बाद भी मैं केवल हिन्दी और अंग्रेजी में उपलब्ध रचनाओं को ही पढ़ पाता हूं। किंतु मेरे मन में सदैव भारत के प्रत्येक श्रेष्ठ साहित्यकारों और उनकी रचनाओं के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है। अत: तमिल साहित्य और उसमें समाहित अनेक रचनाओं को पढ़कर मुझे अत्यंत गौरव की अनुभूति हुई। अलमेलु कृष्णन के लेख से पांच विशिष्ट तमिल महाकाव्यों की जानकारी भी मिली, जो अत्यंत ज्ञानवर्धक थे।

डॉ. रमेश उपाध्याय
नई दिल्ली

चाणक्य वार्ता के 16 अगस्त के अंक में मुझे डॉ. श्रीलता सुरेश के एक लेख से तमिलनाडु के महादानी (वल्ललार) रामलिंगम स्वामी के बारे में जानकारी मिली। जैसा की उनको महादानी की उपाधि मिली हुई है। उसी से समझ में आता है कि वो साहित्यकार के साथ ही एक आदर्श व्यक्ति भी थे। लेखिका के अनुसार उन्हें भगवान का पुत्र माना जाता है। हमारी भारतीय संस्कृति की यही महानता है कि यदि कोई भी हमारे लिये भगवान के समान आदर्श स्थापित करता है, तो हम उसे भगवान का अवतार या उनका पुत्र मान लेते हैं और उनका सम्मान भी भगवान की तरह ही करते हैं।

आनंद भाई पटेल
अहमदाबाद, गुजरात

चाणक्य वार्ता के तमिलनाडु परिशिष्ट में डॉ. दिलीप धींग का तमिल साहित्य में जैन धर्म से जुड़े विद्वानों एवं संतों के योगदान पर केंद्रित शोध लेख पढ़ा। लेख में डॉ. धींग ने बताया कि किस प्रकार जैन धर्म दक्षिण भारत में ईसा से भी पूर्व के कालखंड से विद्यमान है। निश्चित रुप से दक्षिण भारत के विकास में भी जैन धर्म का अमूल्य योगदान रहा है। तमिल साहित्य का निर्माण तो लगभग जैन विद्वानों ने ही किया है। इसी प्रकार साहित्य की अन्य विधाओं में भी जैन विद्वानों का दक्षिण भारत में ही नहीं पूरे देश में अविस्मरणीय योगदान है।

आशीष जैन
गुवाहाटी, असम

चाणक्य वार्ता के 16 अगस्त के तमिलनाडु परिशिष्ट में लता वेंकटेश ने शैव भक्ति के संबंध में तमिल महिलाओं के योगदान की विस्तृत जानकारी दी। वास्तव में जिस अटूट भक्ति भाव से भारतीय नारियों ने प्रभु भक्ति की है, वैसा कोई और नहीं कर सकता है। जन्माष्टमी भगवान श्री कृष्ण के जन्म का दिवस है। लेकिन उनके बारे में यह भी कहा जाता है कि राधे-राधे कहो, चले आयेंगे बिहारी (श्री कृष्ण)। राधा रानी को यह प्रतिष्ठा उनकी भक्ति के कारण ही मिली। इसी तरह मीरा ने भी अटूट भक्ति का परिचय दिया। शैव भक्ति की बात करने पर भी विभिन्न महान नारियों का वर्णन मिलता है, उनका भाव भले ही वैष्णव भक्त महिलाओं से अलग हो।

पं. श्याम सुंदर दास शास्त्री
देहरादून, उत्तराखंड

अफगानिस्तान में तालिबान का राज, भारत के लिए मुश्किल घड़ी

इतिहास के पन्नों में अफगानिस्तान एक दौर में हिंदू राष्ट्र था। आज वहां पर एक बार फिर से तालिबान का राज कायम हो चुका है। राजनीतिक कार्यालय के अध्यक्ष मुल्ला अब्दुल गनी बरादर और तालिबान के शीर्ष धार्मिक नेता मुल्ला हेबतुल्लाह अखुंदजादा अफगानिस्तान में सर्वोच्च प्राधिकारी हो सकते हैं। इन सबके बावजूद अफगानिस्तान के भविष्य को लेकर अभी अनिश्चितता के बादल छाए हुए हैं। ऐसा इसलिए कि सरकार के गठन को लेकर विभिन्न आतंकी समूहों में मतभेद बरकरार है। आईएस-के ने तो अपनी मंशा का खुलासा भी कर दिया है।

आईएसआईएस खुरासन वर्तमान प्रारूप में सरकार के गठन से नाराज है। आईएस शरिया कानून के आधार पर शासन चाहता है। फिर अफगानिस्तान के भविष्य की रूपरेखा को लेकर आईएस-के का तालिबान के साथ मतभेद 2015 से ही लगातार जारी है। हक्कानी, अलकायदा, लश्कर व अन्य कबीलाई संगठन सरकार में अपनी प्रभावी भूमिका चाहते हैं। इतना ही नहीं पंजशीर प्रांत पर कब्जे को लेकर नॉदर्न अलायंस के एनआरएफ से तालिबान का संघर्ष पिछले कुछ दिनों से जारी है। अगर पंजशीर पर तालिबान कब्जा कर भी ले तो सरकार पर खतरे को लेकर संकट पूरी तरह से नहीं टल पाएगा।

ऐसा इसलिए कि तालिबान ने अपने इस्लामिक एजेंडे पर काम करने का इरादा जाहिर कर दिया है। ऐसा करना उसके लिए अमेरिका के साथ वादा खिलाफी माना जाएगा। ऐसे में वेट एंड वाच की भूमिका में दिखाई देने वाला अमेरिका और उनके सहयोगी देश आगामी महीनों में तालिबान सरकार के खिलाफ अपनी सक्रियता बढ़ा सकते हैं।

वहीं इस्लामिक स्टेट यानि आईएस ने भी साफ कर दिया है कि तालिबान को अफगानिस्तान में जीत हासिल नहीं हुई है बल्कि अमेरिका ने इस मुल्क की कमान उन्हें सौंप दी है। आईएस ने अपने साप्ताहिक अख़बार अल-नबा के संपादकीय में कहा है कि ये अमन के लिए जीत है, इस्लाम के लिए नहीं। ये सौदेबाज़ी की जीत है न कि जिहाद की। आईएस ने बदले हुए तालिबान को इस्लाम का नक़ाब पहने एक ऐसा 'बहुरूपिया' करार दिया है जिसका इस्तेमाल अमेरिका मुसलमानों को बरगलाने और क्षेत्र से इस्लामिक स्टेट की उपस्थिति ख़त्म करने के लिए कर रहा है। हालांकि, आईएस ने स्पष्ट नहीं किया है कि उनका अगला टारगेट क्या है लेकिन उसके रुख से साफ़ है कि वो अफगानिस्तान की ओर संकेत कर रहे हैं। फिर इस्लामिक स्टेट या दाएश पहला ऐसा बड़ा चरमपंथी संगठन है जिसने तालिबान के तत्कालीन नेता मुल्ला मोहम्मद उमर की सत्ता को चुनौती दी थी।

अफगानिस्तान में अमेरिका हारा नहीं है। उसने अपने राष्ट्रीय हितों का ख्याल रखते हुए तालिबान के हाथों में शर्तों के साथ सत्ता हस्तांतरित कर दी है। करार के तहत तालिबान को समवेशी सरकार का गठन करना होगा। मानवाधिकारों का पालन करने के साथ उसे अपनी सरजमीं से आतंकी गतिविधियों के संचालन पर भी रोक लगानी होगी। साथ ही महिला अधिकारों को बढ़ावा देना होगा। इन पहलुओं की वजह से ही अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, कनाडा सहित दुनिया के अधिकांश देश वेट एंड वाच की स्थिति में हैं। किसी भी देश ने तालिबान सरकार को अपनी मान्यता नहीं दी है।

चीन और रूस का दूतावास पहले की तरह जरूर काम कर रहा है, लेकिन दोनों ने मान्यता देने की घोषणा नहीं की है। रूस अफगानिस्तान में दिखाई जरूर दे रहा है, लेकिन उसे किसी अनहोनी की आशंका भी है। चीन अमेरिका की तरह अपना प्रभाव तालिबान पर जमाना चाहता है, लेकिन उसे भी पता है कि शिनजियांग में आतंकी गतिविधियों को रोकने में तालिबान के नेता विफल रहे तो उसका संबंध लंबा नहीं खिंच पाएगा। चीन की सबसे बड़ी चिंता भी शिनजियांग प्रांत के उईगर मुसलमान हैं। उसे लगता है कि शिनजियांग में आतंकी गतिविधियां न रुकना नुकसान का सौदा हो सकता है। फिलहाल चीन, पाकिस्तान, ईरान और रूस खुलकर तालिबान के पक्ष में मोर्चा संभाले हुए हैं।

अफगानिस्तान में तालिबान राज कायम होने का भारत पर असर पड़ना तय है। भारत की सबसे बड़ी चिंता यह है कि लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे समूहों को भारत पर हमले के लिए अब पहले से ज्यादा सुरक्षित पनाहगाह मिल गयी है। आने वाले दिनों में तालिबान का नियंत्रण होने की वजह से पाकिस्तानी सेना और उसकी खुफिया एजेंसियों का प्रभाव निर्णायक होगा। ऐसे में अफ़ग़ानिस्तान में पिछले दो दशकों से चलाई गई विकास और बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं में भारत की भूमिका सिमट जाएगी। भारत का 3 बिलियन डॉलर का निवेश फंस जाएगा। भारत के लिए ईरान के चाबहार बंदरगाह को विकसित करने का काम भी अव्यावहारिक हो सकता है।

ऐसी स्थिति में भारत के पास जो विकल्प हैं उससे नतीजे भारत के लिए राहत देने वाले होंगे, ऐसी उम्मीद बहुत कम है। भारत के पास विकल्प यह है कि वो पहले की तरह काबुल में केवल लोकतांत्रिक सरकार का समर्थन करने के अपने सिद्धांत पर टिका रहे और सरकार को अंत तक राजनीतिक और मानवीय सहायता प्रदान करता रहे। दूसरा अफगान नेशनल डिफ़ेंस एंड सिक्योरिटीज़ फोर्सेज यानी एएनडीएसएफ को संभवत: ईरान के रास्ते से गोला-बारूद और हवाई सहायता जैसी सैन्य मदद दी जाए।

तीसरा विकल्प यह है कि तालिबान के साथ संपर्क को तेज़ कर दिया जाए। इस विकल्प पर भी पाकिस्तान के चलते भारत को अधिक लाभ होने की संभावना न के बराबर है। ऐसे में भारत के पास भी आखिरी विकल्प वेट ऐंड वाच का है, जिस पर अमल जारी है। यह विकल्प उचित लगता है, लेकिन इससे बातचीत के टेबल पर भारत की अहमियत दांव पर लग जाती है।

—डॉ. अमित जैन

हरियाणा सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हरियाणावासियों के लिए सुनहरा मौका

हर हित Store

की फ्रैंचाइजी लेने के लिए आवेदन आमंत्रित हैं

- आई.टी. सहयोग एवं व्यापार विकास
- अच्छी गुणवत्ता का सामान उचित दाम पर उपलब्ध
- इंफ्रॉस्ट्रक्चर सहायता
- आर्थिक रूप से कमजोर आवेदकों को मुद्रा लोन प्राप्त करने में सहायता
- व्यावसायिक प्रशिक्षण सहायता
- गांवों व शहरों में हर-हित के स्टोर तक सामान की डोर स्टेप डिलीवरी

आवेदन के लिए योग्यता व आवश्यक दस्तावेज़

- न्यूनतम शिक्षा 12वीं पास
- आयु 21 से 35 वर्ष तक
- पैन कार्ड और आधार कार्ड
- हरियाणा मूल निवासी प्रमाण-पत्र

आवेदन करने के लिए निम्न क्यू आर कोड स्कैन करें

अन्य जानकारी के लिए निम्न क्यू आर कोड स्कैन करें

हरियाणा एग्रो इंडस्ट्रीज कॉरपोरेशन लिमिटेड

+91 - 9517 9517 11

सुबह 8 बजे से शाम 6 बजे तक

कृषि तथा किसान कल्याण विभाग, हरियाणा

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा

www.prharyana.gov.in | @DiprHaryana

www.centuryply.com
CENTURYPLY®
LAMINATES | PLY
CenturyPly and CenturyLaminates come with specially designed surface treatment - ViroKill Technology.
Contains Activated Nanoparticles
Ruptures and kills 99.99% viruses on surface contact
Saves you from contamination
Now With
VIROKILL
Kills 99.99% Viruses
Raho Befikar
Corporate Office: Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata – 700088
+91 33 39403950
1800-5722-122
customerhelpdesk@centuryply.com
Century Plyboards India Limited
Century Plyboards (India) Ltd.
Century Plyboards India Ltd
Century Plyboards (India) Limited
Century Plyboards (I) Limited

ISO 9001 Certified
SKIPPER
PIPES
FIXED FOR LIFE
COMPLETE RANGE OF PVC PIPES AND BATH FITTINGS
CPVC | UPVC | SWR | UGD | HDPE | BOREWELL | AGRICULTURE
CISTERN | SEAT COVER | BATH FITTINGS
NSF
pw
FOR ENQUIRY : enquiry@skipperlimited.com | Toll Free : 1800 120 6842

तालिबान की पंजशीर के शेरों से टक्कर

रंजना मिश्रा

काबुल में कब्जे के बाद पूरी दुनिया को लगा था कि अफगानिस्तान पर तालिबान की हुकूमत कायम हो गई। सभी हैरत में थे कि कैसे इतनी जल्दी तालिबान ने अफगानिस्तान पर कब्जा कर लिया। इधर तालिबानी राष्ट्रपति भवन में घुसे और उधर राष्ट्रपति अशरफ गनी अपना मालमत्ता समेटकर मुल्क से बाहर निकल गए। अब आने वाली कई पीढ़ियां महज 70 हजार तालिबानी लड़ाकों के आगे तमाम हथियारों से लैस साढ़े तीन लाख अफगान फौजियों के घुटने टेकने के किस्से सुनती रहेंगी, लेकिन इसी के साथ-साथ अपने जज्बे और जीदारी के लिए अफगानिस्तान के एक ऐसे इलाके की मिसाल भी दी जाती रहेगी, जो इस देश का वह अभेद्य किला है जिसे आज तक कोई नहीं जीत पाया, यह इलाका है पंजशीर। पंजशीर फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ होता है पांच शेर। पंजशीर में रहने वाले लोग तालिबान से नहीं डर रहे बल्कि उन्होंने तय कर लिया है कि यदि तालिबान ने इधर गलती से भी आने की हिमाकत की तो उसे मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।

पंजशीर घाटी की आबादी करीब 2 लाख लोगों की है। पंजशीर में ताजिक समुदाय के लोगों की एक बड़ी रिहाइश है। पूरे अफगानिस्तान की आबादी में ताजिकों का हिस्सा लगभग 25 से 30 फ़ीसदी है, इसके अलावा यहां हजारा समुदाय के लोग भी रहते हैं, जिन्हें चंगेज खां का वंशज समझा जाता है, यहां नूरिस्तानी और पसई समुदाय के लोगों की भी ठीक-ठाक आबादी है। इन सारे समुदायों में एक बात कॉमन रूप से पाई जाती है और वो है इनका किसी गैर ताकत के आगे अपने घुटने न टेकने का जज्बा। इस इलाके का इतिहास रहा है कि कभी कोई बाहरी ताकत यहां अपनी हुकूमत नहीं चला सकी। अफगानिस्तान के 34 सूबों में से यही वो सूबा है, जहां पहले भी तालिबान का कोई जोर नहीं चल पाया था। 1970 और 80 के दशक में जब अफगानिस्तान में सोवियत संघ के समर्थन वाली सरकार थी, तब भी पंजशीर आजाद था, सोवियत संघ भी इसे जीत नहीं पाया था और अमेरिका भी इस इलाके पर कभी कब्जा नहीं कर पाया। पंजशीर में रहने वाले लोगों का जज्बा ही है जिसकी बदौलत अफगानिस्तान के उपराष्ट्रपति रहे अमरुल्ला सालेह ने ना केवल यहां शरण ले रखी है, बल्कि इसी घाटी में रहने वाले लोगों के दम पर उन्होंने खुद को अफगानिस्तान का नया राष्ट्रपति भी घोषित कर दिया है। पंजशीर में तालिबान से टकराने वाले बहादुरों की अच्छी खासी फौज है, लेकिन यहीं से आने वाले अहमद शाह मसूद का नाम इनमें सबसे आगे है। पंजशीर के शेर के तौर पर मशहूर अहमद शाह मसूद पंजशीर की मिलिशिया के वो नेता थे, जिन्होंने नॉर्दन एलायंस की नींव रखी थी और तालिबान को नाकों चने चबवा दिए थे। उनके तमाम यूरोपीय मुल्कों के साथ भी बेहद करीबी संबंध थे। वो हमेशा से आतंकवाद के खिलाफ रहे, इसीलिए अहमद शाह मसूद से ये आतंकी बहुत खार खाते थे, उन्होंने अहमद शाह मसूद को धोखे से मार दिया। अलकायदा के एक आतंकी ने टीवी पत्रकार बनकर उनसे मुलाकात करने का वक्त लिया और उन पर हमला कर उनकी हत्या कर दी, लेकिन उनके बाद उनके बेटे अहमद मसूद ने पंजशीर की मिलिशिया की कमान अपने हाथों में संभाल ली और उन्होंने तालिबान से मुकाबले का ऐलान कर दिया।

देश के दूसरे हिस्सों की अपेक्षा पंजशीर के लोगों में अपनी आजादी और अपने इलाके को लेकर एक अलग ही लगाव पाया जाता है और यही बात उन्हें औरों से अलग बनाती है। आज जब तालिबान ने लगभग पूरे अफगानिस्तान में दोबारा अपना कब्जा कर लिया है और पंजशीर के लोगों को भी आत्मसमर्पण करने की चेतावनी दे दी है तो यहां के लोगों ने आत्मसमर्पण की बजाय तालिबान से मुकाबला करने की ठानी है, भले ही अंजाम कुछ भी हो। इसीलिए आज पंजशीर में दूसरे समुदायों और मिलिशिया के लड़ाके भी तालिबान की खिलाफत करने के लिए एकजुट होने लगे हैं, उनमें भी तालिबान से अपने देश को आजाद कराने का जज्बा है। हालांकि तालिबान की ताकत ज्यादा दिखाई देती है, लेकिन फिर भी पंजशीर के शेरों की जीदारी का कोई सानी नहीं है। अंदाजा लगाया जा रहा है कि पंजशीर में लगभग 6 हजार लड़ाके

तालिबान से टकराने को तैयार हैं, इसके अलावा तालिबान के खिलाफ मोर्चा खोलने के लिए 10 हजार से ज्यादा फौजी भी इकट्ठा हो चुके हैं। नॉर्दन एलायंस के तीन बड़े लीडर इस समय तालिबान से टक्कर लेने को तैयार हैं, अमरुल्ला सालेह जो अशरफ गनी की सरकार में उप राष्ट्रपति थे, दूसरे हैं अहमद मसूद जो अहमद शाह मसूद के बेटे हैं और तीसरे हैं अफगानिस्तान के वॉर लॉर्ड कहे जाने वाले जनरल अब्दुल रशीद दोस्तम, जो 2014 से 2020 तक अफगानिस्तान के उपराष्ट्रपति रहे थे।

यूं तो तालिबानियों के लिए पंजशीर को हरा पाना कठिन ही नहीं नामुमकिन सा लगता है,यहां का बच्चा-बच्चा तालिबान से जंग करने को तैयार है, किंतु एक बात का डर है कि कहीं तालिबान उन्हें काबू करने के लिए उन पर चारों तरफ से पहरे ना बिठा दे, जिससे उनके खाने-पीने और दूसरी जरूरत की चीजों की कमी हो जाए। तालिबान से मुकाबला करने के लिए पंजशीर को लेटेस्ट हथियारों की भी जरूरत पड़ेगी। उन्हें शिकायत है कि सरकार ने उनकी इन जरूरतों की तरफ कभी ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

1996 में जब तालिबान ने काबुल पर कब्जा कर लिया था, तब पंजशीर के शेर अहमद शाह मसूद ने ही नार्दर्न एलायंस की नींव रखी थी, तब इसका पूरा नाम था यूनाइटेड इस्लामिक फ्रंट फॉर द साल्वेशन ऑफ अफगानिस्तान, धीरे-धीरे इस एलायंस की ताकत बढ़ती गई और ताजिक समुदाय के अलावा दूसरे नस्लीय खेमे भी इसके साथ जुड़ते गए और फिर नॉर्दन एलायंस ने अफगानिस्तान पर भी राज किया। इसी नॉर्दन एलायंस को भारत, ईरान, रूस, तुर्की, तजाकिस्तान, उज़्बेकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान जैसे देशों ने भी सपोर्ट किया, लेकिन बाद में नार्दर्न एलायंस भंग कर दिया गया और अफगानिस्तान की सियासी पार्टियों ने नई सरकार बना ली।

काबुल से डेढ़ सौ किलोमीटर दूर मौजूद यह इलाका हिंदुकुश की पहाड़ियों के करीब है, यहां से पंजशीर नदी बहती है और ये पूरा का पूरा इलाका इसी नदी के इर्द-गिर्द आबाद है। पंजशीर घाटी एक ऐसा दुर्गम इलाका है, जहां तक पहुंचने का रास्ता एक कठिन मुश्किल दर्रे से होकर जाता है, जो इस पूरे इलाके को एक अभेद्य दुर्ग बनाता है, ये भौगोलिक स्थिति ही पंजशीर की सबसे बड़ी ताकत रही है। पंजशीर से एक अहम हाईवे भी निकलता है, जहां से हिंदुकुश तक पहुंचा जा सकता है, यहीं खवाक पास से उत्तरी मैदानों तक पहुंचा जा सकता है और यहीं अंजोमन पास से बादाखशन तक। वैसे तो पंजशीर का यह इलाका खनिज पदार्थों से काफी धनी है किंतु विकास और खनन की तकनीकों की कमी की वजह से इसका लाभ यहां की जनता को नहीं मिल पाया और वह अभी भी गरीब है। मध्यकाल में पंजशीर का इलाका चांदी के खनन के लिए काफी मशहूर था। 1985 में यहां से 190 कैरेट के क्रिस्टल तक निकाले जा चुके हैं। यहां के क्रिस्टल दूसरे इलाकों के क्रिस्टल के मुकाबले कहीं ज्यादा बेहतर माने जाते हैं। यहां जमीन के नीचे बेश कीमती पत्थर पन्ना का भी विशाल भंडार है, लेकिन पन्ना के इस विशाल भंडार का खनन तो दूर अभी तक इसे छुआ भी नहीं गया है। असल में पंजशीर भी पिछड़े और विकासशील देशों के दूसरे इलाकों की तरह सियासी इच्छाशक्ति की कमी और भ्रष्टाचार का शिकार होता रहा है, तभी तो सात जिलों वाले सूबे के 512 गांवों में आज तक बिजली और पीने के पानी की सप्लाई तक नहीं आई।

अफगानिस्तान पर कब्जे के बाद तालिबान ने ऐसे ऐलान किए जिन्हें सुनकर लोगों को यह भ्रम हो जाए कि वह बदल गया है, उसने औरतों को आजादी देने की बात भी कही, किंतु 20 साल बाद भी तालिबान वैसा ही है, उसकी कथनी और करनी में जमीन-आसमान का फर्क है, उसने अफगानिस्तान पर कब्जा करने के बाद अफगानिस्तान के एक सरकारी न्यूज़ चैनल की एंकर को सिर्फ इसलिए हटा दिया क्योंकि वह महिला है, इतना ही नहीं तालिबान ने सलीमा मजारी को भी गिरफ्तार कर लिया जो तालिबान से लंबे वक्त से लड़ाई लड़ रही थीं। अफगानिस्तान के लोग तालिबान से इतना डरे हुए थे कि वह काबुल एयरपोर्ट में जान बचाने के लिए किसी भी हाल में दाखिल होना चाहते थे और किसी भी हाल में विमान में सवार होकर तालिबान के चंगुल से निकल जाना चाहते थे, तालिबान उन पर अंधाधुंध गोलियां चला रहा था, इस गोलीबारी से बचने के लिए महिलाएं चीख रही थीं, बच्चे बदहवास थे, मर्द जान बचाने के लिए भाग रहे थे, लेकिन तालिबान को तरस नहीं आया, उसके लड़ाके गोलियां दागते रहे। लोगों की भीड़ को हटाने का ये तालिबानी तरीका है जो बंदूकों की तड़तड़ाहट से केवल दहशत पैदा करना जानता है। हां तालिबान ने इतना रहम अवश्य किया कि हवा में गोलियां चलाईं, नहीं तो काबुल एयरपोर्ट लाशों से पट जाता। काबुल एयरपोर्ट पर दिन-रात संग्राम छिड़ा हुआ है, लोग एयरपोर्ट के भीतर दाखिल होने के लिए बेकरार और बेचैन हैं, अब तक कई हजार राजनयिक सुरक्षाकर्मी और उनकी मदद करने वाले अफगानी काबुल एयरपोर्ट से देश के बाहर जा चुके हैं, मगर जो देश में मौजूद हैं वो तालिबानियों की गोलीबारी के खिलाफ आवाज उठाने से नहीं हिचक रहे। अब तालिबान ने धमकी दी है कि वो पंजशीर घाटी पर कब्जा करेगा, इस जंग का अंजाम चाहे कुछ भी हो पर इतिहास में पंजशीर के शेरों की इस वीरता को स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जाएगा।

लेखिका कानपुर की वरिष्ठ साहित्यकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

नहीं रहे हिन्दुत्व के पुरोधा कल्याण सिंह

डॉ. कुलदीप त्यागी

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, राजस्थान के पूर्व राज्यपाल और देश-विदेश में हिन्दुत्व के नायक के रुप में स्थापित जननायक कल्याण सिंह का लखनऊ में निधन हो गया। उनके निधन की सूचना मिलते ही संपूर्ण देश में शोक का वातावरण बन गया और देश की जनता ने उन्हें भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। कल्याण सिंह सामाजिक और राजनीतिक जीवन में हमेशा नायक के रूप में जाने गये। अपने राजनीतिक जीवन में उन्होंने प्रारंभ से अंत तक अत्यंत लोकप्रियता हासिल की, जिसका कारण उनकी सादगी और जनता के प्रति समर्पण का भाव था। कल्याण सिंह अलीगढ़ जनपद की अतरौली सीट से आठ बार विधायक चुने गए। 1967 में जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में पहली बार विधायक बने कल्याण सिंह जनसंघ में पिछड़ी जातियों का चेहरा बन गए। इसके बाद दो बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद को उन्होंने सुशोभित किया। मोदी सरकार आने के बाद कल्याण सिंह को राजस्थान के राज्यपाल के रुप में नियुक्त किया गया। राज्यपाल पद से सेवानिवृत्त होने के बाद फिर से कल्याण सिंह ने भाजपा की सक्रिय सदस्यता ग्रहण की और अंत तक पार्टी के छोटे से लेकर सर्वोच्च पद पर विराजमान नेताओं को अपना मार्गदर्शन देते रहे। एक बार उन्होंने कहा था कि मेरा शरीर भी अंत में भाजपा के झंडे में लिपट कर जाना चाहिए। उसके अनुरुप ही उनकी विदाई हुई।

हिन्दुत्व का चेहरा बनकर उभरे कल्याण सिंह

1967 में अतरौली से पहली बार विधायक बने कल्याण सिंह का पूरा जीवन हिन्दुत्व के इर्द-गिर्द घूमता रहा। 1980 के विधानसभा चुनाव में कल्याण सिंह को कांग्रेस के टिकट पर अनवर खां ने पहली बार पराजित किया, लेकिन भाजपा की टिकट पर कल्याण सिंह ने 1985 के विधानसभा चुनाव में फिर कामयाबी हासिल की, तब से लेकर 2004 के विधानसभा चुनाव तक कल्याण सिंह अतरौली से विधायक बने रहे। 1984 में बुरी तरह हारने के बाद जब भाजपा ने श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन को अपना मुख्य मुद्दा बनाया, तब श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से करवट लेने वाली भारत की राजनीति में कल्याण सिंह एक ध्रुवतारा बनकर उभरे। मुस्लिम तुष्टीकरण की विपक्षी राजनीति के विरोध में कल्याण सिंह खुलकर सामने आ गए। भाजपा ने भी सोशल इंजीनियरिंग के फार्मूले की अहमियत समझी और कल्याण सिंह को पिछड़े वर्ग के चेहरे के रूप में प्रस्तुत किया।

सख्त निर्णयों के लिए जाने गये कल्याण सिंह

श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन और गुड गवर्नेंस के सहारे कल्याण सिंह फायर ब्रांड नेता बन गए। जनता में उनकी छवि हिन्दू हृदय सम्राट की बनती जा रही थी। 1991 में उत्तर प्रदेश के विधानसभा चुनावों में भाजपा ने पहली बार 221 सीटें हासिल करके पूर्ण बहुमत हासिल किया और अपने लोकप्रिय नेता कल्याण सिंह को देश के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश का मुख्यमंत्री बनाया। मुख्यमंत्री बनने के बाद कल्याण सिंह ने अपनी गुड गवर्नेंस की नीति और सख्त निर्णयों के कारण अपनी लोकप्रिय छवि स्थापित की।

अपराधियों का काल बन गए कल्याण सिंह

मुख्यमंत्री बनने के बाद कल्याण सिंह ने उत्तर प्रदेश में अपराधियों के खिलाफ अभियान छेड़

दिया। सैकड़ों बदमाशों को मुठभेड़ में मार दिया गया। अपराधी उत्तर प्रदेश छोड़कर भागने लगे। जनता के बीच इससे कल्याण सिंह की लोकप्रियता बढ़ती चली गई और अपराधियों में भय व्याप्त हो गया। विशेष बात यह रही कि जब कोई अधिकारी लीक से हटकर कोई कार्य कर देता था, तब भी कल्याण सिंह कहते थे कि इसकी जिम्मेदारी मेरी है। इसके कारण अधिकारियों में कार्य करने का जज्बा पैदा हुआ और उन्होंने अनेक जनहितकारी कार्य आगे बढ़ कर किये। कल्याण सिंह के मुख्यमंत्री काल में उनके विशेष सचिव रहे डॉ. योगेन्द्र नारायण बताते हैं कि उन्होंने कभी भी राजनीतिक गतिविधियों और नौकरशाही को मिक्स नहीं किया और वे दोनों पहलुओं को अलग-अलग रखकर बहुत ही विवेक से उत्तर प्रदेश की बागडोर संभालते रहे।

कल्याण सिंह का राजनीतिक सफरनामा

- वर्ष 1967 में पहली बार उत्तर प्रदेश विधानसभा सदस्य के लिए चुने गए और वर्ष 1980 तक सदस्य रहे।
- जून 1991 में, बीजेपी को विधानसभा चुनावों में जीत मिली और कल्याण सिंह पहली बार उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने।
- बाबरी मस्जिद विध्वंस के बाद, कल्याण सिंह ने 6 दिसंबर 1992 को उ.प्र. के मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था।
- वर्ष 1997 में कल्याण सिंह पुनः उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री बने और वर्ष 1999 तक पद पर बने रहे।
- कुछ मतभेदों के कारण कल्याण सिंह ने भाजपा छोड़ दी और राष्ट्रीय क्रांति पार्टी का गठन किया।
- वर्ष 2004 में पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के अनुरोध पर वे भाजपा में वापस आ गए।
- वर्ष 2004 के आम चुनावों में वह बुलंदशहर लोकसभा निर्वाचन क्षेत्र से सांसद चुने गए।
- वर्ष 2009 में आम चुनावों में वह फिर भाजपा से अलग हो गए और निर्दलीय तौर पर एटा से सांसद चुने गए।
- 4 सितंबर 2014 को राजस्थान के राज्यपाल के रूप में उनकी नियुक्ति हुई।
- 28 जनवरी 2015 से 12 अगस्त 2015 तक उन्होंने हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में भी कार्य संभाला।

बोर्ड परीक्षाओं में खत्म कराई नकल की ठेका प्रथा

मुख्यमंत्री रहते हुए कल्याण सिंह ने शिक्षा व्यवस्था में बदलाव का पूरा प्रयास किया और यूपी बोर्ड परीक्षाओं में नकल की ठेका प्रथा को समाप्त कराने के लिए नकल विरोधी कानून बनवाया। इससे पहले उत्तर प्रदेश में बोर्ड परीक्षाओं में खुलेआम ठेके लेकर नकल कराई जाती थी। इससे पूरे देश में यूपी बोर्ड की बदनामी हो रही थी। उस छवि को बदलने के लिए कल्याण सिंह ने नकल को संज्ञेय अपराध घोषित कर दिया और नकल करने वाले परीक्षार्थियों को जेल भेजने का प्रावधान कर दिया। परिणाम यह रहा कि ठेके पर नकल कराने वाले माफिया भाग निकले और परीक्षाओं में नकल का प्रभाव कम हो गया। हालांकि इसे लेकर कल्याण सिंह का विरोध भी खूब हुआ, लेकिन अपने संकल्प के पक्के कल्याण सिंह पीछे नहीं हटे।

श्रीराम को लेकर कुर्बान कर दी सरकार

अयोध्या में भगवान श्रीराम का मंदिर बनवाने को लेकर कल्याण सिंह प्रतिबद्ध थे और उनके मुख्यमंत्री काल में 06 दिसम्बर 1992 को अयोध्या में कारसेवकों ने बाबरी ढांचा गिरा दिया। भगवान श्रीराम के मंदिर को लेकर उनकी सरकार कुर्बान हो गई, लेकिन कल्याण सिंह टस से मस नहीं हुए और इसकी पूरी जिम्मेदारी लेते हुए उन्होंने अपना त्यागपत्र दे दिया। उनका यह कदम ही आज हमें राम मंदिर का स्वप्न साकार करता हुआ दिखा रहा है। कल्याण सिंह श्री राम मंदिर के नायक और पूरे विश्व के हिन्दुओं के हृदय सम्राट बन गये।

विवादों से रहा गहरा नाता, बाबरी विध्वंश में 49 केस हुए दर्ज

कल्याण सिंह ने भाजपा की पैठ बनाने के लिये सियासी रूप से महत्वपूर्ण राज्य उत्तर प्रदेश में राम के नाम का सहारा लिया। उन्होंने बाबरी ढांचा विध्वंस से पहले अपने सहयोगियों के साथ अयोध्या का दौरा किया और श्रीराम मंदिर बनाने की शपथ ग्रहण की। भगवान श्रीराम के नाम पर ही उन्होंने प्रदेश में ध्रुवीकरण का काम किया और इस कारण पहली बार प्रदेश में भाजपा की सरकार 1991 में बनी। कल्याण सिंह के पहले कार्यकाल को बाबरी विध्वंश के रूप में जाना जाता है। बाबरी विध्वंश मामले में उन पर 49 केस दर्ज हुए, लेकिन बाद में श्री सिंह इन सभी केसों से बरी हो गये।

दूसरी बार भी मुख्यमंत्री बने कल्याण सिंह

समय बदला और 1994 में भाजपा को उत्तर प्रदेश में हार का सामना करना पड़ा। वोट प्रतिशत बढ़ने के बाद भी भाजपा की सीटें कम रह गई और बसपा-सपा गठबंधन सत्ता में आ गया। 1996 में उत्तर प्रदेश में 425 सीटों वाली विधानसभा में भाजपा को 173 सीटों पर विजय हासिल हुई। किसी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलने पर उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लगा दिया गया। इसके बाद भाजपा-बसपा ने मिलकर सरकार बनाई। दोनों पार्टियों ने 06-06 महीने के लिए मुख्यमंत्री बनाने का निर्णय लिया। 21 मार्च 1997 को मायावती को पहले 06 माह के लिए मुख्यमंत्री बनाया गया। मायावती के 06 माह का कार्यकाल पूरा होने पर कल्याण सिंह को उत्तर प्रदेश का दूसरी बार मुख्यमंत्री बनाया गया। एक महीने में ही मायावती ने कल्याण सिंह की सरकार से समर्थन वापस ले लिया। उत्तर प्रदेश के तत्कालीन राज्यपाल रोमेश भंडारी ने दो दिन के भीतर ही 21 अक्टूबर को कल्याण सिंह को बहुमत साबित करने के लिए कह दिया। बसपा, कांग्रेस और जनता दल से टूटकर आए विधायकों ने कल्याण सिंह को अपना समर्थन दे दिया और उनकी सरकार बच गई।

राज्यपाल ने किया राष्ट्रपति शासन का प्रयास

उस समय उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रहे रोमेश भंडारी ने प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लगाने की सिफारिश केंद्र सरकार के पास भेजी। 22 अक्टूबर को केंद्र सरकार ने राष्ट्रपति के.आर. नारायणन के पास राष्ट्रपति शासन लगाने की सिफारिश भेज दी। राष्ट्रपति ने इस सिफारिश को मानने से इनकार कर दिया और उसे पुनर्विचार के लिए केंद्र सरकार के पास वापस भेज दिया। इस प्रकार कल्याण सिंह सरकार पुनः बच गई।

कल्याण सिंह ने की कई घोषणाएं

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल रोमेश भंडारी ने राजनीति में बड़ा खेल कर दिया। कल्याण सिंह ने विपक्षी दलों से टूटकर आए विधायकों को मंत्री बनाया और प्रदेश सरकार में 93 मंत्री बन गए। कांग्रेस से टूटकर आए 21 विधायकों ने लोकतांत्रिक कांग्रेस बना ली। 1998 में कल्याण सिंह सरकार ने श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से जुड़े लोगों से मुकदमे वापस ले लिये।

स्कूलों में सारी प्राथमिक कक्षाओं की शुरुआत भारत माता पूजन से करने और यस सर की बजाय वंदे मातरम बोलने का आदेश जारी किया। केंद्र में सरकार बनने पर श्रीराम मंदिर अयोध्या में बनाने का ऐलान भी कल्याण सिंह ने ही किया था।

उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह और जगदंबिका बने मुख्यमंत्री

21 फरवरी 1998 को उत्तर प्रदेश में फिर एक काला दिन आया। कल्याण सिंह की राजनीति में तीसरी बार ये दिन आया। राज्यपाल रोमेश भंडारी ने कूटनीति चाल चलते हुए कल्याण सिंह को बर्खास्त कर जगदंबिका पाल को रात में 10.30 बजे मुख्यमंत्री पद की शपथ दिला दी। लोकतांत्रिक कांग्रेस के जगदंबिका पाल कल्याण सिंह सरकार में परिवहन मंत्री थे। राज्यपाल के इस फैसले के विरोध में अटल बिहारी वाजपेयी ने आमरण अनशन शुरू कर दिया। रात्रि में ही वे राज्यपाल के फैसले के खिलाफ हाईकोर्ट चले गए। हाईकोर्ट ने अगले दिन राज्यपाल के आदेश पर रोक लगा दी और कल्याण सिंह सरकार को बहाल कर दिया। 21 फरवरी को राज्य सचिवालय में दो-दो मुख्यमंत्री बैठे हुए थे। जगदंबिका पाल सबेरे सचिवालय पहुंच कर मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज़ हो गए और उसे छोड़ ही नहीं रहे थे। जब उन्हें हाईकोर्ट का आदेश लिखित में मिला, तब बड़े भारी मन से कल्याण सिंह के लिए कुर्सी छोड़कर वे चले गए। बाद में सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर 26 फरवरी को एक बार फिर शक्ति प्रदर्शन हुआ, जिसमें कल्याण सिंह की जीत हुई। सुप्रीम कोर्ट ने इसे मान्यता दी।

कल्याण सिंह ने भाजपा छोड़ बनाई राक्रांपा

एक समय ऐसा आया, जब कल्याण सिंह के भाजपा नेतृत्व से रिश्ते खराब हो गए। मुख्यमंत्री पद से हटाए जाने से कल्याण सिंह नाराज हो गए थे। 1999 में कल्याण सिंह ने राष्ट्रीय क्रांति पार्टी नाम से नया दल बना लिया। 2002 के विधानसभा चुनावों में कल्याण सिंह ने भाजपा को हराने के लिए ऐड़ी-चोटी का जोर लगा दिया और भाजपा को खूब नुकसान पहुंचाया। कल्याण सिंह को भी इससे कोई फायदा नहीं पहुंचा। इसके बाद कल्याण सिंह फिर से भाजपा में शामिल हो गए। 2004 में कल्याण सिंह ने बुलंदशहर लोकसभा सीट से चुनाव लड़ा और सांसद बन गए। भाजपा ने 2007 में कल्याण सिंह को मुख्यमंत्री पद का प्रत्याशी बनाकर चुनाव लड़ा, लेकिन उत्तर प्रदेश में बसपा को पूर्ण बहुमत मिल गया। इसके बाद कल्याण सिंह फिर भाजपा से बाहर हो गए और सपा से नजदीकियां बढ़ाई। इसके बाद वे फिर से भाजपा में शामिल हो गए। केंद्र में नरेंद्र मोदी सरकार आने के बाद 26 अगस्त 2014 को कल्याण सिंह को देश के महत्वपूर्ण राज्य राजस्थान का राज्यपाल बनाया गया। राज्यपाल के रुप में भी कल्याण सिंह शासक के बजाये, एक सेवाभावी जननेता ही नजर आये। उनके पास कुछ समय हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल का अतिरिक्त कार्यभार भी रहा।

राजभवन जयपुर में राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल कल्याण सिंह जी से भेंट करता हुआ चाणक्य वार्ता का प्रतिनिधिमंडल

आपातकाल में 21 महीने जेल में रहे

कल्याण सिंह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के जुझारू स्वयंसेवक रहे। यहीं से उनका राजनीतिक जीवन भी शुरु हुआ। कल्याण सिंह अपना पहला विधानसभा चुनाव अतरौली से जीतकर 1967 में उत्तर प्रदेश विधानसभा पहुंचे। 1967 से 1980 तक वह उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य रहे। इस बीच देश में आपातकाल लगा और कल्याण सिंह 1975-76 में 21 महीने जेल में रहे। कल्याण सिंह को अलीगढ़ और बनारस की जेलों में रखा गया। इसके बाद 1985 में कल्याण सिंह ने फिर से उत्तर प्रदेश विधानसभा में प्रवेश किया और 2004 तक लगातार उत्तर प्रदेश विधानसभा सदस्य रहे।

मजबूत कानूनी व्यवस्था बनाने के लिये जाने गये कल्याण सिंह

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में कल्याण सिंह ने सुशासन का ऐसा पाठ पढ़ाया कि आज भी उनके कार्यकाल को याद किया जाता है। भाजपा नेतृत्व ने भी 2017 के विधानसभा चुनावों में बार-बार ऐलान किया था कि कल्याण सिंह के कार्यकाल के सुशासन को भाजपा ही वापस ला सकती है। ऐसी उत्कृष्ट कार्यप्रणाली के धनी कल्याण सिंह ने जनहित के कई बड़े निर्णय लिये। कल्याण सिंह के मुख्यमंत्री काल में कानून व्यवस्था एकदम मजबूत थी। उन्होंने प्रदेश की सुरक्षा व्यवस्था को मजबूती प्रदान की थी।

अलीगढ़ से लेकर देश भर में शोक की लहर

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह का जन्म 5 जनवरी 1932 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जनपद की अतरौली तहसील के मढ़ौली ग्राम के एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। कल्याण सिंह के पिता का नाम तेजपाल सिंह लोधी और माता का नाम सीता देवी था। कल्याण सिंह में बचपन से ही नेतृत्व करने की अपार क्षमता थी। कल्याण सिंह ने उच्च शिक्षा प्राप्त कर अध्यापक की नौकरी की। उनका विवाह रामवती देवी से हुआ। उनकी दो संतानें हैं। एक पुत्र और एक पुत्री, पुत्र का नाम राजवीर सिंह उर्फ राजू भैया है और पुत्री का नाम प्रभा वर्मा है।

कल्याण सिंह के पुत्र राजवीर सिंह उर्फ राजू भैया वर्तमान में उत्तर प्रदेश की एटा लोकसभा सीट से संसद सदस्य हैं और अपने पिता की भांति जुझारू और लगनशील व्यक्तित्व के धनी हैं। जैसे ही कल्याण सिंह जी के निधन का समाचार क्षेत्र में फैला, वैसे ही बड़ी संख्या में उनके प्रशंसक उनके निवास पर एकत्रित हो गये। कल्याण सिंह का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ उनके पैतृक निवास अलीगढ़ में हुआ। इससे पहले उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी उनके पार्थिव शरीर के दर्शन करने के लिये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सहित देश भर के हजारों नेतागण पहुंचे। अलीगढ़ में उनकी श्रद्धांजलि सभा में भी अपार जनसमुदाय उमड़ा।

लेखक उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ पत्रकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्तक का ऐतिहासिक विमोचन समारोह संपन्न

नई दिल्ली स्थित कंस्टीट्यूशन क्लब ऑफ इण्डिया के विशाल सभागार में 28 अगस्त 2021 को आयोजित भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी पुस्तक का विमोचन समारोह देश-विदेश में चर्चा का विषय बन गया। चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के अंतर्गत कार्यरत श्रीमती कांति देवी ग्रन्थमाला ने महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी द्वारा भारतीय संसद के दोनों सदनों राज्यसभा एवं लोकसभा में दिये गये भाषणों का संकलन प्रकाशित किया है। इस महत्वपूर्ण पुस्तक में श्री कोश्यारी द्वारा याचिका समिति के अध्यक्ष के रुप में लिये गये अनेक निर्णयों की रिपोर्ट भी प्रकाशित की गयी है। यह सभी दस्तावेज देश की जनता के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं और केंद्र तथा राज्य सरकारों के लिये भी मार्गदर्शक की भूमिका निभा सकते हैं।

पुस्तक का विमोचन समारोह कंस्टीट्यूशन क्बल, नई दिल्ली में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी के सानिध्य में संपन्न हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग, कपड़ा, उपभोक्ता मामलों, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री पीयूष गोयल रहे। अतिविशिष्ट अतिथि के रुप में भारत सरकार के पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, उपभोक्ता मामलों, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने भाग लिया। जबकि मंच पर अतिविशिष्ट अतिथि के रुप में भाजपा के वरिष्ठ नेता श्याम जाजू, समारोह अध्यक्ष के रुप में वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मीनारायण भाला, मुख्य संयोजक प्रकाशन समूह के संपादक डॉ. अमित जैन, संयोजक सीए दीनदयाल अग्रवाल एवं स्वागताध्यक्ष के रुप में सीए प्रमोद माहेश्वरी मंच पर उपस्थित रहे।

समारोह का प्रारंभ राष्ट्रगान के साथ हुआ। तत्पश्चात मंचासीन अतिथियों ने दीप प्रज्जवलन करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के संपादक एवं पुस्तक के संकलनकर्ता **डॉ. अमित जैन** ने इस भव्य समारोह में पधारे मंचासीन अतिथियों और विशाल जनसमूह का अभिनंदन एवं स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक में भगत सिंह कोश्यारी के जीवन के अनेक अनछुए पहलुओं के दर्शन होते हैं। भगत दा ने देश के चारों सदनों राज्यसभा, लोकसभा, विधान परिषद एवं विधानसभा में रहते हुये जिन विषयों को अत्यंत अध्ययनपूर्वक और अपने लम्बे अनुभव के बाद उठाया, उनको पढ़ना युवा अथवा नए संसद सदस्यों के लिए अत्यंत आवश्यक है। डॉ. अमित जैन ने कहा कि भगत दा, एक दूरदर्शी नेता है, जो अपने देश को सर्वसुविधा सम्पन्न देश बनाना चाहते हैं और देश की सीमाओं पर निरंतर नजर रखते हुये, वे सरहदों की सुरक्षा का भी गहराई से अध्ययन करते हैं। डॉ. जैन ने कहा कि भगत दा ने याचिका समिति के अध्यक्ष के रुप में जिन विषयों को कानून के रुप में परिणित किया है, उनको जानना सभी के लिये रुचिकर होगा।

पुस्तक के विमोचन से पूर्व मंचासीन अतिथियों का सम्मान किया गया। चाणक्य वार्ता के संपादक डॉ. अमित जैन ने शॉल, माला एवं प्रतीक चिन्ह भेंट करके राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी का अभिनंदन किया। वहीं समारोह के स्वागाध्यक्ष प्रमोद माहेश्वरी और संयोजक दीनदयाल अग्रवाल ने केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल का सम्मान किया। केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे का यशवंत सिंह नेगी, विशाल शर्मा और

पीयूष जैन ने स्वागत किया। वरिष्ठ भाजपा नेता श्याम जाजू का सम्मान आदित्य जैन, अनमोल जैन, वर्धमान जैन अभिषेक मिश्रा व मनोज जैन ने संयुक्त रुप से किया। समारोह के अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण भाला का सम्मान डॉ. अर्चना आंबेकर, अनिल जैन, अमृता पाण्डेय व रणवीर भंडारी ने किया।

स्वागत एवं अभिनंदन के उपरांत खचाखच भरे हॉल में भारी संख्या में आये मीडिया की उपस्थिति में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' इस 500 पृष्ठीय पुस्तक का लोकार्पण मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया।

समारोह को संबोधित करते हुये वरिष्ठ भाजपा नेता **श्याम जाजू** ने कहा कि भगत दा का जीवन सादगी से भरा है। उन्होंने अपने श्रम साध्य जीवन को परोपकार के लिये समर्पित किया है। श्री जाजू ने कहा कि भगत दा एक

संवेदनशील राजनीतिज्ञ हैं। वो अपने पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति का सुख-दुख बांटते हैं और उनकी गहरी चिंता करते हैं। उन्होंने कहा कि भगत दा के सानिध्य में रहकर मैंने अनेक अनुभव प्राप्त किये हैं। जब मैं दलाई लामा जी के पास उनके साथ गया, तो वहां मैंने देखा कि दलाई लामा जी कितनी गहराई से भगत दा से राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा कर रहे हैं। उसी प्रकार जब मैं भगत दा के साथ नेपाल के प्रधानमंत्री ओली जी के पास गया, तो मैंने पाया कि नेपाल सरकार पर भगत दा का कितना अधिक प्रभाव है और वे भारत के प्रमुख नेता के रुप में वहां जाने जाते हैं। श्याम जाजू ने कहा कि चाणक्य वार्ता प्रकाशन ने इस महत्वपूर्ण पुस्तक का प्रकाशन करके एक मील का पत्थर स्थापित किया है, जो इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गया है।

केंद्रीय मंत्री **अश्विनी कुमार चौबे** ने अपने संबोधन में कहा कि उन्हें लोकसभा में 5 वर्ष कोश्यारी जी के साथ काम करने का अवसर मिला। वो समय उनके लिये अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। श्री चौबे ने कहा कि भगत दा संसद के सदस्य के रुप में, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री के रुप में अथवा वर्तमान में महाराष्ट्र के राज्यपाल के रुप में जनता-जर्नादन की सेवा कर रहे हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भगत दा को महाराष्ट्र जैसे महत्वपूर्ण राज्य का राज्यपाल नियुक्त करना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की व्यापक दूरदर्शिता है क्योंकि श्री कोश्यारी महाराष्ट्र के गांव-गांव तक घूमकर प्रदेश के विकास में अपना अहम योगदान दे रहे हैं। श्री चौबे ने कहा कि इस पुस्तक के प्रकाशन से हम सभी सांसदों को नई प्रेरणा प्राप्त होगी और अनेक ऐसे विषय जो समय के अभाव के कारण प्रकाश में नहीं आ पाते, उन्हें भी पढ़ने का हमें अवसर मिलेगा। केंद्रीय मंत्री अश्विनी कुमार चौबे ने देवभूमि उत्तराखंड के निर्माण से लेकर प्रदेश में हो रहे विकास कार्य का श्रेय भी भगत दा को दिया।

केंद्रीय मंत्री **पीयूष गोयल** ने अपने संबोधन में संसद के दोनों सदनों राज्यसभा और लोकसभा में श्री कोश्यारी द्वारा दिये गये वक्तव्यों की भूरी-भूरी प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि इस पुस्तक के आने से पूर्व मुझे ज्ञात नहीं था कि संसद के कामकाज में भगत दा का इतना बड़ा योगदान है। उन्होंने कहा कि पुस्तक का अध्ययन करने के बाद मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि वर्तमान में हमारे खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण विभाग और विभिन्न मंत्रालय ठीक उसी दिशा में कार्य कर रहे हैं, जिस दिशा में भगत दा ने अपने विचार प्रकट किये थे। पीयूष गोयल ने कहा कि संसद सदस्य की जिम्मेदारी बहुत अहम हैं, इसलिए उन्हें जनता के हितों से संबंधित मुद्दों का व्यापक अध्ययन करके ही सदन में आना चाहिए। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वर्तमान में संसद में हंगामा करने वाले और कार्रवाई को बाधित करके जनता के मुद्दों को गौण करने वाले सांसदों को भगत दा से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि श्री कोश्यारी ने न केवल राज्यसभा, लोकसभा, बल्कि याचिका समिति के अध्यक्ष के रुप में भी वन रैंक, वन पेंशन जैसे कई महत्वपूर्ण मुद्दों को पारित कराकर ऐतिहासिक कार्य किया है। पीयूष गोयल ने कहा कि यह मेरा सौभाग्य है कि बचपन से ही मुझे भगत दा का सानिध्य प्राप्त है। वे कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने वाले, उत्तराखंड ही नहीं, अपितु देश के सभी नागरिकों के प्रिय और एक तेजस्वी व्यक्तित्व और सरलता के प्रतीक हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि भगत दा ने अपने लम्बे राजनीतिक जीवन में बेबाक होकर कार्य किया, अपनी सुख-सुविधाओं और व्यक्तिगत लाभ के लिये कोई कार्य उन्होंने कभी नहीं किया। आज भी जब भगत दा अपने गांव जाते हैं, तो पैदल ही गली-गली में भ्रमण करके जनता से मिलते हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे तेजस्वी राजनीतिज्ञों के कारण ही हमारी पार्टी औरों से अलग है। पीयूष गोयल ने कहा कि भगत दा महाराष्ट्र के राज्यपाल के रुप में अनेक ऐतिहासिक कार्य कर रहे हैं। उन्होंने राजभवन को भी आम जनता के लिये खोल दिया है, जहां आकर जनता अपनी बात उन तक पहुंचाती है। केंद्रीय मंत्री ने पुस्तक के प्रकाशक चाणक्य वार्ता समूह को अपनी शुभकामनाएं देते हुये कहा कि यह पुस्तक सभी के लिये उपयोगी होगी।

समारोह के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार **लक्ष्मीनारायण भाला** ने अपने संबोधन में कहा कि भारतीय संसद वह स्थान है, जहां से हमारे देश का नेतृत्व होता है। उस महत्वपूर्ण स्थान पर बैठने वाले जनप्रतिनिधि यदि कुशल और जनता के हितैषी होंगे, तो निश्चित है कि हमारा देश निरंतर प्रगति करेगा। समारोह अध्यक्ष ने कहा कि देवभूमि उत्तराखंड में जन्में भगत दा ने देश-प्रदेश और समाज के लिये लम्बे समय से अपना संपूर्ण योगदान दिया है। पद चाहें कोई भी रहा हो, लेकिन भगत दा सभी स्थानों पर जनहित के लिये चिंतित नजर आये। यही कारण है कि उनका जीवन सभी के लिये प्रेरणा का श्रोत बन गया है। श्री भाला ने पुस्तक के प्रकाशन, उसकी गुणवत्ता, शोधपूर्ण सामग्री और विषयों की स्पष्टता की खुलकर प्रशंसा की।

महाराष्ट्र के राज्यपाल **भगत सिंह कोश्यारी** ने इस अवसर पर अपना संबोधन देते हुये कहा कि जनप्रतिनिधित्व करना ही जनसेवा का सर्वोत्तम अवसर है। उन्होंने कहा कि देश की संसद भारतीय लोकतंत्र का मंदिर है। जहां देश के विभिन्न हिस्सों से निर्वाचित प्रतिनिधि जनहित के मुद्दों को उठाते हैं और जनता के साथ न्याय करते हैं। राज्यपाल ने अपने राज्यसभा एवं लोकसभा में बिताए गये दिनों को याद करते हुये कहा कि संसद सदस्य को अनेक मुद्दों का अध्ययन करने और उन्हें सदन में उठाकर उचित स्थान तक पहुंचाने का स्वर्णिम अवसर मिलता है। संसद में सार्थक चर्चा हो, इस बात का आह्वान करते हुये श्री कोश्यारी ने कहा कि पक्ष-विपक्ष में, किसी की भी सरकार हो, लेकिन जनता के मुद्दे उठाने के लिये सभी को आगे आना चाहिए और अवरोध को दूर करना चाहिए, अवरोध करना देश की जनता का अपमान है। भगत दा ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी, अटल बिहारी वाजपेयी, डॉ मनमोहन सिंह, जयराम रमेश आदि सांसदों का उल्लेख करते हुये कहा कि इस प्रकार के विद्वान सांसदों ने संसद को गौरांवित किया है और जनता से जुड़े अनेक पहलुओं को सदन में उजागर किया है।

महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी

ने एक प्रसंग सुनाते हुये कहा कि जब मैं संसद में नया-नया ही आया था, तब एक दिन लॉबी में राहुल गांधी टकरा गये। मेरा परिचय पूछा और बोले आप संघ की टोपी क्यों पहनते हैं? क्या आप आरएसएस से हैं? मैंने उन्हें कहा कि मैं संघ का स्वयंसेवक जरुर हूं, पर यह टोपी संघ की नहीं है। बल्कि यह उत्तराखंड की परंपरागत टोपी है, जिसे उत्तराखंडवासी तब से पहनते हैं, जब संघ का उद्भव भी नहीं हुआ था। पर राहुल बोले—नहीं, नहीं, यह संघ की ही टोपी है। इसी प्रकार एक बार राहुल गांधी से मैंने पूछा कि आरएसएस के बारे में क्या आपने कुछ पढ़ा है। तो वे तपाक से बोले हां, मैंने सावरकर को पढ़ा है। श्री कोश्यारी ने कहा कि जब मैंने राहुल गांधी को समझाया कि सावरकर का संघ से कोई नजदीकी संबंध नहीं है, केवल संघ उनके त्याग का आदर करता है। परंतु राहुल ने सावरकर को ही संघ का प्रणेता बताया, जबकि संघ के संस्थापक तो डॉ. हेडगेवार थे।

भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि संसद में व्यवहार कुशल सांसदों की अत्यंत आवश्यकता है, जो निष्पक्ष होकर अपने विचारों को संसद में रख सकें। एक प्रसंग सुनाते हुये श्री कोश्यारी ने कहा कि संसद में पर्यावरण पर मेरा भाषण होना था। मुझे मेरे दल के नेता ने बताया कि पहला भाषण मेरा होगा, इसलिए मुझे बोलने की पूरी छूट है। पर अंत में पहले भाषण करने का अवसर अन्य सदस्य को दे दिया गया। मुझे कहा गया कि आप 20-25 मिनट बोल सकते हैं। किंतु जब मैं बोलने लगा और 15 मिनट भी नहीं हुये थे, उसी समय राज्यसभा के उपाध्यक्ष श्री कुरियन ने घंटी बजा दी। उस समय तत्कालीन वन एवं पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने खड़े होकर सभाध्यक्ष से अनुरोध किया कि इस महत्वपूर्ण विषय पर श्री कोश्यारी को पूरा समय दिया जाये, परंतु श्री कुरियन नहीं माने। खास बात यह रही कि जयराम रमेश ने उस दिन अपना वक्तव्य नहीं दिया और कहा कि जब कोश्यारी जी अपने विचारों को पूरी तरह सदन में रखेंगे, तभी मैं अपना वक्तव्य दूंगा। राज्यपाल ने कहा कि आज के राजनीतिक असहिष्णुता के वातावरण में यह परस्पर सम्मान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

समारोह में भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी पुस्तक के संकलन में अपना योगदान देने वाले चाणक्य वार्ता के राजस्थान ब्यूरो चीफ डॉ. अमर सिंघल एवं चाणक्य वार्ता के सलाहकार वरिष्ठ अनुवादक हरीश जैन का मंचासीन अतिथियों द्वारा सम्मान किया गया। समारोह का कुशल संचालन वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. विनोद बब्बर ने किया। उन्होंने अपनी दीनदयाल उपाध्याय जी पर केंद्रित पुस्तक भी अतिथियों को भेंट की। अंत में धन्यवाद ज्ञापन समारोह के स्वागताध्यक्ष प्रमोद माहेश्वरी द्वारा दिया गया। श्री महेश्वरी ने इस समारोह में पधारे अतिथियों, श्रोताओं एवं भारी संख्या में उपस्थित मीडियाकर्मियों का आभार व्यक्त करते हुये चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह की सराहना की। अंत में राष्ट्रगान के साथ इस भव्य समारोह का समापन हुआ। समारोह में हंसराज कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. रमा, केंद्रीय हिन्दी निदेशालय के पूर्व निदेशक प्रो. अवनीश कुमार, कार्यक्रम के मीडिया पार्टनर अप्रोच इंटरटेन्मेंट से सोनू त्यागी एवं ओमकार त्यागी, महाराष्ट्र राजभवन से आये अमरेंद्र कुमार, दीप कोश्यारी, कमल घिल्डियाल, एडवोकेट अमन सिन्हा, नवीन जैन, डॉ. सुदर्शन जैन, कुलदीप त्यागी, दीक्षा कांबोज, पुणे से आये अमित भाला, सतीश सिंह, योगेश शर्मा, रेशू त्यागी, पी.डी. जैन, धर्म चंद जैन, आलोक शर्मा, ननवाल जी आदि के साथ ही अनेक विशिष्टजनों ने भाग लिया।

प्रस्तुति : सारांश कनौजिया/विशाल शर्मा,
चाणक्य वार्ता टीम, नई दिल्ली

देश-विदेश में चर्चा का विषय बना समारोह

- भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी पुस्तक के विमोचन समारोह को विभिन्न टीवी चैनलों ने प्रमुखता से दिखाया। जी न्यूज, इंडिया टीवी, डीडी न्यूज आदि प्रमुख चैनलों ने इस कार्यक्रम को हाइलाइट किया। जी न्यूज ने अपने चर्चित कार्यक्रम 'ताल ठोक के' पर विभिन्न पार्टियों के वक्ताओं को बुलाकर पुस्तक और कार्यक्रम से जुड़े बिंदुओं पर लम्बी चर्चा करायी।
- टाइम्स ऑफ इण्डिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, फाइनेंशियल एक्सप्रेस, डेक्कन हेराल्ड, दैनिक जागरण, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स आदि अंग्रेजी व हिन्दी समाचार पत्रों के साथ ही जी न्यूज, न्यूज नेशन तथा वन इंडिया के समाचार पोर्टलों ने भी समारोह की विस्तृत कवरेज प्रकाशित की। हिन्दुस्तान टाइम्स ने सभी अतिथियों के चित्र सहित इस कार्यक्रम की सुंदर कवरेज की।
- महाराष्ट्र राजभवन से लेकर केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल, अश्विनी चौबे, चाणक्य वार्ता के यूट्यूब चैनल चाणक्य चैनल एंड वेबिनार पर कार्यक्रम का प्रसारण किया गया। साथ ही कार्यक्रम समाप्ति के एक घंटे बाद ही यह समारोह सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना।

Book on Koshyari's speeches...

...ccompanied by Minister Dr Dhan Singh Rawat, Kaushik and Chief Secretary SS Sandhu.

Contd from page ... 1

The book was launched by Union Ministers Piyush Goyal and Ashwni Kumar Chaubey in the presence of Governor Koshyari and senior BJP leader Shyam Jaju.

Speaking on the occasion of the book release, the Governor of ... भेज दिया जाता है।

the Parliament smoothly and decently. Goyal observed that most of the time, due to the insensitivity of the opposition, the time for parliamentary discussion was getting washed away due to the ruckus in the House. He ... from time to time.

Union Minister Ashwini Kumar Choubey also shared views regarding the relevance of this book.

Senior litterateur and pan... Chanakya Varta Publication ... मिश्र, गीता प्रेस के आदि संपादक ... हुआ है। तिब्बत, मंगोलिया, ...

Book on Koshyari's speech... Constitution Club; Doon ...

By ARUN PRATAP SINGH ... Doon on 30 August at a local ... on the ... ernor of ...

चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा
भगत सिंह कोश्यारी पर केंद्रित महत्वपूर्ण पुस्त...
भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी का विमोच...

राहुल ने मेरी टोपी को संघ का समझा

...ई दिल्ली। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत ...ह कोश्यारी ने शनिवार को राहुल गांधी ...कटाक्ष करते हुए कहा कि कांग्रेस नेता ...ा मानना था कि उत्तराखंड की ...कि काली टोपी जो वह पहनते हैं

...प्रतिष्ठित ... प्रकाशित की गई हैं। 450 पृष्ठों की ... तथा भाजपा के ... वार्ता' ... इस पुस्तक में कोश्यारी द्वारा व्यक्त ... जाजू की गरिमामय... न भगत ... किए गए विचारों में पूर्ण रुप से ... हुआ। ...प संसद ... राष्ट्रवादी दृष्टिकोण दिखायी देता है, ... इस अवसर पर वरिष्ठ साहि... ...ा और जो देशवासियों के लिए ... लक्ष्मीनारायण भाला, चा... ...र्णों का प्रेरणादायी है। इस महत्वपूर्ण ... चार्ता के सम्पादक डॉ. अमित ... ...गया है। पुस्तक का विमोचन 28 अगस्त ... तथा कई समाजसेवी, पत्रका... ...त सिंह 2021 को नई दिल्ली के ... साहित्यकार एवं बुद्धिजी... ...तक में कांस्टीट्यूशनल क्लब ऑफ ... उपस्थित रहे। ...मिति के इंडिया में केन्द्रीय मंत्री पीयूष ... डॉ. ...

HT City

BOOK LAUNCH AND FUN BANTER BRINGS POLITICOS TOGETHE...

Bhagat Singh Koshyari

Sanchita Kalra
sanchita.kalra@hthlive.com

The Capital recently saw many political heavyweights coming together for the launch of Maharashtra governor **Bhagat Singh Koshyari**'s new book, Titled, *Bharatiya Sansad Main Bhagat Singh Koshyari*, the book comprises several important speeches and decisions delivered by him.

The evening was filled with laughter and lively moments as eminent personalities took the stage to share anecdotes while the audience gave a thunderous cheer. Talking about the book, Union Minister **Piyush Goyal** said, "It should be read by every member of the public so that it can be known that at that time [in the Parliament] the pros and cons are together."

Among others who were in attendance at the event, were Union Minister **Ashwini Kumar Choubey** and politico **Shyam Jaju**.

Piyush Goyal

देवभूमि उत्तराखंड में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी'

पुस्तक पर परिचर्चा का भव्य समारोह संपन्न

उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी पर केंद्रित तथा चाणक्य वार्ता के संपादक डॉ. अमित जैन द्वारा संकलित एवं संपादित पुस्तक 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' के नई दिल्ली में लोकार्पण के बाद उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में पुस्तक पर परिचर्चा का आयोजन श्रीकृष्ण जन्माष्टमी (30 अगस्त 2021) के शुभ अवसर पर होटल मधुबन, राजपुर रोड के सभागार में किया गया। पुस्तक का प्रकाशन चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के अन्तर्गत कार्यरत श्रीमती कांति देवी ग्रन्थमाला ने किया है।

समारोह का प्रारंभ राष्ट्रगान के साथ हुआ। तत्पश्चात महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी, उत्तराखंड के युवा मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, उत्तराखंड विधानसभा के अध्यक्ष प्रेमचंद अग्रवाल, भाजपा के वरिष्ठ नेता श्याम जाजू, वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मीनारायण भाला, जाने-माने साहित्यकार पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी और चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के संपादक डॉ. अमित जैन ने संयुक्त रुप से दीप प्रज्वलन करके समारोह का विधिवत प्रारंभ किया।

पुस्तक पर परिचर्चा में अपना स्वागत भाषण देते हुये चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के संपादक **डा. अमित जैन** ने कहा कि इस पुस्तक के प्रकाशन का विचार उन्हें भगत दा के सादगीपूर्ण जीवन से प्रेरित होकर आया है। उन्होंने कहा कि भगत दा ने उत्तराखंड की स्थापना से लेकर राज्य के विकास और देवभूमि उत्तराखंड को देश का सिरमौर राज्य बनाने के लिये अनथक परिश्रम किया है। इस पुस्तक में भगत दा के संपूर्ण जीवन पर एक महत्वपूर्ण लेख भी प्रकाशित किया गया है। डॉ. अमित जैन ने कहा कि भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी के योगदान को अमर करने के लिये इस पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार वर्तमान में अनेक योजनाएं उसी दिशानिर्देश पर चला रही है, जिसकी कल्पना श्री कोश्यारी ने अपने संसदीय वक्तव्यों में की थी। डॉ. जैन ने कहा कि भगत दा की छाप न केवल उत्तराखंड के लोगों के हृदय में है, बल्कि देश के प्रत्येक कोने में उनके चाहने वाले बड़ी संख्या में हैं। डॉ. अमित जैन ने उत्तराखंड के साथ अपने पुराने संबंधों का जिक्र करते हुये कहा कि उनका बचपन से ही यहां आना-जाना रहा है और वे उत्तराखंड राज्य से विशेष लगाव रखते हैं। उन्होंने पुस्तक में सहयोग प्रदान करने वाली अपनी टीम का भी आभार व्यक्त किया।

स्वागत भाषण के उपरांत मंचासीन अतिथियों का सम्मान किया गया। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी को डॉ. अमित जैन, उत्तराखंड के स्वास्थ्य मंत्री धन सिंह रावत, संदीप जैन ने प्रतीक चिन्ह एवं पुष्प गुच्छ प्रदान करके अभिनंदन किया। उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का सम्मान जगदीश जैन, वी.के. जैन और कार्यक्रम के संयोजक अरिहंत जैन ने किया। विधानसभा अध्यक्ष प्रेमचंद अग्रवाल का स्वागत अजय भट्ट, सुरेश गड़िया एवं डॉ. नवीन सिंघल ने किया। वरिष्ठ भाजपा नेता श्याम जाजू का सम्मान हिमांशु जैन, प्रदीप जैन द्वारा किया गया। लक्ष्मीनारायण भाला का सम्मान उत्तराखंड की कैबिनेट मंत्री रेखा आर्य और समाजसेवी संजय जैन ने किया। पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी का सम्मान यशवंत सिंह नेगी, आदित्य जैन ने संयुक्त रुप से किया।

पुस्तक पर परिचर्चा पर अपने विचार रखते हुये भाजपा के वरिष्ठ नेता **श्याम जाजू** ने भगत दा के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि काफी लम्बे समय दिल्ली में भगत दा और वे एक साथ, एक आवास में रहे हैं। इसलिये उन्हें गहरायी से भगत दा के विचारों को जानने का अवसर मिला। उत्तराखंड के प्रभारी रहे श्री जाजू

ने कहा कि उत्तराखंड के विकास का जो स्वप्न श्री कोश्यारी ने देखा था, वह धीरे-धीरे पूरा हो रहा है और अब वर्तमान मुख्यमंत्री इस कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भगत दा के विचारों में अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों का सहज ही समाधान मिल जाता है। भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी पुस्तक की प्रशंसा करते हुये उन्होंने कहा कि यह पुस्तक नहीं बल्कि एक ग्रंथ है, जिसमें भगत दा जैसे कर्मयोगी के जीवन और कार्यों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

समारोह को संबोधित करते हुये वरिष्ठ

साहित्यकार **लक्ष्मीनारायण भाला** ने कहा कि भगत दा ने हिन्दी भाषा को स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि भाषा के आधार पर बने राज्यों में भी हिन्दी का प्रचार होने से आपसी वैमनस्यता पर लगाम लगती है और परस्पर सौहार्द का वातावरण बनता है। श्री भाला ने कहा कि भगत दा पर्यावरण प्रेमी, आध्यात्मिक व्यक्तित्व के धनी, प्रकृति के साधक, स्पष्ट वक्ता और भारतीय संविधान के अध्येयता हैं। उन्होंने अनेक कार्यकर्ताओं को प्रेरित करके सामाजिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में आगे बढ़ाया है, जो आज अपना नेतृत्व समाज को प्रदान कर रहे हैं। श्री भाला ने कहा कि भगत दा ने छोटे राज्यों की उपयोगिता और उनके विकास के लिये संसद में जो वक्तव्य दिये थे, वे सदैव उपयोगी रहेंगें।

उत्तराखंड विधानसभा के अध्यक्ष **प्रेमचंद अग्रवाल** ने भगत दा के साथ बिताये गये पलों को अपना स्वर्णिम समय बताया और कहा कि आज जिस पद पर मैं कार्य कर रहा हूं वह कोश्यारी जी की ही देन है। श्री अग्रवाल ने कहा कि भगत दा का जीवन कहने के लिये ही नहीं, बल्कि वास्तव में सादगी और त्याग का प्रतीक है। दिल्ली का एक प्रसंग सुनाते हुये विधानसभा अध्यक्ष ने कहा कि भगत दा के साथ मैं एक शादी में गया, जहां एक से एक व्यंजन और सुख-सुविधाएं उपलब्ध थीं, परंतु भगत दा ने वहां कुछ भी नहीं खाया और अपने आवास पर वापस आकर खिचड़ी का भोजन किया। इस प्रकार उनकी जीवन यात्रा संतों के समान अनवरत चल रही है और उनसे प्रेरित होकर हम जैसे कार्यकर्ता सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में कुछ अच्छा करने का प्रयास कर रहे हैं।

समारोह के मुख्य अतिथि उत्तराखंड के युवा मुख्यमंत्री **पुष्कर सिंह धामी** ने इस अवसर पर भावुक होकर अपना संबोधन दिया। मुख्यमंत्री ने दोहराया कि भगत दा की दूरदर्शिता के कारण ही आज मैं राज्य के मुख्य सेवक के पद पर पहुंचा हूं। मुख्यमंत्री ने भगत दा के साथ बिताए अनेक प्रसंगों को याद करते हुये कहा कि जब उत्तराखंड में टिहरी जल विद्युत बांध का कार्य चल रहा था, उस समय गंगा को अविरल बहने देने की मांग देश में जोर पकड़ रही थी। स्वर्गीय श्री अशोक सिंघल जी ने भी बांध का विरोध किया था। उस समय कोश्यारी जी ने सूझबूझ का परिचय देते हुए अशोक जी को बांध का विरोध नहीं करने के लिए मनाया तथा कई बार चेताने के बाद भी भगत दा ने राजनीतिक हानि की परवाह न करते हुए, प्रदेश के लिए जो उचित था, वही कार्य किया। उसका परिणाम आज समस्त जनमानस के समक्ष उपस्थित है। आज टिहरी बांध से 2,400 मेगावाट विद्युत बन रही है। जिससे उत्तराखंड ही नहीं अपितु भारत के अन्य राज्यों को भी लाभ मिल रहा है। उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में बाढ़ का स्तर कम करने में भी टिहरी बांध ने अपनी अहम भूमिका निभायी है।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री ने कहा कि चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित पुस्तक के माध्यम से श्री कोश्यारी के जीवन और कार्यों के अनेक अनछुए पहलू समाज के सामने आये हैं। यह पुस्तक भगत दा के विशाल व्यक्तित्व का भी विश्लेषण करती है। उन्होंने सामान्य परिवेश में रहकर शिखर छूने का कार्य किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि श्री कोश्यारी सभी नीतिगत विषयों के जानकार, दृढ निश्चय वाले व्यक्ति और विकास पुरुष हैं। उनका जीवन हम सबके लिये निश्चित रूप से अनुकरणीय एवं प्रेरणादायी है।

उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि मेरा यह सौभाग्य रहा है कि मैं बचपन से ही भगत दा के सानिध्य में बड़ा हुआ हूँ। जब राजनीतिक क्षेत्र में मैंने कार्य करना प्रारंभ किया, तो उस समय कोश्यारी जी मुझे हमेशा पूरे राज्य का भ्रमण करने के लिये कहते थे। जब किसी तात्कालिक फायदे की बात पर मैं जिद करता था, तो भगत दा मुझे समझाते थे कि तुम्हें भविष्य दिखाई नहीं देता। धामी ने बताया कि 2007 में मैं कनालीछीना से टिकट मांग रहा था। कोश्यारी जी ने कहा कि ठीक है घूमो। मैं साल भर घूमता रहा, लेकिन टिकट नहीं मिला। मैं नाराज हो गया। कोश्यारी जी ने मुझे समझा बुझा लिया। फिर 2017 में जब मुझे मंत्रिमंडल में नहीं लिया गया तो भी मैं नाराज हुआ था। उस समय भी भगत दा ने मुझे धैर्य रखने को कहा था और पूरे उत्तराखंड में भ्रमण करने के लिये प्रेरित किया था। आज जब मैं राज्य का प्रधान सेवक हूं, तो मुझे उनकी दूरदृष्टि का पता चलता है। मुख्यमंत्री ने पुस्तक की प्रकाशन टीम का आभार व्यक्त करते हुये कहा कि चाणक्य वार्ता ने यह महत्वपूर्ण दस्तावेज हमें सौंप कर बहुत बड़ा कार्य किया है, जो सदैव स्मरण किया जायेगा।

समारोह के अध्यक्ष वरिष्ठ साहित्यकार, भारतीय भाषा परिषद, साहित्य परिषद आदि अनेक संस्थाओं से सम्मानित पद्मश्री **लीलाधर जगूड़ी** ने अपने वक्तव्य में भगत सिंह कोश्यारी के राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति प्रेम तथा विकास में अहम योगदान के बारे में बताते हुए कहा कि कोश्यारी जी ने संसद में सभी सदस्यों को हिंदी

में बोलने के लिए प्रेरित किया। समारोह अध्यक्ष ने कहा कि जब मैं लखनऊ में कार्यरत था, उस समय विधायक के रुप में भगत दा से मेरा मिलना-जुलना रहा। जब कभी वे मेरे दफ्तर में आते थे, तो उस समय वे मेरे वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चाय न पीकर मेरे केबिन में ही बैठकर चाय पीते थे और अनेक साहित्यिक गतिविधियों की चर्चा करते थे। उत्तर प्रदेश विधानसभा के सदस्य रहने के बाद जब उत्तराखंड राज्य का निर्माण हुआ, तो भगत दा ने उसमें अपनी अहम भूमिका निभाई। उत्तराखंड राज्य की आवश्यकता क्यूं, इस विषय पर भी भगत दा ने एक विचार सभी के समक्ष रखा, जिसको ही बाद में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने लागू किया।

लीलाधर जगूड़ी ने कहा कि वर्तमान समय में राजनीतिज्ञ अपने बड़े मंचों पर साहित्यकारों

को बुलाने में संकोच करते हैं, परंतु भगत दा साहित्यकारों पर अपना विशेष स्नेह रखते हैं, इस कारण इस मंच पर आने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ। समारोह अध्यक्ष ने पुस्तक को अतिमहत्वपूर्ण बताते हुये श्रोताओं से अनुरोध किया कि वह अवश्य ही यह पुस्तक पढ़ें। श्री जगूड़ी ने कहा कि आज के राजनीतिक परिवेश में पढ़े-लिखे डिग्रीधारी तो सभी हैं, लेकिन वास्तव में जिन्होंने समृद्ध साहित्य, उपनिषद् आदि का गहरायी से अध्ययन किया है, ऐसे व्यक्ति मुझे कोश्यारी जी ही दिखायी देते हैं। उन्होंने कहा कि देश के प्रमुख राज्य महाराष्ट्र में भगत दा की उपस्थिति हमें गौरांवित करती है। उन्होंने कहा कि जो अतीत को समझता है, वही वर्तमान को संवार सकता है। श्री कोश्यारी अच्छे विचारक और मनीषी हैं। विद्वान साहित्यकार ने कहा कि हिन्दी भाषा ने ही हमें अभिव्यक्ति एवं आधुनिक आजादी देने का काम किया है।

समारोह में अपने विचार प्रकट करते हुये महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि व्यक्ति को अपनी भाषा व बोली के प्रयोग में संकोच नहीं करना चाहिए। सभी को अपनी मातृभाषा पर गर्व होना चाहिए। महाराष्ट्र का उदाहरण देते हुए राज्यपाल ने कहा कि महाराष्ट्र में मराठी को पाठक्रम में शामिल किया गया है, जो बहुत ही अच्छा कदम है। भगत दा

चाणक्य वार्ता के संपादक डॉ. अमित जैन ने सपरिवार विश्व प्रसिद्ध पर्यावरणविद् पद्मविभूषण श्री सुंदरलाल बहुगुणा के देहरादून आवास पर जाकर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती विमला बहुगुणा और सभी परिजनों से मुलाकात करके स्वर्गीय श्री सुंदरलाल बहुगुणा को अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री बहुगुणा के साथ डॉ. अमित जैन के परिवार का बहुत लम्बा संपर्क रहा है। इस कारण मुलाकात के दौरान दोनों परिवारों ने श्री सुंदरलाल बहुगुणा की अनेक स्मृतियों की चर्चा की। डॉ. अमित जैन ने दिल्ली विधानसभा में सर्वसम्मति से पारित श्री सुंदरलाल बहुगुणा को मरणोपरांत भारत रत्न देने के प्रस्ताव का समर्थन किया और भारत सरकार से आग्रह किया कि विश्वविख्यात पर्यावरणविद् श्री सुंदरलाल बहुगुणा को यह सम्मान अवश्य दिया जाये। डॉ. जैन ने भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी की एक प्रति भी श्रीमती विमला बहुगुणा को भेंट की।

ने संसद में सार्थक बहस करने का आग्रह सभी सांसदों से किया। उन्होंने कहा कि सभी सदस्यों को संसद की गरिमा का पूरा ध्यान रखना चाहिए। श्री कोश्यारी ने हाल ही में हुई संसद की कार्यवाही में रुकावटों का जिक्र करते हुए कहा कि यह स्वस्थ लोकतंत्र के लिये ठीक नहीं है। जब तक हम जनता के मुद्दों को सही प्रकार से सदन में नहीं रखेंगे, तब तक देश कैसे आगे बढ़ेगा। भगत दा ने सांसद के रुप में अपने कार्यकाल का स्मरण करते हुये कहा कि उन्हें पक्ष, विपक्ष और सभी सांसदों का विशेष स्नेह प्राप्त हुआ और उन्होंने उत्तराखंड सहित संपूर्ण देश के महत्वपूर्ण मुद्दों को भली प्रकार से संसद में उठाया। भगत दा ने कहा कि उन्हें विधान परिषद, विधानसभा, राज्यसभा, लोकसभा एवं संयुक्त राष्ट्र महासभा में भी अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ, जिसका श्रेय मैं अपने प्रिय जनसमुदाय को देता हूं।

महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने इस अवसर पर कहा कि राष्ट्र के स्वाभिमान, गौरव एवं राष्ट्रीय अस्मिता को बचाने का दायित्व हम सभी का है। इसमें हमारे सांसदों एवं विधायकों की विशेष जिम्मेदारी है। उन्होंने हाल ही में उत्तराखण्ड विधानसभा में हुई स्वस्थ परिचर्चा को जनता के बेहतर हित में बताया। भगत दा ने कहा कि ग्रामसभा हो या राज्यसभा सदन में ऐसे लोगों को चुना जाना चाहिए, जो अध्ययनशील हों और समाज को आगे बढ़ाने का काम करें। आज जब मैं देखता हूं कि संसद में चर्चा नहीं होती, तो मुझे बहुत कष्ट होता है। पहले जब मीडिया नहीं था, तो हम रेडियो पर संसद समीक्षा सुना करते थे लेकिन अब सदन में चर्चा ही नहीं होती, तो देश के बारे में आम जनता को क्या पता चलेगा।

उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि जनप्रतिनिधियों को जनता के साथ सघन संपर्क रखना चाहिए और उनके सुख-दुख की चिंता करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं उत्तराखंड के गांव-गांव में घूमा हूं, इसलिये मुझे हमेशा जनता का प्यार और समर्थन मिलता रहा है। जनता की तपस्या के कारण ही मैं प्रदेश की बात राष्ट्रीय स्तर पर उठा पाया हूं। राज्यपाल ने कहा कि संसद में मेरे साढ़े दस वर्षों के कार्यकाल को संकलित करना आसान काम नहीं था। परंतु चाणक्य वार्ता की टीम ने मुझसे लगातार संपर्क बनाकर अपने प्रयासों से यह श्रमसाध्य कार्य किया है।

समारोह के संयोजक **अरिहंत जैन** ने इस अवसर पर सभी आगंतुक अतिथियों एवं श्रोताओं का धन्यवाद किया। उन्होंने उत्तराखंड सरकार, प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, राजभवन महाराष्ट्र के अधिकारियों का भी आभार व्यक्त किया। मंच का कुशल संचालन उत्तराखंड के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हेमंत बिष्ट ने किया। श्री बिष्ट ने उत्तराखंड का राज्य गीत लिखा है और नैनीताल में मां नैना देवी के मंदिर में गायी जाने वाली प्रसिद्ध आरती भी उनके द्वारा लिखी गयी है। श्री बिष्ट की पुस्तकें पहाड़ की पीड़ा और उनके दर्जनों काव्य संकलन देश-विदेश में चर्चित हैं। चाणक्य वार्ता के संपादक डॉ. अमित जैन ने नैनीताल से आये हेमंत बिष्ट जी का विशेष आभार व्यक्त किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ इस भव्य समारोह का समापन हुआ।

प्रस्तुति : सिद्धार्थ राणा/अरिहंत जैन/अजय भट्ट
चाणक्य वार्ता टीम, उत्तराखंड

पुस्तक परिचर्चा की प्रमुख झलकियाँ

- होटल मधुबन, देहरादून में आयोजित परिचर्चा समारोह में उत्तराखंड के विविध क्षेत्रों के प्रमुख लोगों ने भागीदारी की। आरएसएस के प्रांत प्रचारक युद्धवीर जी, भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री अजेय कुमार, विश्व हिन्दू परिषद के वरिष्ठ अधिकारी विजय कुमार, राज्यसभा सांसद नरेश बंसल, लोकसभा सांसद अजय टम्टा, उत्तराखंड भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष मदन कौशिक, उत्तराखंड के पुलिस महानिदेशक अशोक कुमार, उत्तराखंड विधानसभा के उपाध्यक्ष रघुराज सिंह, उत्तराखंड सरकार में स्वास्थ्य मंत्री धन सिंह रावत, उत्तराखंड सरकार में महिला एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्य, उत्तराखंड सरकार में औद्योगिक, खादी एवं ग्रामोद्योग, सैनिक कल्याण मंत्री गणेश जोशी, दून विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. सुलेखा डंगवाल, विधायक बलवंत सिंह भौर्याल, मुन्ना सिंह चौहान, डॉ. ललित नारायण मिश्र आदि अनेक विशिष्टजन इस अवसर पर उपस्थित रहे।
- भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी पुस्तक को लेने वाले लोगों की संख्या भी काफी रही। भगत दा के प्रेमियों ने इसे ग्रंथ के रुप में लेकर स्वयं को गौरांवित अनुभव किया।
- इस समारोह का सीधा प्रसारण उत्तराखंड के सूचना एवं प्रसारण विभाग द्वारा किया गया, जिसे बड़ी संख्या में लोगों द्वारा देखा गया। साथ ही न्यूज 24X7, गढ़वाल पोस्ट, अमर उजाला, हिन्दुस्तान आदि अनेक समाचार पत्रों ने भी इस कार्यक्रम को विशेष स्थान प्रदान किया।
- उत्तराखंड की राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य ने प्रदेश से बाहर होने के कारण लिखित में अपना शुभकामना संदेश भेजा। राज्यपाल ने भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी पुस्तक के प्रकाशन पर अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की और कहा कि यह पुस्तक सभी के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

Maharashtra Governor Bhagat Singh Koshyari, Chief Minister Pushkar Singh Dhami and Dr Amit Jain light the ceremonial lamp at the launch ceremony of the Book on Koshyari's speeches at Hotel Madhuban on Monday! (NEWS ON PG 3).

पुस्तक का लोकार्पण करते (बाएं से) श्याम जाजू, प्रेमचंद अग्रवाल, पुष्कर सिंह धामी, भगत सिंह कोश्यारी और डॉ. अमित जैन

कोश्यारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति को अपनी भाषा व बोली के

महत्व तथा संसद की गरिमा पर भी
की। पुस्तक का संपादन डॉ. अमित जै
किया है। कार्यक्रम में सांसद अजय

न्यूज कैप्सूल

जी कहत

हमें अपनी मातृभाषा प
हो अभिमान : कोश्यारी

देहरादून। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने कहा है कि पूर्व हमें अपनी विष्य मातृभाषा, य का राष्ट्रभाषा प किसी अभिमान हो जिद चाहिए। राजपुर रोड दिखाई स्थित होटल में 'भारतीय र को संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्त सिंह पर परिचर्चा के दौरान उन्होंने यह पणों पर बात कही। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह दौरान धामी ने कहा कि यह पुस्तक उन क्रम में विशाल व्यक्तित्व का भी विश्लेषण कई

कहा कि 2007 में मैं कनाली
टिकट मांग रहा था। कोश्या
कहा कि ठीक है घूमो। मैं
घूमता रहा, लेकिन टिकट नह
मैं नाराज हो गया। कोश्यारी
समझा बुझा लिया। फिर 201
मुझे मंत्रिमंडल में नहीं लिया
मैं नाराज हुआ था। कोश्यारी
धैर्य रखने को कहते हुए कहा
भविष्य नहीं दिखाई दे रहा।

वो मुझे हमेशा राज्य में
कहा करते। आज जब मैं
प्रधान सेवक हूं तो मुझे उनक
का पता चलता है। उन्होंने टि
से जुड़ा किस्सा सुनाते ह
टिहरी बांध

कोश्यारी जी कहते थे तुम्हें भविष्य दिखाई नहीं देता: धा

देहरादून | मुख्य संवाददाता

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कहा कि महाराष्ट्र के राज्यपाल और पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी भविष्य दृष्टा हैं। वो मुझे हमेशा पूरे राज्य का भ्रमण करने को कहते थे। जब किसी तात्कालिक फायदे की बात पर जिद करता तो कहा करते तुम्हें भविष्य दिखाई नहीं देता।

होटल मधुबन में सोमवार को

कहा कि 2007 में मैं कनालीछीना से टिकट मांग रहा था। कोश्यारी जी ने कहा कि ठीक है घूमो। मैं साल भर घूमता रहा, लेकिन टिकट नहीं मिला। मैं नाराज हो गया। कोश्यारी जी ने मुझे समझा बुझा लिया। फिर 2017 में जब मुझे मंत्रिमंडल में नहीं लिया गया तो भी मैं नाराज हुआ था। कोश्यारी जी ने मुझे धैर्य रखने को कहते हुए कहा कि तुम्हें भविष्य नहीं दिखाई दे रहा।

वो मुझे हमेशा राज्य में घूमने

भट्ट ने इतना बोला कि अजय का पत्ता कट गया

कोश्यारी ने अपने संबोधन के दौरान कहा कि नैनीताल सांसद अजय भट्ट सदन में इतना बोले कि उन्होंने राज्यसभा अजय टम्टा का पत्ता

ग्राम सभा से राज्यसभा तक अध्ययनशील लोग जाएं: कोश्यारी

किताब पर चर्चा के दौरान अपने संबोधन में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने कहा कि ग्राम सभा हो या राज्य सभा सदन में ऐसे लोगों को चुना जाना चाहिए जो अध्ययन शील हो और समाज को आगे बढ़ाने का काम करें। उन्होंने कहा कि आज जब मैं देखता हूँ कि संसद में चर्चा नहीं

'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' का

National
Dehradun, 31 Aug, 2021
www.garhwalpost.in
Garhwal Post

Meaningful debates must or healthy democracy: Koshyari

ARUN PRATAP SINGH

DEHRADUN, 30 Aug: Maharashtra Governor, Bhagat Koshyari, today said that meaningful discussions and debates in the Parliament and State Assemblies, were very necessary for a healthy democracy. He lamented the fact that instead of meaningful discussions, needless ruckus and disruptions in the Parliament and the State Assemblies were the order of these days. Koshyari was speaking on the occasion of the launch of a book titled, 'Bharat Mein Bhagat Singh Koshyari', a collection of his speeches in Rajya Sabha, Lok Sabha as well as reports of his tenure as chairman of the Committee of the Parliament. The book has been authored by Chandra Veera

unfortunate. He observed that during his term in the Parliament it wasn't so, and he expressed the desire that important discussions should

session was held peacefully with useful debates from the members of the treasury benches as well as the opposition members.

that Koshyari had laid the foundation of One Rank One Pension while he was the chairman of the Petitions Committee.

the Parliament, which only inspiring but interesting for

Hindi author Jagudi also

पुस्तक का लोकार्पण करते (बाएं से) श्याम जाजू, प्रेमचंद अग्रवाल, डॉ. अमित जैन

कोश्यारी जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि व्यक्ति को अपनी भाषा व बोली के प्रयोग में संकोच नहीं करना चाहिए। सभी

महत्व
की।
किया

चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक की पुस्तक चरैवेति ! चरैवेति ! ! के तमिल संस्करण का चेन्नई राजभवन में भव्य लोकार्पण सम्पन्न

भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहन प्रदान करने के लिये चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के अंतर्गत कार्यरत श्रीमती कांति देवी जैन ग्रन्थमाला द्वारा देश की विभिन्न भाषाओं में लगातार पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक द्वारा लिखित चरैवेति ! चरैवेति ! ! पुस्तक के तमिल संस्करण 'मुन्नैरिदे ! मुन्नैरिदे ! ! ' का भव्य लोकार्पण समारोह तमिलनाडु राजभवन, चेन्नई के दरबार हॉल में 18 अगस्त 2021 को आयोजित किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित थे। कार्यक्रम में पुस्तक के लेखक व उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक का सानिध्य भी प्राप्त हुआ। मंच पर देश के जाने-माने अर्थशास्त्री एवं भारतीय रिजर्व बैंक के निदेशक एस. गुरुमूर्ति, वरिष्ठ साहित्यकार एवं चाणक्य वार्ता के संरक्षक लक्ष्मीनारायण भाला, ऑल इण्डिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कांफ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष आनंदमल छल्लानी जैन, चाणक्य वार्ता के संपादक डॉ. अमित जैन एवं चाणक्य वार्ता के दक्षिण क्षेत्र प्रभारी नवरतन पिंचा जैन उपस्थित रहे। मंच का कुशल संचालन चेन्नई के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग द्वारा किया गया।

राजभवन में आयोजित इस समारोह का प्रारंभ तमिलनाडु राज्य के राज्य गीत तमिल ताई के गायन द्वारा किया गया। तत्पश्चात तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित और अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्जवलन करके समारोह का विधिवत प्रारंभ किया। इसके बाद चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के संपादक डॉ. अमित जैन ने अपना स्वागत भाषण देते हुये कहा कि भारत के सांस्कृतिक प्रदेश एवं तमिल भाषा की मधुरता से रोमांचित करने वाले राज्य तमिलनाडु में आना मेरे लिये सदैव आनंददायी होता है। उन्होंने कहा कि राम नाईक जी का जीवन विविध आयामों से भरा हुआ है, जो सभी के लिये प्रेरणादायी है। चरैवेति ! चरैवेति ! ! के असमिया अनुवाद

के प्रकाशन के बाद हमने इसके तमिल अनुवाद के प्रकाशन का निर्णय लिया, जो बहुत महत्वपूर्ण रहा। तमिल भाषा बहुत मधुर और हमारे देश की शान है।

डॉ. अमित जैन ने पुस्तक का तमिल अनुवाद करने वाली चाणक्य वार्ता की टीम का भी अभिनंदन किया। लता वेंकटेश, एस. श्रीनिवास तेवर, ईश्वर करुण और भवानी गंगाधर ने अत्यंत परिश्रमपूर्वक यह महत्वपूर्ण कार्य संपन्न किया है। उन्होंने कहा कि जब तमिल पुस्तक का आखिरी प्रूफ पढ़कर तमिलभाषी श्री तेवर ने यह कहा कि लगता ही नहीं है कि यह अनुवाद है, यह तो तमिल पुस्तक ही है, तो उन्हें अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हुआ। पुस्तक के प्रकाशक डॉ. अमित जैन ने समारोह के भव्य आयोजन एवं समारोह में पधारे तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित और अन्य अतिथियों का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि भारतीय भाषाओं को एक-दूसरे के नजदीक लाने के लिये हमारा यह महायज्ञ अनवरत जारी रहेगा। डॉ. अमित जैन और ईश्वर करुण ने तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक को एल्बम और वीडियो का पेन ड्राइव भेंट किया, जिसमें दोनों वरिष्ठजनों के चाणक्य वार्ता के कार्यक्रमों में पधारने के सुंदर चित्र और उनके वक्तव्यों को शामिल किया गया है। ज्ञातव्य है कि श्री पुरोहित ने असम एवं मेघालय तथा तमिलनाडु के राज्यपाल के रुप में चाणक्य वार्ता के कार्यक्रमों में भाग लिया था। उसी प्रकार उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रुप में श्री नाईक ने भी चाणक्य वार्ता के आयोजनों में कई बार भाग लिया है। अपने भाषण के अंत में डॉ. अमित जैन ने कांचीकामकोटी पीठ के समाधिस्त शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वती का स्मरण किया और उपस्थित सभी विशिष्टजनों से यह पुस्तक पढ़ने का अनुरोध किया।

इस अवसर पर मंचासीन अतिथियों का सम्मान, समारोह के स्वागताध्यक्ष आनंदमल छल्लानी द्वारा किया गया। श्री छल्लानी ने समारोह के मुख्य अतिथि तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित को शॉल, माला एवं प्रतीक चिन्ह भेंट करके उनका अभिनंदन किया। पुस्तक के लेखक राम नाईक जी का सम्मान चाणक्य वार्ता के दक्षिण क्षेत्र प्रभारी नवरतन पिंचा जैन एवं जे.पी. ललवानी द्वारा किया गया। अतिविशिष्ट अतिथि एस गुरुमूर्ति का सम्मान चेन्नई के महावीर फाउंडेशन के चेयरमैन सुगालचन्द जैन और चाणक्य इंटरनेशनल स्कूल, कोयम्बटूर के संस्थापक उपेन्द्रनाथ सिंह द्वारा किया गया। वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मीनारायण भाला का सम्मान कैलाश मल दुग्गड़ एवं सम्पतराज बागमार द्वारा किया गया। स्वागताध्यक्ष आनन्दमल छल्लानी का सम्मान, समारोह के मुख्य संयोजक ईश्वर करुण एवं हीराचंद पिंचा द्वारा किया गया।

पुस्तक के लोकार्पण से पूर्व पुस्तक के लेखक एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक ने अपने वक्तव्य में कहा कि उन्हें राजनैतिक एवं सामाजिक जीवन में कार्य करते हुये अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त हुये, जिसको उन्होंने अपनी पुस्तक में समाहित किया है। उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहा कि चाणक्य वार्ता ने उनकी इस पुस्तक के असमिया संस्करण का प्रकाशन किया और उसके बाद आज तमिल संस्करण का लोकार्पण हो रहा है। श्री नाईक ने महाराष्ट्र में विधायक के रुप में, लोकसभा में लम्बे समय तक सांसद के रुप में, केंद्र में पांच वर्ष पेट्रोलियम मंत्री के रुप में अपने अनेक अनुभवों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि यह पुस्तक केवल मेरे संस्मरण नहीं है, बल्कि मैं चाहता हूं कि आम पाठकों के साथ-साथ हर जनप्रतिनिधि-मंत्री, सांसद, विधायक से लेकर ग्राम पंचायत तक यह पुस्तक पढ़ी जाये और राजनीति में यदि स्थायित्व और नाम कमाना हो, तो मेरा गुरु मंत्र यह है कि जनप्रतिनिधियों को हमेशा याद रखना चाहिए कि वह केवल जिन्होंने उन्हें मत दिये, उनका ही नहीं, बल्कि जिन्होंने उनके विरोध में मतदान किया, उन मतदाताओं का भी प्रतिनिधि है।

तमिलनाडु राजभवन, चेन्नई में आयोजित भव्य लोकार्पण समारोह का एक दृश्य

उसे सभी के हितों की रक्षा करनी है। श्री नाईक ने कहा कि यह मंत्र अपनाकर जनप्रतिनिधि जनता के प्रेम का हकदार हो सकता है। श्री नाईक ने चरैवेति! चरैवेति!! के पौराणिक महत्व का भी उल्लेख करते हुये बताया कि चलते रहना, चलते रहना यह भारतीय संस्कृति है। श्री नाईक ने तमिलनाडु की जनता का अभिनंदन करते हुये उम्मीद जतायी कि उत्तर प्रदेश में जिस प्रकार योगी आदित्यनाथ सरकार ने कोरोना की आपदा पर नियंत्रण लगाने में सफलता प्राप्त की है, उसी प्रकार तमिलनाडु सरकार भी शीघ्र ही इस आपदा पर नियंत्रण प्राप्त करे। श्री नाईक ने स्वतंत्रता के अमृत वर्ष की सभी को शुभकामनाएं देते हुये सबको सुख और समृद्धि प्राप्त हो, यह भावना भी व्यक्त की।

तत्पश्चात समारोह के मुख्य अतिथि तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित एवं अन्य अतिथियों ने चरैवेति! चरैवेति!! के तमिल संस्करण का भव्य लोकार्पण किया। दरबार हॉल में उपस्थित सभी विशिष्टजनों ने पुस्तक का स्वागत करतल ध्वनि द्वारा किया। इस अवसर पर तमिल अनुवाद के लिए तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित जी ने अनुवादक लता वेंकटेश, ईश्वर करुण, श्रीनिवास तेवर व भवानी गंगाधर का सम्मान किया और उनके इस कार्य के लिए शुभाशंसा दी। इस अवसर पर चाणक्य वार्ता द्वारा प्रकाशित परिशिष्ट 'तमिल साहित्य का सौंदर्य' का विमोचन राज्यपाल एवं अन्य मंचासीन अतिथियों द्वारा किया गया। इस परिशिष्ट में तमिल साहित्य से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण लेखों का संकलन तमिल विद्वानों द्वारा किया गया है।

समारोह के अतिविशिष्ट अतिथि प्रसिद्ध चिंतक और भारतीय रिजर्व बैंक के निदेशक

एस. गुरुमूर्ति ने चरैवेति शब्द को गतिवान रहने का भारतीय मूलमंत्र बताते हुए वामपंथी साहित्यकारों द्वारा भी इसे प्रेरणास्पद बताया जाता है, यह बात कही। गुरुमूर्ति ने पुस्तक के तमिल संस्करण के प्रकाशन पर प्रकाशक और श्री राम नाईक को बधाई दी। उन्होंने कहा कि 'चरैवेति! चरैवेति!!' की यशोगाथा का प्रमुख कारण है कि श्री राम नाईक ने बहुत ही प्रमाणिक रूप से अपना जीवन जिया और भारतीय संस्कृति के प्रति सदैव वह समर्पित रहे। श्री नाईक के राजनैतिक जीवन की शुचिता का भी गुरुमूर्ति ने सुंदर शब्दों में उल्लेख करते हुये कहा कि पैट्रोलियम मंत्रालय जैसे महत्वपूर्ण मंत्रालय के मंत्री रहते हुये भी उनके ऊपर आंच न आना यह बताता है कि उनका चरित्र कितना सुदृढ़ है।

समारोह के मुख्य अतिथि तमिलनाडु के राज्यपाल **बनवारीलाल पुरोहित** ने इस अवसर पर अपना ओजस्वी और प्रेरणादायी वक्तव्य देकर सभी को लाभांवित किया। श्री पुरोहित ने समारोह के आयोजक चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह की प्रशंसा करते हुए चाणक्य वार्ता के साथ अपने संबंधों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि गुवाहाटी से लेकर चेन्नई तक मैं चाणक्य वार्ता के कार्यक्रमों में गया हूं और इसी प्रकाशन द्वारा राम नाईक जी की पुस्तक का तमिल संस्करण प्रकाशित करना बहुत महत्वपूर्ण है। पुस्तक का तमिल में अनुवाद होने से तमिलनाडु का सम्मान बढ़ा है। राज्यपाल ने कहा कि तमिल जानने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह प्रेरणादायी पुस्तक जरुर पढ़नी चाहिए। श्री पुरोहित ने 'समय प्रबंधन' पर जोर देते हुये कहा कि जीवन में सफलता का यह अति महत्वपूर्ण पक्ष है। इसीलिए हमें समय के साथ-साथ आगे बढ़ते रहना चाहिए।

राज्यपाल ने श्री नाईक के साथ अपने निकट संबंधों की चर्चा करते हुए चरैवेति! चरैवेति!! पुस्तक की प्रशंसा की और कहा कि इस पुस्तक से सभी प्रेरणा ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि आज के इस समारोह में शामिल होकर मुझे विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। चाणक्य वार्ता प्रकाशन ने मेरे मन की इच्छा पूरी की है, क्योंकि मैं जब अपने घनिष्ट एवं स्नेही मित्र श्री राम नाईक से पूछता था कि आपकी पुस्तक लगभग सभी भाषाओं में आई है, यह तमिल में कब आ रही है? तब वे मुझे आश्वस्त करते थे कि शीघ्र ही पुस्तक का तमिल संस्करण आने वाला है और आज के दिन यह महत्वपूर्ण कार्य संपन्न हुआ है। इस कार्य के लिए चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह ने अनवरत मेहनत की है और इतनी सुंदर पुस्तक बहुत कम समय में तैयार करके तमिल साहित्य के इतिहास में एक और मील का पत्थर स्थापित किया है।

तमिलनाडु के राज्यपाल ने कहा कि जहां

तक चाणक्य वार्ता और मेरा सम्बन्ध है, वह भी काफी पुराना है। जिस वर्ष चाणक्य वार्ता की शुरुआत हुई, उसके अगले वर्ष ही 10 सितम्बर 2017 को जब मैं असम व मेघालय के राज्यपाल के रूप में कार्य देख रहा था, उनके पूर्वोत्तर परिसंवाद कार्यक्रम में जाने का अवसर मुझे मिला था। पूर्वोत्तर के आठों राज्यों के तीन

समारोह की झलकियां

- देश के सुंदरतम राजभवनों में से एक तमिलनाडु राजभवन, चेन्नई के दरबार हॉल में चरैवेति! चरैवेति!! के तमिल संस्करण का विमोचन समारोह संपन्न हुआ। इस हॉल को सुंदर एवं सुगंधित पुष्पों से सजाया गया था।
- समारोह का प्रारंभ तमिलनाडु के राज्यगीत तमिल ताई से हुआ और समापन के समय राष्ट्रगान से सभागार गूंज उठा।
- समारोह का निमंत्रण पत्र हिन्दी, तमिल एवं अंग्रेजी तीनों भाषाओं में प्रकाशित किया गया, जिसकी सभी ने प्रशंसा की। चरैवेति! चरैवेति!! का तमिल अनुवाद भी सभी के मन को भाया और तमिल श्रोताओं ने काफी संख्या में पुस्तकें प्राप्त की।
- तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित जी ने सर्वप्रथम पुस्तक के लेखक राम नाईक जी को तमिलनाडु का परंपरागत वस्त्र पहनाकर सम्मानित किया और कार्यक्रम में पधारे सभी अतिथियों से मुलाकात करके उनकी सराहना की।
- समारोह का सीधा प्रसारण चाणक्य वार्ता के यूट्यूब चैनल चाणक्य चैनल एण्ड वेबिनार पर किया गया, जिसे देश-विदेश में देखा गया और अनेक दर्शकों ने अपनी सकारात्मक टिप्पणियां भी लिखीं। तमिलनाडु के प्रिंट एवं इलेक्ट्रानिक मीडिया ने भी इस समारोह को कवर किया। तो उत्तर प्रदेश एवं महाराष्ट्र के विभिन्न समाचार पत्रों में भी कार्यक्रम की कवरेज प्रकाशित की गई।
- समारोह के उपरांत राजभवन की ओर से आयोजित हाईटी के समय राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित और सभी अतिथि उपस्थित रहे। ये सभी अतिथि तमिलनाडु के विभिन्न संगठनों से पधारे विशिष्टजनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं से दिल खोलकर मिले।

दिवसीय कार्यक्रम में जो व्यापक चर्चा हुई थी, वो आज भी मुझे याद है। उस कार्यक्रम में मैंने पूर्वोत्तर के सभी राज्यों से आये नागरिकों से मिलकर उनके विचार नजदीक से जाने थे। पूर्वोत्तर के प्राकृतिक सौन्दर्य के बारे में उस समय मैंने कहा था कि यहां का सौन्दर्य कश्मीर से भी अधिक मोहक है, लेकिन इस सुंदर छटा का प्रचार-प्रसार उतना नहीं हुआ, जितना होना चाहिए था। चाणक्य वार्ता के उस कार्यक्रम ने पूर्वोत्तर के विकास में अपनी अहम भूमिका निभायी, इस बात की मुझे प्रसन्नता है।

राज्यपाल ने कहा कि उसके बाद मेरा कार्य क्षेत्र बदल गया और मैं तमिलनाडु आ गया। यहां भी चाणक्य वार्ता के प्रतिनिधियों ने मेरे से निरंतर संपर्क बनाये रखा और 23 जून 2018 को चेन्नई में चाणक्य वार्ता के तमिलनाडु विशेषांक के विमोचन के लिए मुझे आमंत्रित किया। संयोग ही था कि वह पहला कार्यक्रम था, जिसमें मैंने तमिलनाडु आने के बाद हिंदी में भाषण दिया। इस कार्यक्रम में मैंने कहा था कि चाणक्य वार्ता जनसेवा करते हुए पत्रकारिता के उच्च आदर्शों पर पूरी तरह खरी उतरती है। भारत जब विश्व गुरु बनेगा, तब चाणक्य वार्ता से जुड़े व्यक्ति गर्व के साथ कह सकेंगे कि इसमें हमारा भी योगदान रहा है। हम सभी को चाणक्य वार्ता की विचार क्रांति को आगे बढ़ाने में अपना पूर्ण सहयोग करना चाहिए।

राज्यपाल ने कहा कि आज चाणक्य वार्ता के संपादक डॉ. अमित जैन ने इन दोनों समारोह के चित्रों की एक बड़ी एल्बम एवं वीडियो मुझे भेंट की है। इन्हें देखकर मुझे विशेष प्रसन्नता हुई है। मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास है कि जिस प्रकार चाणक्य वार्ता ने पूर्व में अपने प्रकाशन की उत्कृष्टता को बनाए रखा है, उसी प्रकार श्री राम नाईक की पुस्तक चरैवेति! चरैवेति!! के तमिल संस्करण का प्रकाशन भी बहुत सुंदर तरीके से हुआ है।

तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने कहा कि उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल श्री राम नाईक मेरे अभिन्न मित्र और सहयोगी भी रहे है। श्री राम नाईक और मैं महाराष्ट्र के विधानसभा तथा लोकसभा में साथ में थे। मैं दो बार, 1978 और 1980 में नागपुर से विधानसभा का विधायक था तथा 1982 से अर्बन डेवलपमेंट, स्लैम इम्प्रूवमेंट और हाऊसिंग का मंत्री था तो श्री राम नाईक तीन बार 1978, 1980 और 1985 में मुंबई से विधानसभा में विधायक थे। बाद में मैं तीन बार 1984, 1989 और 1996 में लोकसभा का सांसद था तो श्री राम नाईक पांच बार 1989, 1991, 1996, 1998 और 1999 में उत्तर मुंबई से लोकसभा के सांसद थे तथा 1998 में रेल मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और 1999 में पेट्रोलियम मंत्री थे। श्री राम नाईक भारतीय जनता पार्टी, मुंबई के तीन बार अध्यक्ष भी रहे हैं। राज्यपाल ने यह भी कहा कि चुनाव क्षेत्र में मेरे जीतने का प्रतिशत राम नाईक जी से कुछ कम ही रहा है।

राज्यपाल ने कहा कि मैंने श्री राम नाईक को सकारात्मक भाव से कार्य करने वाले विधायक तथा सांसद के रूप में देखा है। उदाहरण के लिए मुंबई की झुग्गी-झोपड़ी में जमीन के अभाव में शौचालय की कमी रहती थी तो उन्होंने उसी जमीन पर दो मंजिल शौचालय तथा मोबाईल टॉयलेट भी प्रारंभ करवाया। लोकसभा में विपक्ष में रहते हुए उन्होंने अपने शहर का नाम अंग्रेजी में बॉम्बे और हिंदी में बंबई था तो सही नाम 'मुंबई' सभी भाषाओं में करवाया। तत्पश्चात् मद्रास का चेन्नई, बंगलोर का बंगलुरु, त्रिवेंद्रम का तिरुअनंतपुरम और कलकत्ता का कोलकाता हुआ। उन्होंने कहा

राज्यपाल से सम्मान प्राप्त करती हुई लता वैंकटेश

राज्यपाल से सम्मान प्राप्त करते हुए ईश्वर करुण

कि श्री राम नाईक 1998 में प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के मंत्री परिषद में रेल राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), गृह, योजना एवं कार्यालय कार्यान्वयन और संसदीय कार्य राज्य मंत्री थे। एक राज्य मंत्री के पास इतने महत्वपूर्ण मंत्रालय का कार्यभार विशेष माना जाता है। वैसे ही श्री नाईक 1999 में पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्री थे। स्वतंत्र पेट्रोलियम मंत्रालय का निर्माण 1963 में कराया गया। श्री राम नाईक पांच वर्ष पेट्रोलियम मंत्री के रूप में तैनात रहे, वह समय पेट्रोलियम क्षेत्र में सुवर्ण युग माना जाता है।

राज्यपाल ने कहा कि श्री राम नाईक ने कुष्ठपीड़ितों और मछुआरों के लिए भी संस्मरणीय कार्य किया है। ऐसे कई कार्यों की जानकारी 'चरैवेति! चरैवेति!!' के तमिल संस्करण में आप सभी प्रबुद्ध लोग पढ़कर आनंदित होंगे। ये कार्य अविस्मरणीय है। इनका पढ़ना आनंद देता है। मुझे विश्वास है कि तमिल पाठकों को यह पुस्तक रुचिकर लगने के साथ-साथ देश व समाज के लिए कुछ करने की प्रेरणा भी देगी।

राज्यपाल बनवारी लाल पुरोहित ने इच्छा जतायी कि तमिल की यह पुस्तक तमिलनाडु के सभी प्रमुख पुस्तकालयों, विद्यालयों, पुस्तकालयों तक पहुंचे और पाठक इससे लाभांवित हों।

उन्होंने कहा कि आज के इस समारोह में चाणक्य वार्ता के तमिलनाडु का साहित्य सौन्दर्य परिशिष्ट का भी विमोचन किया गया, जो बहुत सुंदर और नई सामग्री लिए हुए है। चाणक्य वार्ता मैं निरंतर पढ़ता हूं और उसमें प्रकाशित सभी सामग्री समाजहित के लिए उपयोगी है, ऐसा मेरा विश्वास है। राज्यपाल ने समारोह में पधारे अनेक विशिष्टजनों का अभिनंदन भी किया।

समारोह के अध्यक्ष एवं वरिष्ठ साहित्यकार लक्ष्मीनारायण भाला ने समारोह में उपस्थित सभी अतिथियों एवं आगंतुकों का धन्यवाद करते हुये कहा कि तमिल में अनुवाद के साथ ही चरैवेति! चरैवेति!! का 12 भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इससे पुस्तक की लोकप्रियता का सहज ही आंकलन किया जा सकता है। श्री भाला ने कहा कि श्री नाईक के प्रयासों से ही संसद में राष्ट्रगीत वंदेमातरम और जन गण मन का गायन प्रारंभ हुआ, जो अत्यंत गर्व का विषय है। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधि को जनता के प्रति कितना जवाबदेह होना चाहिए, इसका साक्षात उदाहरण राम नाईक जी ने प्रस्तुत किया है। राम नाईक जी ने 1978 से 2019 तक अपने 41 वार्षिक कार्यवृत्तों में अपने कार्यों का उल्लेख अत्यंत प्रमाणिक तरह से किया है।

अंत में इस भव्य समारोह का समापन जन गण मन के साथ हुआ। इस समारोह में मुख्य रुप से पूर्व केंद्रीय मंत्री पोन राधाकृष्णन, कार्यक्रमोपरांत मणिपुर के राज्यपाल बने तमिलनाडु के प्रसिद्ध समाजसेवी इला गणेशन, विधायक वानती श्रीनिवासन, कमला सज्जन, राज मेहता, डी.पी. सिंह, रामायण सी, एस.एन. तिवारी, उमा कुमारी, अरुणा मुणोत, शकुंतला करनानी, एस.के. गोयनका, एम. गौतमचंद जैन, तिरुमति एस. राधा, आर. नवीन, एस. रामशेखर, आर. कल्याणरमन, एस. नागाराजन, एम. उमा महेश्वरी, आर. करुणाकरन, जे. एन. तिवारी, बृज खंडेलवाल, फतेह चन्द जैन, पद्म कुमार टाटिया, सज्जन राज मेहता, प्रकाश चंद गुलेचा व सरला सिसोदिया आदि उपस्थित रहे। समारोह का सीधा प्रसारण चाणक्य वार्ता के यूट्यूब चैनल, चाणक्य चैनल एण्ड वेबिनार पर किया गया, जिसे देश भर से हजारों लोगों ने देखा। कार्यक्रम की कवरेज तमिलनाडु के प्रमुख अखबारों सहित देश के अन्य प्रांतों के समाचार पत्रों में भी प्रमुखता से प्रकाशित हुई।

प्रस्तुति : ईश्वर करुण/जेपी ललवानी,
चाणक्य वार्ता टीम, तमिलनाडु

राज्यपाल से सम्मान प्राप्त करते हुए श्रीनिवास तेवर

राज्यपाल से सम्मान प्राप्त करते हुए भवानी गंगाधर

राजभवन दरबार हाल म तामल अनुवाद पुस्तक का राज्यपाल द्वारा लोकार्पण

दक्षिण भारत राष्ट्रमत

राज्यपाल राम नाईक ने लिखी है चरैवेति चरैवेति

का राज्यपाल

के तमिल

य की कीमत क

वानें : राज्यपाल

पत्रिका. राज्यपाल पुरोहित ने कहा कि ल्य है। हम समय की जानें व उसका अधिक दुपयोग करें। समय पर अधिक फलदायी होते

सहयोगियों का

समारोह में चाणक्य वार्ता दक्षिण क्षेत्र के जनसंपर्क अधिकारी एवं कार्यक्रम के मुख्य संयोजक ईश्वर करुण झा समेत पुस्तक में सहयो करने वालों का राज्यपा विशेष सम्मान किया।

के राजभवन के दरबार हॉल में बुधवार को आयोजित एक समारोह में उत्तरप्रदेश के प की पुस्तक 'चरावैती चरावैती' का तमिल संस्करण का विमोचन राज्यपाल बनवार पूर्व राज्यपाल राम नाइक और अन्य विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

IMG-20210820-WA0009.jpg

'राम नाईक की 'चरैवेति ! चरैवेति !!' का तमिल अनुवाद यह तमिलनाडु का सम्मान' : राज्यपाल

सरिता प्रवाह ब्यूरो

लखनऊ । उत्तर प्रदेश के पूर्व राज्यपाल राम नाईक के संस्मरणों का संग्रह 'चरैवेति ! चरैवेति !!' का तमिल में अनुवाद होने से तमिलनाडु का सम्मान हुआ है। तमिल जानने वाले हर व्यक्ति ने यह प्रेरणादायी पुस्तक पढनी चाहिए', ऐसी प्रशंसा तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने की। 'चरैवेति ! चरैवेति !!' का तमिल अनुवाद 'मुन्नैरिदे ! मुन्नैरिदे !!' तमिलनाडु के राजभवन में बुधवार को विमोचित करते हुए राज्यपाल पुरोहित बोल रहे थे।

महाराष्ट्र का मराठी अख़बार 'सकाल' में उत्तर प्रदेश के पूर्व

एक साथ हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी व गुजराती भाषाओं के संस्मरणों का तत्कालिन राष्ट्रपति स्व. प्रणब मुखर्जी की उपस्थिति में राष्ट्रपति भवन में लोकार्पण हुआ। उसके बाद अनुवाद का मानो तांता लगा। दृष्टिबाधितों के लिए ब्रेल लिपि में मराठी, हिंदी व अंग्रेजी में यह पुस्तक उपलब्ध होने से राजधानी चेन्नई में इस पुस्तक का बारहवी भाषा - तमिल में संस्करण विमोचित हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात किसी राजनेता की पुस्तक के विभिन्न 15 संस्करण यह अपने-आप में भी विक्रम है।

'चरैवेति ! चरैवेति !!' की इस यशोगाथा का शायद कारण यह है कि प्रशंसा की। राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित तथा श्री गुरुमूर्ति दोनों ही पूर्व राज्यपाल से तथा उनके कार्य से विगत चालीस वर्षों से सुपरिचित हैं। स्वाभाविक था कि उनकी समीक्षा ने तमिलनाडु के लोगों में पुस्तक की उत्सुकता को बढाया।

पूर्व राज्यपाल तथा पुस्तक के लेखक राम नाईक ने उपस्थितों के सामने अपना मंतव्य रखते हुए कहा, यह पुस्तक केवल मेरे संस्मरण नही है। मैं चाहता हूं कि आम पाठकों के साथ-साथ हर जनप्रतिनिधि - मंत्री, सांसद, विधायक से लेकर ग्रामपंचायत तक यह पुस्तक पढ़े और राजनीति में नाम कमाना हो तो मेरा गुरु मंत्र अपनाये। 'जनप्रतिनिधि ने नही है उनका भी, यहाँ तक की जिन्हे मतदान का अधिकार ही नही ऐसे छोटे बच्चे, प्राकृतिक संपदा सभी क प्रतिनिधि है और सबके हित की उसे रक्षा करनी है। एक बार यह मंत्र अपन कर जनप्रतिनिधी चले तो जनता के प्रेम का वह सदैव हकदार होगा।' इस भाषण में श्री राम नाईक ने तमिलनाड की जनता का अभिनंदन किया औ उम्मीद जताई की उत्तर प्रदेश में योग आदित्यनाथ की सरकार ने करोना क आपदा पर नियंत्रण लाया है वैसे स्थिती जल्दही तमिलनाडु में आए 15 अगस्त से प्रारंभ हुआ 'स्वतंत्रत अमृत वर्ष' सबको सुखी-समृद्ध बनाएं ऐसी शुभकामना भी तमिलनाड की जनता को दी।

कृष्णानंद सागर

राष्ट्र ध्वज : भगवा या तिरंगा

कांग्रेस और संघ : एक सिंहावलोकन -29

गतांक से आगे...

कांग्रेस अपने को राष्ट्रीय संस्था कहती थी, किंतु उसकी 'राष्ट्रीय' की परिभाषा बड़ी विचित्र थी। जो कांग्रेस में आ गया, वह राष्ट्रीय और जो कांग्रेस में नहीं आया वह साम्प्रदायिक अथवा हिंसावादी या भटका हुआ। मुसलमानों के बारे में तो और भी विचित्रता थी। जो मुसलमान कांग्रेस में आ जाता था, उसे 'राष्ट्रीय मुसलमान' कहा जाता था, वह चाहे कितना ही घोर साम्प्रदायिक और हिंसक हो।

1920 के दशक में कांग्रेस के अधिकांश मुस्लिम नेता वे थे, जिन्होंने 'खिलाफत आंदोलन' चलाया था और वे खिलाफत आंदोलन में से कांग्रेस में आए थे। वे केवल कांग्रेस में आए ही नहीं, तो उन्होंने पूरी कांग्रेस को ही खिलाफत आंदोलन में झोंक दिया था। खिलाफत आंदोलन तुर्किस्तान के खलीफा के साम्राज्य को सुरक्षित रखने के लिए था। उसका भारत और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम से कुछ भी संबंध नहीं था। वह भारत की भूमि पर एक विदेशी अर्थात् अराष्ट्रीय आंदोलन था। उसके नेता क्योंकि कांग्रेस के सदस्य बन गए, इसलिए वे 'राष्ट्रीय' हो गए और फलत: वह विदेशी आंदोलन भी 'राष्ट्रीय' हो गया।

उन दिनों कांग्रेस का सदस्यता शुल्क एक चवन्नी (चार आने अर्थात् आज के पच्चीस पैसे) था। यानी कोई भी व्यक्ति एक चवन्नी में 'राष्ट्रीय' बन जाता था। आप कांग्रेस रूपी बाजार में जाओ, वहां चार आने देकर 'राष्ट्रीय' का बिल्ला खरीद लाओ और आप 'राष्ट्रीय' हो गए।

अंग्रेजों ने कांग्रेस की स्थापना की ही इसलिए थी कि कांग्रेस के माध्यम से देश के लोगों का हजारों वर्षों से चले आ रहे सांस्कृतिक प्रवाह से नाता तोड़ा जा सके अथवा उस नाते को दुर्बल किया जा सके। सांस्कृतिक प्रवाह से नाता टूट जाने अथवा दुर्बल हो जाने पर राष्ट्रीय चेतना भी दुर्बल हो जाएगी। ऐसा होने पर स्वाधीनता की भावना भी क्षीण हो जाएगी और अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह कभी होगा ही नहीं और अंग्रेजी राज अक्षुण्ण रहेगा।

हमारा राष्ट्रीय लक्ष्य और उसका प्रतीक

हजारों-लाखों वर्ष पूर्व जब भारतीय राष्ट्रीय जीवन आरंभ हुआ, तब हमारे ऋषियों-मुनियों ने अपने सामने एक राष्ट्रीय लक्ष्य भी रखा। वह लक्ष्य था—कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। अर्थात् हम विश्व को श्रेष्ठ बनाएंगे, उसे ज्ञानवान् व चरित्रवान् बनाएंगे। कालांतर में यह लक्ष्य भावी पीढ़ियों के मस्तिष्क से लुप्त भी हो सकता है, इसलिए उन्होंने सोचा कि इस लक्ष्य को मस्तिष्क में बनाए रखने के लिए 'लक्ष्य का कोई भौतिक प्रतीक' भी होना चाहिए जिसे देख कर भावी पीढ़ियों में अपने राष्ट्रीय लक्ष्य की स्मृति बनी रहे और वे उसके लिए कार्यरत रहें। काफी चिंतन-मनन करने पर उन्हें प्रात: कालीन उदित होते हुए सूर्य का रंग सर्वाधिक उपयुक्त प्रतीत हुआ। सूर्योदय से पूर्व ही आकाश में चारों ओर अरुणिमा छटा छाने लगती है और रात्रि का अंधकार छटने लगता है। धीरे-धीरे सूर्य पूर्व दिशा से उदित होता हुआ दिखायी देने लगता है। उस बाल-रवि का अरुणिमा वर्ण (रंग) आंखों को अत्यंत सुखकर एवं मन को आल्हादित करने वाला होता है। पूर्णाकार प्राप्त करते हुए वह रात्रि के अंधकार को नष्ट करता जाता है और संपूर्ण जगत को प्रकाशित करता जाता है। इसलिए ऋषियों ने उदयोन्मुख सूर्य के रंग को ही अपने राष्ट्रीय लक्ष्य का प्रतीक मान लिया।

आदि काल से चला आ रहा भगवा ध्वज

सूर्य का यह रंग मानव कृत नहीं, यह भगवत्कृत है। इसलिए इसे भगवा रंग भी कहा जाने लगा। ऋषिजन अपने वस्त्रों को भगवे रंग में ही रंग कर पहनने लगे तथा अपने आश्रमों पर भगवे रंग के झण्डे भी फहराने लगे। बाद में जब राज्य-व्यवस्था का आरंभ हुआ तो राज्य का झण्डा भी भगवा झण्डा ही हो गया। जब एक से अधिक राज्य होने लगे तो सबके झण्डों का रंग तो भगवा ही रहता था, किंतु अलग राज्य को प्रदर्शित करने के लिए झण्डे पर कोई अलग आकृति (चिन्ह) बना दी जाती थी। उस आकृति के नाम पर ही उस झण्डे का नाम बोला जाता था। जैसे गरूड़ ध्वज पर गरूड़ की आकृति अंकित थी और कपि ध्वज पर कपि (वानर) की।

रामायण में अयोध्या, मिथिला, हैहय आदि सभी राज्यों के ध्वज भगवा रंग के ही थे। महाभारत काल में भी हस्तिनापुर, गान्धार, मद्र, मत्स्य, मगध, अंग, बंग आदि राज्यों के ध्वज भगवा ही थे। चंद्रगुप्त मौर्य, विक्रमादित्य, हर्षवर्धन, पुलकेशी, कृष्णदेव राय, शिवाजी, रणजीत सिंह आदि की विजय पताकायें भगवा ही थीं। अर्थात् आदि काल से लेकर अब तक हमारा राष्ट्रीय ध्वज भगवा ही चला आ रहा था।

अंग्रेजों के विरुद्ध चले आ रहे स्वाधीनता संग्राम का वास्तविक अर्थ यही था कि भारत से अंग्रेजों के झण्डे यूनियन जैक को उखाड़ फेंका जाए और उसकी जगह युगों से चले आ रहे अपने परंपरागत राष्ट्रीय ध्वज भगवा ध्वज को फहराया जाए।

कांग्रेस परंपरागत राष्ट्रीय ध्वज को भूल गई

किन्तु अंग्रेजों से राजनीतिक शिक्षा प्राप्त कांग्रेस भारत के परम्परागत राष्ट्रीय ध्वज को भूल चुकी थी। वह तो अपने सभी अधिवेशनों में अंग्रेजी झण्डा यूनियन जैक ही लहराती थी। जब आजादी के आंदोलन की बात शुरू हुई तो उसके ध्यान में आया कि हमारा कोई अपना भी

ध्वज होना चाहिए। लेकिन क्योंकि वह भारत के सांस्कृतिक प्रवाह से काफी मात्रा में कट चुकी थी, इसलिए उसे भारत के परंपरागत राष्ट्र-ध्वज का भी ध्यान नहीं आया और वह नए सिरे से किसी राष्ट्र-ध्वज के निर्माण के चक्कर में पड़ गई।

1906 से लेकर 1921 तक विभिन्न व्यक्तियों और विभिन्न संस्थाओं ने अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार समय-समय पर अनेक झण्डों को राष्ट्रीय ध्वज के रूप में स्वीकार किया था। इन्हीं में तिरंगे झण्डे का भी भारत की राजनीति में आविर्भाव हुआ। ये सारे झण्डे भारतीय राष्ट्र-जीवन से संबंधित अज्ञान और विस्मरण में से उत्पन्न हुए थे।

कांग्रेस के तिरंगे का जन्म

भारत सरकार के प्रकाशन विभाग द्वारा प्रकाशित 'अवर फ्लैग' पुस्तक के पृष्ठ-6 पर बताया गया है कि—''1921 के लगभग बैजवाड़ा में हुए कांग्रेस अधिवेशन में आंध्र के एक युवक ने एक ध्वज तैयार किया और उसे गाँधी जी के पास ले गया। यह दुरंगा था—लाल और हरा—दो प्रमुख समुदायों का प्रतीक। गांधी जी ने बीच में एक सफेद पट्टी जोड़ने का सुझाव दिया, ताकि भारत के शेष समुदायों का प्रतिनिधित्व हो सके, और चर्खे का भी सुझाव दिया जो प्रगति का प्रतीक था।

''इस प्रकार तिरंगे का जन्म हुआ। पर अभी इसे अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने अधिकृत रूप से स्वीकार नहीं किया था। फिर भी गांधी जी के अनुमोदन का प्रभाव यह पड़ा कि वह पर्याप्त लोकप्रिय हो गया और सभी कांग्रेस अधिवेशनों में फहराया जाने लगा।''

आंध्र के उस युवक ने लाल रंग हिन्दुओं के प्रतीक के रूप में और हरा रंग मुसलमानों के प्रतीक के रूप में झण्डे में रखा था, क्योंकि उन दिनों कांग्रेस द्वारा हिन्दू-मुस्लिम एकता की बातें बहुत की जा रही थीं। गांधी जी ने कहा कि हिन्दुओं और मुसलमानों के अलावा और भी कई समुदाय यहां रहते हैं, उनका भी प्रतिनिधित्व झण्डे में होना चाहिए। इसलिए उनके प्रतिनिधित्व के रूप में तीसरा सफेद रंग जोड़ा गया।

राष्ट्र ध्वज का प्रश्न

स्पष्ट है कि यह तिरंगा झण्डा साम्प्रदायिक आधार पर बनाया गया। इसके पीछे की गांधी जी की भी सोच साम्प्रदायिक आधार पर ही थी। गाँधीजी के प्रभाव के कारण भले ही यह कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में फहराया जाने लगा, किन्तु कई लोगों द्वारा इसकी आलोचना भी की जाती रही। सबसे प्रबल आपत्ति सिखों द्वारा की गई। उनका कहना था कि राष्ट्रीय ध्वज में यदि सम्प्रदायों के अनुसार ही रंग रखे जाने हैं, तो हमारा भी उसमें अलग से पीला रंग सम्मिलित किया जाये अथवा ऐसा ध्वज चुना जाए जो असाम्प्रदायिक हो।

इसी कारण 1931 की कराची कांग्रेस में राष्ट्र ध्वज का प्रश्न विचार के लिये आया।

पट्टाभि सीतारमैया के अनुसार ''सिखों ने राष्ट्रीय झण्डे व उसमें उनके लिए समाविष्ट किए जाने वाले रंग के प्रश्न को उठाया। यह प्रश्न पहले लाहौर (1930) में भी उठाया जा चुका था, कराची (1931) में इसे और भी अधिक महत्व मिला।... नई कार्यसमिति ने, जिसकी बैठकें 1 व 2 अप्रैल को हरचन्द्राय नगर में हुईं, इस आपत्ति की जांच कराने के लिए कि राष्ट्रीय झण्डे के रंग साम्प्रदायिक आधार पर निर्धारित किए गए हैं अथवा नहीं, और यह सिफारिश करने के लिए कि कांग्रेस कौन सा झण्डा स्वीकृत करे, एक कमेटी नियुक्त करने का निश्चय किया।'' (कांग्रेस का इतिहास, खण्ड-1, पृष्ठ-372)

ध्वज समिति

अत: राष्ट्रीय ध्वज के विषय में ठीक से निर्णय करने के लिए कांग्रेस कार्यसमिति ने सात सदस्यों की एक समिति बना दी। इस समिति को 'ध्वज समिति' या 'झण्डा समिति' कहा गया। समिति के सदस्य थे—

1. सरदार वल्लभ भाई पटेल
2. जवाहरलाल नेहरू
3. डॉ. ना.सु. हर्डीकर
4. आचार्य काका कालेलकर
5. मास्टर तारासिंह
6. डॉ. पट्टाभि सीतारमैया
7. मौलाना अबुल कलाम आजाद

ध्वज समिति का प्रतिवेदन

इस समिति ने सब दृष्टि से विचार कर सर्वसम्मति से जो अपना प्रतिवेदन दिया, उसमें लिखा—''हम लोगों का एकमत है कि अपना राष्ट्रीय ध्वज एक ही रंग का होना चाहिए। भारत के सभी लोगों का एक साथ उल्लेख करने के लिए उन्हें सर्वाधिक मान्य केसरिया रंग ही हो सकता है। अन्य रंगों की अपेक्षा यह रंग अधिक स्वतंत्र स्वरूप का तथा भारत की पूर्व परम्परा के अनुकूल है।''

उन्होंने निष्कर्ष रूप में लिखा—''भारत का राष्ट्रीय झण्डा इकरंगा हो, और उसका रंग केसरिया रहे तथा उसके दण्ड की ओर नीले रंग में चर्खे का चित्र रहे।''

ध्वज समिति का यह प्रतिवेदन राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण था। क्योंकि इसमें अलग-अलग सम्प्रदायों के प्रतिनिधित्व के रूप में अलग-अलग रंगों को स्थान नहीं दिया गया था, जैसा कि तब तक तिरंगे झण्डे में

आचार्य चाणक्य की ये बातें- जीवन में अवश्य काम आएंगी

रमेश जैन

बुरा आचरण करने वाले अर्थात दुराचारी व्यक्ति के साथ रहने से, पाप दृष्टि रखने वाले का साथ करने से तथा अशुद्ध स्थान पर रहने वाले से मित्रता करने वाला शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। बुरी संगति का सदैव बुरा असर पडता है। यहां आचार्य चाणक्य ने इसी ओर सभी का ध्यान खींचा है। दुश्चरित्र व्यक्ति का साथ करने अथवा गलत स्थानों पर जाने से अथवा रहने से मनुष्य का चरित्र नष्ट हो जाता है। जिस व्यक्ति का चरित्र नष्ट हो जाता है, वह जीवित होते हुए भी मरे हुए के समान ही होता है।

मित्रता बराबर वालों से ही शोभा पाती है, नौकरी राजा की ही अच्छी होती है, व्यवहार में कुशल व्यापारी और घर में सुंदर स्त्री सदा शोभा पाती है।

मित्रता कभी दो स्तर वालों में सफल नही होती। एक सा स्वभाव एक समान समाज में जीवन-स्तर, एक से कर्म दो व्यक्तियों के बीच में मित्रता के आधार हो सकते हैं। नौकरी हमेशा सरकारी अच्छी होती है क्योंकि उसमें स्थायित्व होता है।

लेखक नवभारत टाइम्स में कार्यरत हैं।

चला आ रहा था।

यद्यपि यह ध्वज समिति (झण्डा समिति) की सर्वसम्मत संस्तुति थी, तो भी इस पर कांग्रेस कार्यसमिति की मोहर लगना आवश्यक था। अंतिम निर्णय वहीं होना था।

स्मिति का यह प्रतिवेदन (रिपोर्ट) प्रकाशित होने पर डॉ. हेडगेवार जी को बहुत प्रसन्नता हुई। किन्तु उन्हें आशंका हुई गाँधी जी की ओर से। गाँधीजी को मुसलमानों की बहुत अधिक चिंता रहती थी और तिरंगा गाँधीजी द्वारा ही प्रचलित किया गया था, किन्तु समिति के प्रतिवेदन में तिरंगे को पूरी तरह से नकार दिया गया था, इसलिए गाँधी जी इस प्रतिवेदन को अस्वीकार कर सकते हैं। यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति होगी। डॉ. हेडगेवार ऐसी स्थिति को टालने के लिए सक्रिय हो गए।

डॉ. हेडगेवार के प्रयत्न

नागपुर के लोकनायक बापूजी अणे कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य थे। वे कार्यसमिति की बैठक में दिल्ली जाने वाले थे। वे केसरिया रंग के पक्षधर नहीं थे, भगवा रंग के पक्षधर थे। डॉक्टर जी उनके पास गए और उन्हें समझाया कि केसरिया और भगवा रंग कोई दो रंग नहीं हैं। इनमें बहुत ही मामूली सा अंतर है। दोनों ही लाल रंग व पीले रंग का सम्मिश्रण हैं। इस सम्मिश्रण में यदि लाल रंग की मात्रा अधिक कर दी जाए तो वह 'भगवा' हो जाता है, और यदि पीले रंग की मात्रा अधिक कर दी जाए तो वह 'केसरिया' हो जाता है। मूलत: दोनों एक ही हैं। अत: केसरिया ध्वज के समर्थन का अर्थ भगवा ध्वज का ही समर्थन है।

डॉक्टर जी ने आगे कहा कि—''यद्यपि काफी अध्ययन और खोज के उपरान्त समिति ने केसरिया रंग का सुझाव दिया है, पर गाँधीजी के सम्मुख सब मौन हो जाएंगे। गाँधीजी ने केसरिया को अमान्य कर तिरंगे को ही बनाए रखने का आग्रह किया तो ये नेता मुंह नहीं खोलेंगे। अत: आपको आगे आकर निर्भयता पूर्वक अपने पक्ष का प्रतिपादन करना चाहिए।'' (ना.ह. पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-251)

डॉक्टरजी के यह बताने पर कि केसरिया रंग और भगवा रंग में कोई विशेष अन्तर नहीं है, बापूजी अणे मान गए और उन्होंने कांग्रेस कार्यसमिति में केसरिया ध्वज का समर्थन करने का आश्वासन दे दिया।

लेकिन डॉक्टरजी यहीं नहीं रूके। वे किसी भी विषय पर प्रयत्न एक साथ कई दिशाओं से करते थे। अत: वे भी दिल्ली पहुंच गए और लोकनायक बापूजी अणे के आवास पर ही जम गए। लोकनायक के ही कथनानुसार—''वे दिन भर दिल्ली में इधर-उधर घूमते रहते। अत: निश्चय ही वे कार्यसमिति के अन्य सदस्यों से भी इस सम्बन्ध में मिले होंगे।'' लेकिन हुआ वही, जिसकी डॉक्टरजी को आशंका थी।

''अखिल भारतीय कांग्रेस समिति गाँधी जी के मन की तिरंगी योजना से मतभेद करने का साहस न कर सकी और उसने सीधे उसे ही स्वीकृति दे दी। जिस मानसिक पृष्ठभूमि के कारण यह निर्णय लिया गया, वह घोर दुर्भाग्यपूर्ण सिद्ध हुआ।'' (हो.वे. शेषाद्रि, और देश बंट गया, पृष्ठ-138)

डॉ. हेडगेवारजी की सारी मेहनत बेकार गई। समिति का प्रतिवेदन अमान्य कर दिया गया और तिरंगे को बनाए रखने का निर्णय ले लिया गया। हां, डॉक्टरजी की दौड़-धूप का इतना परिणाम अवश्य निकला कि तिरंगे में गहरे लाल रंग के स्थान पर केसरिया रंग मान लिया गया ओर इस रंग का क्रम सबसे ऊपर कर दिया गया। इससे पहले लाल रंग की पट्टी सबसे नीचे रहती थी।

रंगों के बारे में वर्षों से हो रही आलोचनाओं से बचने के लिए रंगों की व्याख्या में परिवर्तन किया गया और कहा गया कि तीन रंग विभिन्न सम्प्रदायों के द्योतक न हो कर गुणों के प्रतीक हैं।

पट्टाभि सीतारामैया लिखते हैं—''राष्ट्रीय झण्डा तीन रंग का और पहले की तरह लम्बाई-चौड़ाई में समानान्तर होगा। लेकिन उसके रंग क्रमश: ऊपर से नीचे केसरिया, सफेद और हरा होंगे। सफेद पट्टे के केन्द्र में गहरे लाल रंग का चरखा होगा। रंग गुणों के न कि जातियों के सूचक हैं। केसरिया रंग साहस और बलिदान का, सफेद रंग शांति और सत्य का, हरा रंग श्रद्धा तथा वीरता का एवं चर्खा जनता की आशा का प्रतिनिधि होगा। झण्डे की लम्बाई-चौड़ाई का अनुपात 3:2 होगा।'' (कांग्रेस का इतिहास, खण्ड-1, पृष्ठ-388)

ना.ह. पालकर लिखते हैं—''इस प्रकार (ध्वज) समिति के सारे परिश्रम पर पानी फिर गया तथा राष्ट्र-ध्वज का प्रश्न इतिहास और परम्परा के आधार पर निश्चित न होते हुए व्यक्ति की इच्छा और धारणा से तय हुआ।'' (डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-251)

कांग्रेस का इतिहास 1935 में लिखा गया था और उसी वर्ष वह प्रकाशित किया गया था। उसमें ध्वज समिति का प्रतिवेदन था। किन्तु बाद के संस्करणों में से वह हटा दिया गया। इसलिए आज उस प्रतिवेदन के बारे में किसी को पता नहीं है। वह प्रतिवेदन क्यों हटाया गया, इसका कारण पाठक स्वयं समझ सकते हैं। क्रमश:

लेखक इतिहासकार व संघ विचारक हैं।

ई-मेल : response50123@gmail.com

धर्मपाल महेंद्र जैन

गलत मुद्दों में फँसा देश

आम चुनाव आने वाले हैं। यूँ तो आम आने का एक मौसम होता है पर चुनाव हर मौसम में टपक जाते हैं। चाहे आम चुनाव कुछ साल दूर हैं, पर भारी बेरोजगारी के देश में यही एक काम बचा है। गंगातट लाशों से पटे पड़े हों तब भी रैलियों में जय-जयकार करने के लिए भाड़े की भीड़ खरीदी जा सकती है। चुनाव का अपना 'खेला होबे' है। अपनी गद्दी रेशमी लगे तो चुनाव के बहाने मुखिया देश पर हाथ फेर लेता है। गद्दी गीली हो तो विपक्षी 'गद्दी बदलो' अभियान चला चुनाव की माँग कर लेते हैं। पर चुनाव जीतता वही है जिसका मुद्दा मजबूत हो। मुद्दा ऐसा हो जो जनता के दिलो-दिमाग पर छा जाए। काम के नाम पर, राम के नाम पर और विकास के नाम पर जनता को और उल्लू बनाना कठिन है। जनता को अब राजनीति का स्वर्ण पदक चाहिए। जनता को नए मुद्दे चाहिए।

चुनाव के नाम पर जनता सुस्त है, हाँ मुद्दईलाल चुस्त हैं। उनके जबानी पिटारे में मुद्दे ही मुद्दे भरे हैं। कुछ मुद्दे सदियों पुराने हैं पर टिकाऊ हैं, झाड़पोंछ दो तो ताजा होकर चमकने लगते हैं। जैसे पिछड़ेपन का मुद्दा। जनता इतनी पिछड़ी है कि ढँग की सरकार भी नहीं चुन सकती। दशकों बीत गए, जनता अगड़ी बन जाती तो सारे पिछड़े समाप्त हो जाते, देश पिछड़ा नहीं कहलाता। गरीबी हटाना हमारा अमर मुद्दा है। जब तक समोसे में आलू है, देश में गरीबी है। भाषण देकर गरीबी हटाने का जादू करते-करते सरकारें थक गई हैं पर गरीबी इतनी ढीठ है कि जाती ही नहीं। गरीबी रेखा के नीचे मलबे में दबे-कुचले गरीब चुनाव के समय ऊपर उठते दिखते हैं। वे ईवीएम में वोट दर्ज करके आते हैं और फिर गड्ढे में गिर जाते हैं। ऐसा ही ठोस मुद्दा है अल्पसंख्यकों का। मुद्दा पेट्रोल जैसा है, चिंगारी मिल जाए तो सारा देश सुलग जाता है। हर सरकार इस मुद्दे को संभाल कर रखती है और उचित समय पर फूँक मार देती है। जनता समझे इसके पहले राजनेता अपनी रोटियाँ सेंक लेते हैं। महंगाई का मुद्दा सर्वकालिक है। जगह-जगह सरकारें पाँच-दस किलो अनाज मुफ्त बाँट रही हैं, सम्मान निधि दे रही हैं, पैसा लुटा रही हैं। बावजूद इसके महंगाई विधायकों और सांसदों को मिलने वाले वेतन के अनुपात में बढ़ती जा रही है। ऐसी बंदरबाँट चल रही है कि अधिकांश धन उद्योगपतियों की जेब में जा रहा है। उन्हें इतना धन मिल रहा है कि 'हम दो, हमारे दो' वाले मुहावरे का अर्थ बदल गया है। जो सरकार को खिलाता है वही खा पाता है। अर्थव्यवस्था के मुद्दे उछालने में तो शटल-कॉक जैसे लगते हैं पर ये जिसकी तरफ जाते हैं वे उसे दूसरे के पाले में डाल देते हैं। जनता कभी दाएँ, कभी बाएँ देखती है और पाती है कि अर्थव्यवस्था शटल-कॉक जैसी ऊपर जाती दिखती तो है पर हमेशा जमीन पर धड़ाम से गिर पड़ती है।

देश ने कई नए मुद्दे खोजे हैं, जैसे विदेशी सौदों में बिचौलियों का मुद्दा, बोफोर्स, कॉफिन बॉक्स या राफेल का मुद्दा। ये सेना को जितना मजबूत बनाते हैं, दलालों को उससे ज्यादा मजबूत बनाते हैं। 'विन-विन' स्थिति है, तुम्हारी भी जीत, हमारी भी जीत। जनता को यह खेल कभी समझ नहीं आता। पाकिस्तान की सीआईए को जंग लग गई तो नागरिक सीएए के भ्रम में डर रहे हैं। पाकिस्तान पर आतंकवाद का आरोप लगाकर अब झोली भर-भर कर वोट पाना मुश्किल हो सकता है तो जनता में चीन का खौफ फैला कर राष्ट्रवाद की हवा भरी जा सकती है। ट्रैक्टर अब टैंक जैसे हथियार हो गए है। टैंक सीमा पर लड़ते हैं पर ट्रैक्टर बिना नंबर के संसद मार्ग पर दौड़ते हैं। देश को राष्ट्र नहीं बना सकें तो कोई बात नहीं, राजनेता राष्ट्रवाद को एक मुद्दा बना सकते हैं। मुद्दे का सीमित मकसद है कि बस हर मुद्दा एक खबर बन जाए।

''सत्ता बड़ी चालाक है। वह अंध-विपक्षियों को ऐसे गड़े मुद्दे दिखाती है कि वे सरकार के झाँसे में आकर मुद्दे उखाड़ने में अपनी शक्ति झोंक देते हैं। जिन्हें संसद में बहस करनी चाहिए वे पीठ मोड़ कर खड़े हो जाते हैं। आम जनता का निजता, जासूसी या फोन टेप कांड से क्या लेना-देना! इस मुद्दे में जनता की बात कहीं नहीं है पर इस समय का सबसे बड़ा मुद्दा है यह। जो मुद्दे बनना चाहिए, वे मुद्दे बनते नहीं।''

सत्ता बड़ी चालाक है। वह अंध-विपक्षियों को ऐसे गड़े मुद्दे दिखाती है कि वे सरकार के झाँसे में आकर मुद्दे उखाड़ने में अपनी शक्ति झोंक देते हैं। जिन्हें संसद में बहस करनी चाहिए वे पीठ मोड़ कर खड़े हो जाते हैं। आम जनता का निजता, जासूसी या फोन टेप कांड से क्या लेना-देना! इस मुद्दे में जनता की बात कहीं नहीं है पर इस समय का सबसे बड़ा मुद्दा है यह। जो मुद्दे बनना चाहिए, वे मुद्दे बनते नहीं। कोरोना से बेहाली और बर्बादी इस सदी का सबसे बड़ा मुद्दा बनना चाहिए था। बेरोजगारी, अस्पतालों की अंधेरगर्दी, प्रवासी मजदूरों की समस्याएँ और अपराधियों का राजतिलक नासूर की तरह फैलती बीमारी है पर ये मुद्दे नहीं है। ऑक्सीजन कालाबाजारी में लेना पड़े यह मुद्दा नहीं है। पाँच किलो अनाज फ्री, बिजली फ्री, पानी फ्री दे कर कबाड़ी लोग कोड़ियों की लालच में देश हथिया रहे हैं। गलत मुद्दों में फँसा देश है यह।

लेखक वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।
ईमेल : response50123@gmail.com

खबरों में देश-विदेश

■ सोनम जैन

अमेरिका ने छोड़ा अफगानिस्तान, जम्मू-कश्मीर में बढ़ सकती हैं आतंकी घटनाएं

अमेरिका ने तय समय सीमा 31 अगस्त से एक दिन पहले ही अफगानिस्तान से अपने सभी सैनिकों को बुला लिया है। अंतिम सप्ताह में दो बार काबुल एयरपोर्ट पर आईएसआईएस- खुरासान के द्वारा हमले का प्रयास किया गया। पहले हमले में अमेरिका के 13 सैनिकों सहित 170 से अधिक लोगों की जान चली गयी। यह एक आत्मघाती हमला था। इसके बाद दूसरा हमला रॉकेट से किया गया। अमेरिका को पहले ही इसकी आशंका थी, इसलिये उसने इसकी तैयारी कर रखी थी। सभी रॉकेटों की दिशा परिवर्तन कर हमला विफल कर दिया गया। पहले हमले के जवाब में अमेरिका ने दोषी खुरासान आतंकियों को ड्रोन एयरस्ट्राइक कर मारने का दावा किया। अमेरिकी सेना के द्वारा काबुल एयरपोर्ट पर हमले के प्रयास विफल करने के चक्कर में की गई एक और एयरस्ट्राइक में 6 बच्चों की भी मौत हो गयी। अमेरिका की इस जल्दबाजी के कारण भारत अपने लोगों को निकालने में पूरी तरह से सफल नहीं हो पाया। भारत सरकार ने तय किया है कि वो अमेरिकी सेना के जाने के बाद अपने इस अभियान में तेजी लायेगी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसके लिये एक समूह का गठन भी किया है। तालिबान को एयरपोर्ट संचालन का अनुभव नहीं है। उसने इसके लिये तुर्की से सहायता मांगी है। संभव है जब तुर्की के विशेषज्ञ काबुल एयरपोर्ट को दोबारा शुरु कर दें, तो भारत के द्वारा अफगानिस्तान से भारतीयों, हिन्दुओं और सिखों को निकालने के लिये अभियान का दूसरा चरण शुरु किया जाये। अमेरिकी सेना ने भले ही अफगानिस्तान छोड़ते समय काबुल एयरपोर्ट पर सुरक्षा उपकरणों को नष्ट कर दिया हो, लेकिन अमेरिका ने जो सैन्य हथियार अफगानिस्तानी सेना को दिये थे, वो अब तालिबान के हाथ में लग चुके हैं। पाकिस्तान चाहता है कि ये हथियार जम्मू-कश्मीर में सक्रिय आतंकवादी संगठनों को मिल जायें। सूत्रों के अनुसार इससे ये आतंकवादी पहले से अधिक ताकतवर हो जायेंगे, किन्तु प्रदेश की वर्तमान स्थिति में भारतीय सुरक्षाबल भी पहले से अधिक तैयार हैं, इसलिये अधिक अंतर नहीं पड़ेगा। यद्यपि अब आतंकी घटनाएं अधिक होने की संभावना बढ़ गयी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टोक्यो ओलंपिक के खिलाड़ियों से की मुलाकात

इस बार भारत ने अभी तक के ओलंपिक इतिहास में सबसे अधिक 7 मेडल हासिल करके कई नये रिकार्ड बनाये हैं। देश का प्रदर्शन पहले की अपेक्षा बहुत अच्छा रहा। उदाहरण के तौर पर भारतीय महिला हॉकी टीम पहली बार चौथे स्थान पर रही। एक कड़े मुकाबले में यह टीम कांस्य पदक से चूक गयी, लेकिन जिस प्रकार महिला खिलाड़ियों ने प्रदर्शन किया, उसकी प्रशंसा विपक्षी खिलाड़ियों ने भी की। इसी को देखते हुये प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने तय किया था कि इस बार स्वतंत्रता दिवस पर टोक्यो ओलंपिक के लिये चयनित होने वाला खिलाड़ियों का पूरा दल ही विशेष अतिथि होगा। इसके बाद प्रधानमंत्री ने इन सभी खिलाड़ियों से नाश्ते पर मुलाकात भी की। सामान्यत: ऐसे आयोजनों में एक मंच होता है और नीचे खिलाड़ी बैठे रहते हैं। प्रधानमंत्री या मंत्री अपनी बात कहते हैं और कार्यक्रम समाप्त हो जाता है। लेकिन इस बार का दृश्य बिल्कुल अलग था। खिलाड़ियों के लिये अलग-अलग टेबल लगायी गयी थीं। ज्यादातर टेबलों पर एक खेल से जुड़े सभी खिलाड़ियों को बैठाया गया था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी हर टेबल पर गये और वहां खिलाड़ियों के साथ बात की। इस बातचीत का एक बड़ा भाग खिलाड़ियों के व्यक्तिगत जीवन से जुड़ा हुआ था, जिसके कारण खिलाड़ियों ने प्रधानमंत्री से मित्रवत बातचीत की।

तेजस ट्रेन हुई लेट, सभी यात्रियों को कंपनी देगी हर्जाना

भारत में प्राइवेट ट्रेन संचालन करते समय हवाई जहाज की तरह सुविधा और विलंब होने पर हर्जाना देने का प्रावधान किया गया था। इसी आधार पर आईआरसीटीसी ने पूरे देश में तेजस ट्रेनों का संचालन किया था। जहां एक ओर ट्रेनों का लेट होना कोई नई बात नहीं माना जाता है, वहीं तेजस ट्रेन समय से यात्रियों को अपने गंतव्य तक पहुंचाने के लिये जानी जाती है। किंतु हाल ही में लखनऊ से दिल्ली के बीच चलने वाली तेजस ट्रेन पहले बारिश के कारण सिग्नल फेल होने फिर दूसरे दिन अन्य कारणों से लेट हो गयी। नियमानुसार 1 घंटे का विलंब होने पर यात्रियों को 100 रुपये और 2 घंटे से अधिक विलंब होने पर प्रति व्यक्ति 250 रुपये का जुर्माना देना होता है। इस तरह दोनों दिन यात्रा करने वाले कुल 2035 यात्रियों को कंपनी द्वारा 4,49,600 रुपये का हर्जाना दिया जायेगा।

बिहार में 11 चरणों में होंगे पंचायत चुनाव

कोरोना के मामले अब पूरे देश में कम हो रहे हैं, लेकिन यह संकट अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है। इसके बाद भी संवैधानिक व्यवस्थाओं को सुचारु रुप से चलाने के लिये चुनाव आयोग विभिन्न चुनावों का आयोजन कोरोना के मामले कम होने के बाद से निरंतर करा रहा है। आयोग के द्वारा बिहार में पंचायत चुनाव कराने का निर्णय लिया गया है। 11 चरणों में होने वाले मतदान का पहला चरण 24 सितंबर को और अंतिम 12 दिसंबर को होगा। विशेष बात यह है कि हर चरण का चुनाव होने के ठीक बाद ही मतगणना भी शुरु कर दी जायेगी। अधिकांश स्थानों पर मतदान संपन्न होने के 48 घण्टों में ही परिणाम भी आ जायेगा।

उत्तर भारत की खबरें

■ विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन

बनवारीलाल पुरोहित ने पंजाब के राज्यपाल की ली शपथ

तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने पंजाब के राज्यपाल और चण्डीगढ़ के प्रशासक का पदभार संभाल लिया। वे पंजाब के 36वें राज्यपाल हैं। उन्हें पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रविशंकर झा ने पंजाब राजभवन में शपथ दिलायी। इस अवसर पर पंजाब सशस्त्र पुलिस बल की टुकड़ी ने नवनियुक्त राज्यपाल को गार्ड ऑफ आनर दिया। कार्यक्रम में हरियाणा के राज्यपाल बंडारु दत्तात्रेय, हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल, पंजाब के मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह, पंजाब विधानसभा अध्यक्ष राणा के.पी. सिंह, पंजाब सरकार में मंत्री ब्रह्म मोहिंद्रा, मनप्रीत सिंह बादल, पंजाब की मुख्य सचिव विनी महाजन व चंडीगढ़ प्रशासक के सलाहकार धर्मपाल आदि उपस्थित रहे।

जम्मू-कश्मीर के विकास में महिलाओं की भागीदारी आवश्यक : मनोज सिन्हा

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुये जम्मू-कश्मीर के उप राज्यपाल मनोज सिन्हा ने कहा कि जम्मू-कश्मीर में प्रतिभाओं की कोई कमी नहीं है, केवल उन्हें निखारने की आवश्यकता है। जम्मू-कश्मीर के समुचित विकास के लिए आवश्यक है कि हमारी बच्चियाँ अपने ज्ञान, कौशल और आत्मविश्वास से यहाँ के विकास में अपना योगदान दें। मुझे आशा है कि अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद का ये कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। श्री सिन्हा ने बताया कि टाटा टेक्नोलॉजी की मदद से पिछले एक वर्ष में जम्मू और बारामुला में सेंटर फॉर इन्वेंशन, इनोवेशन एंड इन्क्यूबेशन की स्थापना की गई है। आने वाले दिनों में 14 ऐसे केंद्र हम और बनाने जा रहे हैं। स्किल डेवलपमेंट के लिए 200 करोड़ का प्रावधान है। इन प्रयासों से कुशल युवा प्रोफेशनल तैयार होंगे। कार्यक्रम में एआईसीटीई के उपाध्यक्ष एमपी पूनिया, संस्था के सदस्य सचिव राजीव कुमार, छात्र विकास प्रकोष्ठ के निदेशक डॉ. अमित श्रीवास्तव, सहायक निदेशक संजू चौधरी आदि उपस्थित रहे।

किसान आंदोलन के आगे झुकी पंजाब सरकार, गन्ने का भाव 360 रु. प्रति क्विंटल किया

पंजाब में अगले साल विधानसभा चुनाव होने है। ऐसे में किसानों से जुड़ी समस्याओं का मुद्दा एक बार फिर गर्म है। जहां एक ओर स्वयं पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष नवजोत सिंह सिद्धू और उनके समर्थक विपक्षी नेताओं की तरह अपनी ही सरकार को किसानों की बदहाली के लिये कोस रहे हैं और वादाखिलाफी की बात कर रहे हैं। वहीं दूसरी ओर गन्ना मूल्य बढ़ाने को लेकर पंजाब के किसानों ने आंदोलन कर दिया है। पंजाब में लम्बे समय से गन्ने के मूल्य में कोई विशेष वृद्धि नहीं हुई है।

जब इस आंदोलन के कारण पंजाब में जगह-जगह हाईवे और रोड़ जाम होने लगे, तो मुख्यमंत्री कैप्टन अमरिंदर सिंह ने किसानों की मांग मानते हुये गन्ने का मूल्य 310 रु. से बढ़ाकर 360 रु. प्रति क्विंटल कर दिया है। 50 रु. की वृद्धि के बाद अब जाकर गन्ने का मूल्य पड़ोसी राज्य हरियाणा से 2 रु. प्रति क्विंटल अधिक हो पाया है। इस वृद्धि की घोषणा करते हुये कैप्टन ने एक बार फिर दावा किया कि उनकी सरकार किसानों के हित का ध्यान रखते हुये हमेशा निर्णय लेती है और यह प्रयास निरंतर करती रहेगी।

मानदंड पूरा करने वाली अवैध कालोनियां होंगी नियमित : मनोहरलाल

जो लोग वर्षों से एक स्थान पर रह रहे हैं, कानूनन भले ही वो स्थान अवैध कब्जे की श्रेणी में आता हो, लेकिन उसके निर्माण में गरीबों के खून-पसीने की कमाई लगी होती है। इसी बात को ध्यान में रखते हुये हरियाणा की मनोहरलाल सरकार अनाधिकृत कालोनियों को नियमित करने पर विचार कर रही है। मुख्यमंत्री मनोहरलाल ने विधानसभा सत्र समाप्त होने के बाद पत्रकारों से बात करते हुये बताया कि इस प्रक्रिया के लिये 1200 अनाधिकृत कालोनियों ने अपना पंजीकरण कराया है। प्रदेश सरकार के द्वारा कुछ मानदंड तय किये गये हैं, इनको पूरा करने वाली कालोनियों को नियमित किया जायेगा।

प्रोफेसर (डॉ.) अवनीश कुमार ने बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति को भेंट किया चाणक्य वार्ता का 5 वर्षों का संकलन

चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह द्वारा प्रकाशित पाक्षिक पत्रिका चाणक्य वार्ता के पांच वर्षों के सभी 120 अंकों का संकलन, जो 15 खंडों में सजिल्द तैयार कराया गया है, वह देश के सभी प्रमुख पुस्तकालयों में देने की योजना चल रही है। इसी योजना के अंतर्गत 15 खंडों के इस सेट को बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झांसी के पुस्तकालय हेतु चाणक्य वार्ता की ओर से प्रोफेसर अवनीश कुमार ने बुंदेलखंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर जे वी वेश्मपायन को भेंट किया। चाणक्य वार्ता अपने शोधपूर्ण लेखों, राज्यों के विशेषांकों और उच्च कोटि के राजनीतिक विश्लेषण आदि के लिये देश-विदेश में जानी जाती है। कुलपति ने चाणक्य वार्ता टीम का आभार व्यक्त किया।

पूर्वोत्तर भारत की खबरें

■ राजीब अगस्ती/आलोक सिंह

अप्रैल 2022 से असम में लागू होगी नई शिक्षा नीति : हिमंत बिस्व सरमा

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने कहा कि प्रदेश में 1 अप्रैल 2022 से नई शिक्षा नीति (एनईपी) लागू कर दी जायेगी। इसके लिये सभी हाईस्कूलों को सीनियर सेकेंडरी स्कूलों में उच्चीकृत किया जायेगा। हम शिक्षा के बुनियादी ढांचे में भी आवश्यकतानुसार परिवर्तन करेंगे। मुख्यमंत्री ने बताया कि नई शिक्षा नीति को लागू करने के लिये हजारों लोगों को भर्ती किया जायेगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के द्वारा गुवाहाटी के श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र के शिक्षा विभाग से जुड़े 767 उम्मीदवारों को नियुक्ति पत्र भी बांटे गये। कार्यक्रम को संबोधित करते हुये प्रदेश के शिक्षा मंत्री डॉ. रनोज पेगू ने कहा कि अगले 5 साल राज्य के शिक्षा विभाग के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। हम हर साल नई शिक्षा नीति के प्रावधानों को और अधिक प्रभावी ढंग से लागू करने के लिये बदलाव करेंगे। विज्ञान और गणित के विषयों के अतिरिक्त अन्य सभी विषय मातृभाषा में पढ़ाये जायेंगे।

अरुणाचल प्रदेश सरकार ने किसानों से जुड़ी कई योजनाओं को दी मंजूरी

किसानों से जुड़ी दो क्रेडिट लिंक्ड योजनाओं को अरुणाचल प्रदेश की पेमा खांडू सरकार ने मंजूरी दी है। इसके माध्यम से कृषि आधारित क्षेत्रों में 300 करोड़ रुपये के निवेश की सुविधा देने का प्रस्ताव किया गया है। प्रदेश सरकार ने वर्ष 2021-22 के लिये बागवानी को बढ़ावा देने के लिये 60 करोड़ रुपये की सब्सिडी देने की बात भी कही है। प्रदेश के गृह मंत्री बामंग फेलिक्स ने पत्रकारों से बात करते हुये कहा कि मुख्यमंत्री पेमा खांडू की अध्यक्षता में हुई बैठक के अंदर निर्णय लिया गया कि इन योजनाओं के लिये प्रदेश सरकार के द्वारा 45 प्रतिशत की सब्सिडी दी जायेगी। स्वयं सहायता समूहों और किसान उत्पादक संगठनों के द्वारा किसानों को विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया जायेगा। बिना किसी गारंटी के किसानों को 1.6 लाख रुपये तक का लोन दिया जायेगा। स्वयं सहायता समूह 10 लाख रुपये तक का लोन इस योजना के अंतर्गत लिया जा सकता है। इन योजनाओं के कारण प्रदेश सरकार पर 120 करोड़ रुपये का बोझ पड़ेगा।

कृषि पर विशेष ध्यान देकर 2030 तक गरीबी समाप्त करेगा नागालैंड

नागालैंड सरकार ने गरीबी उन्मूलन के लक्ष्य को हासिल करने के लिये कृषि और उससे जुड़े क्षेत्रों पर विशेष ध्यान देने का निर्णय लिया है। इसके लिये प्रदेश सरकार सीएसआर फंड सहित विभिन्न अन्य उपलब्ध संसाधनों से पैसे की व्यवस्था करेगी। इसमें सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) व वित्त पोषण एजेंसियों से ऋण हासिल करने का लक्ष्य रखा गया है। हाल ही में प्रदेश सरकार के द्वारा '2030 दस्तावेज' जारी किया गया था, इसमें गरीबी उन्मूलन सहित 17 लक्ष्य तय किये गए थे। इनमें कई लक्ष्य कृषि क्षेत्र के विकास से जुड़े हुये हैं।

मिजोरम में लगातार बढ़ रहा है कोरोना

देश में जहां एक ओर कोरोना के मामले तेजी से घटे हैं। विभिन्न प्रदेशों के कई जिले कोरोना

मुक्त हो चुके हैं। वहीं दूसरी ओर पूर्वोत्तर राज्यों में कोरोना अभी भी बड़ी समस्या बना हुआ है। मिजोरम में समाचार लिखे जाने के समय सक्रिय कोरोना मरीजों की संख्या 9000 के लगभग थी। राज्य की राजधानी आईजोल में सबसे अधिक 5199 कोरोना के मरीज अपना उपचार करा रहे थे। 1 अगस्त को 11,000 से अधिक कोरोना के सक्रिय मामलों की तुलना में यह आंकड़ा कम है। प्रदेश में सक्रिय कोरोना के मामले 23 अगस्त को कम हो कर 5400 के लगभग तक पहुंच गये थे, फिर यह आंकड़ा बढ़ने लगा, जो चिंता बढ़ाने वाला है। राज्य की जनसंख्या 12 लाख से भी कम है, इसकी तुलना में इतने अधिक कोरोना के नये मामले सामने आने से प्रदेश सरकार भी परेशान है। अभी तक 8.40 लाख कोरोना के टेस्ट किये जा चुके हैं। प्रदेश के 6.7 लाख लोगों को कोरोना का कम से कम एक टीका लगाया जा चुका था, यह आंकड़ा जनसंख्या के आधे से भी अधिक है।

पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग ने मनाया 75 वां स्वतंत्रता दिवस

पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय,शिलांग(नेहू) के प्रांगण में 75वें स्वतंत्रता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नेहू के कुलपति प्रो. प्रभा शंकर शुक्ला ने संबोधित करते हुए कहा कि आज का यह दिन अत्यंत शुभ और ऐतिहासिक है, जब हम अपनी आजादी के इस उत्सव को मना रहे हैं। आज का यह उत्सव विशेष इसलिए भी है कि अगले वर्ष हम आजादी के 75 वर्ष पूरा कर रहे हैं और इसके लिए आजादी के 'अमृत महोत्सव' की शुरुआत प्रधानमंत्री के कर-कमलों से पहले ही हो चुकी है। आज हम सब को गर्व है भारत के उन वीर सपूतों पर जिनके प्रयास से यह आजादी हमें मिली। महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल, वीर भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद के साथ-साथ भारत के वीर सपूत उ तिरोत सिंह, उ कियांग नांगबा, पा तोगन संगमा के बलिदानों को कौन भुला सकता है, जिन्होंने आजादी के सपनों को प्राप्त करने के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. जे.एन.नायक समेत विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी, शोधार्थी, विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

दक्षिण भारत की खबरें

■ नवरतन पींचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय

केरल से भारत में आ सकती है कोरोना की तीसरी लहर

अमेरिका सहित विश्व के कई देशों में एक बार फिर कोरोना के मामले बढ़ने लगे हैं। इससे आशंका व्यक्त की जा रही है कि दुनिया में कोरोना की तीसरी लहर दस्तक दे चुकी है। भारत के दक्षिण भारतीय राज्यों विशेषकर केरल के आंकड़े देखकर लगता है कि हमारे देश में कोरोना की तीसरी लहर यहीं से आ सकती है। समाचार लिखे जाने के समय पूरे भारत में सक्रिय कोरोना मरीजों के लगभग 60 प्रतिशत अकेले मामले केरल में ही थे। सबसे अधिक प्रभावित पांच राज्यों में महाराष्ट्र को छोड़कर अन्य चार केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश दक्षिण भारत से ही हैं। यहां केरल की अपेक्षा अन्य सभी दक्षिण भारतीय राज्यों में संख्या बहुत कम है। लेकिन इसके बाद भी देश के अन्य बड़े प्रदेशों की तुलना में यहां आंकड़े अधिक हैं। देश का सबसे अधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है। यहां मात्र 256 सक्रिय कोरोना के मामले हैं। इसी प्रकार एक अन्य बड़े राज्य मध्य प्रदेश में यह आंकड़ा मात्र 79 ही रह गया है। चिंता की बात यह है कि केरल में सक्रिय कोरोना संक्रमितों का आंकड़ा हर गुजरते समय के साथ लगातार बढ़ ही रहा है। स्वास्थ्य विभाग से जुड़े विशेषज्ञों ने इसको देखते हुये केरल में लॉकडाउन लगाने की सलाह दी है। दक्षिण भारतीय राज्यों में तेलंगाना सबसे कम प्रभावित है। यहां भी सक्रिय कोरोना मरीजों की संख्या 5800 से अधिक है। केंद्रशासित प्रदेश पुडुचेरी जो उत्तर भारत के किसी बड़े शहर से भी छोटा है, वहां भी सक्रिय कोरोना संक्रमित 700 से अधिक हैं।

आंध्र प्रदेश में फिर शुरु हुई सरकारी कार्यालयों में बॉयोमैट्रिक हाजिरी

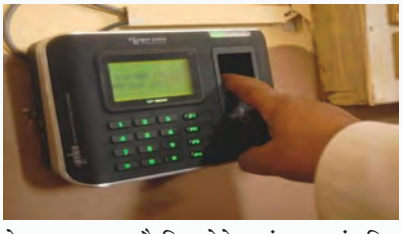

ऐसा माना जाता है कि कोरोना संक्रमण संक्रमित स्थान को छूने और बाद में नाक या मुंह तक ले जाने से भी हो सकता है। ऐसे में विभिन्न राज्यों ने बॉयोमैट्रिक हाजिरी पर रोक लगा दी थी। आंध्र प्रदेश ने अब इस रोक को हटाते हुये बॉयोमैट्रिक हाजिरी को अनिवार्य कर दिया है। प्रदेश के मुख्य सचिव आदित्य नाथ दास ने एक आदेश जारी कर बॉयोमैट्रिक हाजिरी न लगाने वालों पर नियमानुसार कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। आंध्र प्रदेश में इस समय 14,600 से अधिक कोरोना के सक्रिय मामले हैं। देश के अन्य प्रदेशों की तुलना में यह आंकड़ा बहुत बड़ा है। इसके अतिरिक्त जब विश्व में तीसरी लहर की चर्चा है, तो ऐसे में यह आदेश कोरोना को बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

तमिलनाडु सरकार ने 6 सितंबर तक बढ़ाया लॉकडाउन, दी नई छूट

स्टालिन सरकार के प्रयासों के बाद भी तमिलनाडु में सक्रिय कोरोना के मामले 16000 से अधिक बने हुये हैं। इसको देखते हुये मुख्यमंत्री एमके

स्टालिन ने प्रदेश में लॉकडाउन 6 सितंबर तक के लिये बढ़ा दिया है। यदि स्थिति नहीं सुधरी तो यह लॉकडाउन और अधिक बढ़ सकता है। हालांकि तमिलनाडु सरकार ने इसके साथ ही कुछ छूट भी दी है। जैसे कक्षा 9 से 12 तक के स्कूलों को 50 प्रतिशत उपस्थिति के साथ खोला जा सकता है। मुख्यमंत्री ने बताया कि कक्षा 1 से 8 तक के स्कूल को खोलने का निर्णय 15 सितंबर तक की स्थिति देखने के बाद लिया जायेगा। सभी दुकानें 9 बजे के स्थान पर रात्रि 10 बजे तक खुल सकेंगी। सिनेमाहॉलों को भी सशर्त खोलने की अनुमति दे दी गयी है। शुक्रवार, शनिवार व रविवार को धार्मिक स्थल बंद रहेंगे। प्रदेश सरकार कोरोना को नियंत्रित करने के लिये टीकाकरण पर विशेष जोर देगी।

2023-24 तक कर्नाटक के किसानों की आय हो जायेगी दोगुनी : बसवराव बोम्मई

कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने दावा किया कि 2023-24 तक प्रदेश के किसानों की आय दोगुनी हो जायेगी और कर्नाटक ऐसा करने वाला पहला राज्य बनेगा। मुख्यमंत्री ने बताया कि इसके लिये किसानों को साथ मिलाकर एक समिति बनायी जायेगी। यह समिति संबंधित केंद्र सरकार के विभागों के संपर्क में भी रहेगी, जिससे दोनों के समंवय से कोई निर्णय लिया जा सके। इस समिति की रिपोर्ट के आधार पर प्रदेश सरकार अपनी नीतियों में आवश्यक परिवर्तन पर विचार करेगी। माध्यमिक कृषि निदेशालय बनाकर कृषि उत्पादों के प्रसंस्करण के लिये कार्य किया जायेगा।

तेलंगाना सरकार आर्थिक रुप से कमजोर महिलाओं को देगी नौकरियों में आरक्षण

विकास में आधी आबादी की सहभागिता बढ़ाने के लिये तेलंगाना सरकार ने आर्थिक रुप से कमजोर महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 33 प्रतिशत आरक्षण देने का निर्णय लिया है। प्रदेश के मुख्य सचिव सोमेश कुमार के द्वारा जारी आदेश के अनुसार ईडब्ल्यूएस श्रेणी के लिये राज्य सरकार प्रारंभिक नियुक्तियों में महिलाओं को 33.3 प्रतिशत का आरक्षण देगी। इस श्रेणी में वो महिलाएं आयेंगी, जिन्हें एससी, एसटी या ओबीसी श्रेणियों में आरक्षण नहीं मिलता है। आरक्षण का लाभ लेने के लिये परिवार की वार्षिक आय 8 लाख से अधिक नहीं होनी चाहिए।

हरियाणा सरकार

सामान्य इन्वर्टर को सोलर इन्वर्टर में बदलें

आज़ादी का अमृत महोत्सव

हरियाणावासियों को
सोलर इन्वर्टर चार्जर लगवाने पर सब्सिडी

सोलर इन्वर्टर चार्जर लगवाने के लाभ

- बिजली से इन्वर्टर की बैटरी की चार्जिंग की समस्या खत्म।
- बिजली के बिल में बचत।
- मानवता हित में, पर्यावरण के अनुरुप व प्रदूषण रहित बिजली
- पहले पांच साल तक रख-रखाव का खर्च नहीं।

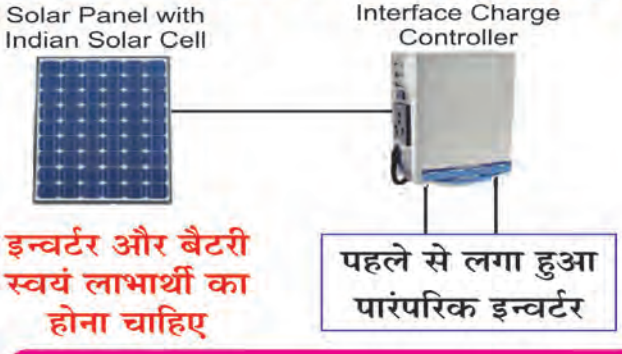

अनुमानित लागत

कैपेसिटी	अनुमानित* लागत	सरकार का तय अनुदान	उपभोक्ता द्वारा देय राशि (अनुमानित)
320 वॉट	18,000 से 24,979 (कम्पनीयों के रेट अनुसार)	6,000	12,000 से 18,979
640 वॉट	28,000 से 39,792 (कम्पनीयों के रेट अनुसार)	10,000	18,000 से 29,792

सोलर इन्वर्टर चार्जर लगवाने के लिये सरल पोर्टल (www.saralharyana.gov.in) पर आनलाइॅन आवेदन करें

नोट : आनलाइॅन आवेदन करते समय छत का फोटो जहां पर सोलर लगवाना है, अपलोड करें।

* सोलर इन्वर्टर चार्जर में सोलर पैनल, इन्टरफेंस चार्ज कंट्रोलर, तारें, संरचना ढांचा व इसको स्थापित करना और पांच वर्ष की वारंटी शामिल होगी। यह प्रणाली बिना चार्ज कंट्रोलर व अतिरिक्त सोलर पैनल के साथ भी स्थापित की जा सकती है।

आवेदकों को विभाग के मानकों के अनुसार विभाग की पैनलबद्ध कम्पनियों (जिनकी विस्तृत जानकारी विभाग की वेबसाइट www.hareda.gov.in पर उपलब्ध है) से रेट में मोल भाव करके सिर्फ लाभार्थी हिस्सा कम्पनी को देकर, उक्त प्रणाली दो महीने के अंदर जारी स्वीकृत्ति पत्र के शर्तानुसार किसी भी कम्पनी से स्थापित करनी होगी। पैनलबद्ध कम्पनियों के नाम व नम्बर निम्न हैं :-

M/s Himalayan Solar Pvt. Ltd.,Panchkula Tel: 8699994870, M/s Sun n Sand Exim (India) Pvt. Ltd., Bahadurgarh Tel:9216504644, M/s Rajasthan Electronics & Instruments Limited(REIL), Jaipur Tel:7727711729, M/s Gautam Solar Pvt. Ltd., New Delhi Tel:8376980796, M/s Fujiyama Power Systems Ltd, New Delhi Tel : 8527544116

अधिक जानकारी के लिए अपने जिले के अतिरिक्त उपायुक्त कार्यालय से संपर्क करें।

नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विभाग, हरियाणा

अक्षय ऊर्जा भवन, सेक्टर-17, पंचकूला दूरभाष : 0172-2587233, 2587833

ई-मेल- hareda@chd.nic.in, website:- www.hareda.gov.in

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा । www.prharyana.gov.in | @DiprHaryana

HIGH-TENSILE THREADED REBAR

Hot Rolled Threaded Bars
Key features:

Fully threaded bar - can be cut and coupled at any point

Robust thread - ideal for use on construction sites

Coarse pitch thread form with two flats ensures self-cleaning of thread

Metaroll
Leading Steel Manufacturers
www.threadedrebars.com

IDPS
Enlightening lives

International Divya Parivar Society

(Registered with Govt. of National Capital Territory of Delhi, Reg. No.5/WEST/2011 5300145)

LEADING NGO IN SKILL DEVELOPMENT

Handicraft Training

Computer Training

Food Product Training

General Sewing Training

Artificial Jwelary Making Training

Certificate & Cheque Distribution

For any query contact us at : 09718681010

divyaparivar@gmail.com • http://www,facebook.com/divya.parivar • htto://www.twitter.com/divya_parivar

www.divyaparivar.co.in

पश्चिम भारत की खबरें

■ आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

ऐसा न हो सत्ता मिलते ही बिखर जाये विपक्षी एकता : उद्धव ठाकरे

अगले साल उत्तर प्रदेश व पंजाब सहित कई राज्यों में चुनाव हैं। इसके अलावा कुछ दल अभी से 2024 लोकसभा चुनाव की तैयारियों के लिये जुट रहे हैं। इस विषय पर शिवसेना प्रमुख व महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे ने गैर भाजपा दलों को चेतावनी दी है कि ऐसा न हो जिस सत्ता को भाजपा से छीनने के लिये सभी विपक्षी दल एक हो रहे हैं, सत्ता के निकट आते-आते यह विपक्षी एकता टूट जाये। उद्धव ने अपना यह बयान कांग्रेस की कार्यकारी अध्यक्षा सोनिया गांधी के घर पर हुई विपक्षी दलों की बैठक के बाद दिया है। उद्धव ठाकरे ने आगे कहा कि सभी विपक्षी दलों को एक दूसरे का भरोसा जीतने के लिये अभी से प्रयास शुरु करना होगा, तभी यह एकता दूर तक जायेगी। कुछ राजनीतिक विशेषज्ञों के अनुसार उद्धव ठाकरे का इशारा समय-समय पर महाराष्ट्र की सत्ताधारी महाविकास अघाड़ी गठबंधन की ओर भी था। इस गठबंधन में शामिल कांग्रेस के नेता कई बार ऐसे बयान दे देते हैं कि उनकी पुरानी सहयोगी पार्टी एनसीपी भी असहज स्थिति में आ जाती है। यदि तीन दल एकमत होकर महाराष्ट्र में ठीक से सरकार नहीं चला पा रहे हैं, तो राष्ट्रीय स्तर पर दो दर्जन से अधिक दल एक साथ कैसे आ पायेंगे।

धर्मांतरण विधेयक से जुड़े उच्च न्यायालय के निर्णय को सुप्रीम कोर्ट में देंगे चुनौती : विजय रुपाणी

मुख्यमंत्री विजय रुपाणी ने प्रदेश सरकार द्वारा पारित धर्म स्वतंत्रता संशोधन कानून 2021 की कुछ धाराओं पर गुजरात उच्च न्यायालय के निर्णय पर एक कार्यक्रम के दौरान अपना पक्ष स्पष्ट किया। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार हिन्दू लड़कियों को धोखे से दूसरे सम्प्रदाय के लड़कों द्वारा विवाह करने से रोकने के लिये हर संभव प्रयास करेगी। गुजरात सरकार के द्वारा इसके लिये पारित कानून की कुछ धाराओं पर रोक लगा दी गयी है। हम शीघ्र ही इस निर्णय को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देंगे। जबरदस्ती कोई भी हमारी बेटियों से विवाह करके उनका धर्मांतरण नहीं करा पायेगा। दरअसल जीमयत उलेमा हिंद, गुजरात ने इस कानून के खिलाफ गुजरात उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की थी। जिस पर सुनवायी करते हुये मुख्य न्यायाधीश विक्रम नाथ और न्यायाधीश बीरेज वैष्णव की खंडपीठ ने गुजरात सरकार के कानून की धारा 5 पर रोक लगा दी थी। इस निर्णय के बाद वर्तमान कानून के अंतर्गत पंजीकृत अहमदाबाद और सूरत आदि जिलों के आधा दर्जन से अधिक मामलों की जांच प्रभावित हो सकती है, इसलिये अब गुजरात सरकार निर्णय को उच्चतम न्यायालय में चुनौती देगी।

भारत में जब तक हिन्दू बहुसंख्यक, तभी तक सुरक्षित है संविधान : नितिन पटेल

भारत माता मंदिर, गांधीनगर में एक कार्यक्रम को संबोधित करते हुये गुजरात के उप मुख्यमंत्री नितिन पटेल ने दावा किया कि भारत में हिन्दुओं के बहुमत में होने के कारण ही कानून का राज कायम है, यदि हिन्दू अल्पसंख्यक हो गये तो कुछ भी नहीं बचेगा, भारत का संविधान भी नहीं। उन्होंने कहा कि मेरे शब्द लिख लीजिए 2000 साल बाद यदि हिन्दुओं की संख्या बहुत कम रह गयी, तो न कोर्ट होगा, न कोई संविधान, सब दफना दिया जायेगा। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि देश में लाखों मुसलमान और ईसाई देशभक्त हैं। गुजरात पुलिस में भी हजारों देशभक्त मुसलमान हैं। मैं सब की बात नहीं कर रहा। उनका इशारा धर्मांतरण की बढ़ती घटनाओं के कारण कम होती हिन्दू जनसंख्या और बढ़ती मुस्लिमों की जनसंख्या की ओर था।

राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने पूर्व मंत्री प्रताप भैया को दी श्रद्धांजलि

भारतीय शहीद सैनिक विद्यालय व आचार्य नरेंद्र देव शिक्षा निधि के द्वारा संयुक्त रुप से पूर्व मंत्री प्रताप भैया की पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। ऑनलाइन आयोजित इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी ने अपना संदेश भेजकर प्रताप भैया को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस संदेश में राज्यपाल ने कहा कि प्रताप भैया ने सदैव राम मनोहर लोहिया व आचार्य नरेंद्र देव के विचारों को अपने जीवन में पूरी तरह से आत्मसात किया। पूर्व मंत्री ने हमेशा नि:स्वार्थ भावना से लोगों की मदद की। पूर्व न्यायाधीश राजेश टंडन, पूर्व विधायक डॉ. एनएस जंतवाल, नैनीताल जिला बार एसोसिएशन की पूर्व अध्यक्ष ज्योति प्रकाश व बिशन सिंह मेहता आदि ने भी पूर्व मंत्री को अपनी श्रद्धांजलि देते हुये कार्यक्रम को संबोधित किया।

इस अवसर पर लोहाघाट पीजी कॉलेज के डॉ प्रकाश लखेड़ा को प्रताप भैया सम्मान से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में तारा बोरा, बसंती खाती, पूरन सिंह खाती, रवींद्र कुमार, प्रो. शुचि बिष्ट, प्रो. मधुरेंद्र कुमार आदि उपस्थित रहे।

दिल में
हिंदुस्तान
देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ
SURYA
MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES
आत्मनिर्भर भारत की पहचान
SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | Toll Free No.: 1800 102 5657

सरकारी नौकरियाँ आज के हर युवा का सपना है। अपने इसी सपने की पूर्ति के लिये हर कोई अपने स्तर पर प्रयासरत है। आपके इसी प्रयास में साथ देने के लिए हमने 'चाणक्य वार्ता' में इस जॉब नोटिफिकेशन को स्थान दिया है, जिससे किसी भी सरकारी नौकरी की सूचना आप तक पहुंच सके। आशा है यह कॉलम आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो रहा होगा।

सरकारी नौकरियों में अवसर

सी.ए. स्वीटी जैन

गुजरात राज्य विद्युत निगम लिमिटेड
पद : मैकेनिक
संख्या : 32
अंतिम तिथि : 14 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.gsecl.in

पंजाब शिक्षा भर्ती बोर्ड
पद : शिक्षक
संख्या : 545
अंतिम तिथि : 3 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.educationrecruitmentboard.com

छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग
पद : पशु चिकित्सा सहायक सर्जन
संख्या : 24
अंतिम तिथि : 15 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.psc.cg.gov.in

तेलंगाना राज्य स्तरीय पुलिस भर्ती बोर्ड
पद : सहायक लोक अभियोजक
संख्या : 151
अंतिम तिथि : 4 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.tslprb.in

न्यूक्लियर पॉवर कॉर्पोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड
पद : एप्रेंटिस
संख्या : 107
अंतिम तिथि : 13 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.npcil.nic.in

इरकॉन इंटरनेशनल लिमिटेड
पद : एप्रेंटिस
संख्या : 32
अंतिम तिथि : 13 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.ircon.org

उत्तराखंड लोक सेवा आयोग
पद : सहायक अभियोजन अधिकारी
संख्या : 63
अंतिम तिथि : 2 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.ukpsc.gov.in

असम चाय कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
पद : कनिष्ठ सहायक
संख्या : 25
अंतिम तिथि : 15 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.atppf.nic.in

अकोला जिला केंद्रीय सहकारी बैंक लिमिटेड
पद : क्लर्क
संख्या : 100
अंतिम तिथि : 4 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.akoladccbank.com

सीएसआईआर-राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान
पद : कनिष्ठ सचिवालय सहायक
संख्या : 15
अंतिम तिथि : 13 सितंबर 2021
वेबसाइट : www.itg.nio.org

संकलनकर्ता 'चाणक्य वार्ता' की आर्थिक सलाहकार हैं।
ई-मेल sjsweetyj@gmail.com

सिनेमा ■ टेलीविजन ■ आयोजन

डॉ. महेश्वर

अभिनेता सिद्धार्थ शुक्ला का निधन

सिद्धार्थ शुक्ला के निधन के बाद उनकी खास दोस्त शहनाज गिल का हाल बेहद बुरा है। सिद्धार्थ शुक्ला के अंतिम संस्कार में शहनाज गिल बेसुध हो गई थीं। शहनाज गिल सिद्धार्थ शुक्ला के पार्थिव शरीर के पैर रगड़ रही थीं। जब शहनाज गिल आई तो वो इतनी जोर से चीखी, 'मम्मीजी, मेरा बच्चा, मम्मीजी, मेरा बच्चा। शहनाज सिद्धार्थ के पार्थिव शरीर के पैर को रगड़ रही थीं शायद वह वापस आ जाए। उसे एहसास भी नहीं था कि सिद्धार्थ शुक्ला अब इस दुनिया में नहीं रहे हैं। वह बिल्कुल सदमे में थीं। वह मानने को तैयार नहीं थीं। शहनाज बेहद कमजोर हो गई थीं, जैसे कोई तूफान आकर गुजर गया और सब कुछ धोकर चला गया है। बिग बॉस 13 के घर में सिद्धार्थ शुक्ला और शहनाज गिल एक दूसरे के करीब आ गए थे। दोनों की जोड़ी को घर के अंदर काफी फुटेज मिली थी। कई बार दोनों के रिलेशनशिप की अफवाहें भी उड़ी थीं। बिग बॉस 13 में इन दोनों की जोड़ी टीवी की सबसे पॉपुलर जोड़ी बन गई थी। जिस वजह से सिद्धार्थ शुक्ला और शहनाज गिल की जोड़ी को सिडनाज का नाम दे दिया गया था। बिग बॉस 13 के दौरान यह दोनों एक दूसरे के साथ काफी क्यूट मोमेंट शेयर करते थे जो दर्शकों को काफी पसंद आता था।

फिर मुश्किलों में थलाइवी

पूर्व अभिनेत्री और तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जे. जयललिता पर बनी कंगना रनोट की फिल्म थलाइवी रिलीज हो रही है। ये फिल्म पिछले साल रिलीज होने वाली थी, हालांकि सिनेमाघरों में ताले पड़े होने के कारण ऐसा नहीं हो सका था। हालांकि अब फिल्म रिलीज के महज कुछ दिनों पहले ही कंगना की फिल्म दोबारा मुश्किलों में फंसती नजर आ रही है। सिनेमाघर वालों ने एक्ट्रेस की फिल्म रिलीज करने से इनकार कर दिया है, ऐसे में एक्ट्रेस ने उनसे अपील कर मदद की गुहार लगाई है। कंगना रनोट ने सोशल मीडिया पर सिनेमाघरों के मालिकों से अपील करते हुए कहा है, कोई फिल्म थिएटर में रिलीज नहीं हो रही है, सिर्फ हमारे प्रोड्यूसर विष्णु और शैलेश जैसे साहसी लोग हैं जो अपने मुनाफे से समझौता करके और एक्सक्लूसिव स्ट्रीमिंग को ठुकराकर सिनेमा के प्यार के लिए थिएटर में फिल्म रिलीज कर रहे हैं। इस मुश्किल समय में हमें एक दूसरे की मदद करनी चाहिए न कि हाथ खींचना चाहिए। अपनी फिल्म की लागत वसूल करना हमारा मौलिक अधिकार है। आगे एक्ट्रेस ने लिखा, हिंदी में हमारे पास दो हफ्ते की विंडो हैं और साउथ के लिए हमारे पास चार हफ्ते की विंडो हैं, इसके बावजूद मल्टीप्लेक्स वाले हमारे खिलाफ गैंगअप करके फिल्म रिलीज नहीं कर रहे हैं। जब महाराष्ट्र जैसे बड़े राज्य के सिनेमाघर भी बंद हैं तो इस मुश्किल समय में ऐसा करना गलत है। सिनेमाघर बचाने के लिए प्लीज एक दूसरे की मदद करें। सोशल मीडिया पर एक वीडियो शेयर करते हुए कंगना ने कहा, थिएटर के कॉन्ट्रैक्ट के अनुसार चार हफ्तों का विंडो होना चाहिए। हिंदी में हम समझते हैं कि उनके पास कोई तो बहाना होना चाहिए लेकिन साउथ इंडस्ट्री में हमारी फिल्म तीन भाषाओं में बनी है और हमने चार हफ्तों का विंडो रखा है, लेकिन वहां भी हमारी फिल्म रिलीज नहीं कर रहे हैं। वो कुछ बड़े स्टूडियोज के नाम ले रहे हैं, कह रहे हैं कि हमारा यशराज वालों के साथ कॉन्ट्रैक्ट है, वो इस बात की अनुमति नहीं देंगे।

कृति सेनन और पंकज त्रिपाठी ने दी मनोरंजन की फुल डिलीवरी, थोड़ा सा दर्द भी...

मिमी यूं तो सरोगेसी के विषय पर बनी फ़िल्म है, मगर फ़िल्म एक बेहद ज़रूर सवाल भी उठाती है। सरोगेसी के ज़रिए जो बच्चा पैदा होता है, उस पर पहला हक़ उन मां-बाप का होता है, जिनसे उसका डीएनए मैच करता है, लेकिन मामला बिगड़ जाए तब इस समस्या का समाधान कैसे निकलेगा। यह नेशनल अवॉर्ड विनिंग मराठी फ़िल्म मला आई व्हायचय (मुझे मां बनना है) से प्रेरित है। 10 साल पहले आयी यह फ़िल्म विदेशियों द्वारा भारत में सरोगेसी के लिए आने की बढ़ती प्रथा की पृष्ठभूमि पर बनी थी। यह कृति सेनन और पंकज त्रिपाठी की बेहतरीन अदाकारी है। राजस्थान के एक कस्बे में रहने वाली मिमी मुंबई जाकर हीरोइन बनने का सपना आंखों में पाले हुए है। अपने सपनों को पूरा करने के लिए मिमी के पास जिस चीज़ की सबसे अधिक कमी है, वो है पैसा। टूरिस्ट गाइड भानु प्रताप फिरंगियों को अपनी गाड़ी में सैर करवाता है। ऐसी ही एक यात्रा के दौरान उसे जॉन और समर मिलते हैं, जो एक सरोगेट मां की तलाश में हैं। जयपुर में प्रवास के दौरान एक कार्यक्रम में वो मिमी को नाचते हुए देखते हैं। अंग्रेज़ जोड़ा भानु प्रताप से कहता है कि उन्हें वैसी ही एक सरोगेट मदर चाहिए, क्योंकि मां एथलीट या डांसर है तो बच्चा हेल्दी पैदा होता है। भानु को पता चलता है कि इसके लिए उसे पांच लाख रुपये मिलेंगे तो वो मिमी को ही राज़ी करने का फ़ैसला करता है। हीरोइन बनने के लिए पैसों के जुगाड़ में लगी मिमी को जब पता चलता है कि उसे 20 लाख रुपये मिलेंगे तो वो तैयार हो जाती है।

देहरादून स्थित होटल मधुबन में 'भारतीय संसद में भगत सिंह कोश्यारी' पुस्तक पर परिचर्चा की कुछ झलकियाँ

दीप प्रज्जवलन द्वारा समारोह का प्रारम्भ करते हुए महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी, चाणक्य वार्ता के सम्पादक डॉ. अमित जैन एवं अन्य अतिथि। साथ ही उपस्थित जन समूह।

मंचासीन अतिथियों भगत दा, पुष्कर सिंह धामी एवं प्रेमचंद अग्रवाल का सम्मान करते हुए चाणक्य वार्ता के पदाधिकारी व उत्तराखंड सरकार के मंत्रीगण

मंचासीन अतिथियों श्याम जाजू, लक्ष्मीनारायण भाला एवं पद्मश्री लीलाधर जगूड़ी के सम्मान का दृश्य

प्रकाशन समूह की ओर से समारोह में सहयोग प्रदान करने वाले कार्यकर्ताओं को स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए डॉ. अमित जैन एवं पुस्तक स्टॉल का दृश्य

विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें पृष्ठ 18 पर

30.8.2021

प्रत्येक माह 1 व 16 तारीख को प्रकाशित
पोस्ट करने की तारीख : 3-4 व 17-18
नई दिल्ली से प्रकाशित
Posted at Delhi RMS - 110006

RNI No. DELHIN / 2016 / 65854
Postal Regn No. DL(W) 10/2230/2019-21
Licensed to Post without Pre-payment
of Postage L.No. U(W)-13/2019-21

चेन्नई स्थित तमिलनाडु राजभवन में 'चरैवेति! चरैवेति!! पुस्तक के तमिल संस्करण के लोकार्पण समारोह की कुछ झलकियाँ

तमिलनाडु के राज्यगीत तमिलताई द्वारा समारोह का प्रारम्भ किया गया। मंच पर उपस्थित हैं तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित, पुस्तक के लेखक राम नाईक, प्रकाशक डॉ. अमित जैन, समाजसेवी एस. गुरुमूर्ति, लक्ष्मीनारायण भाला एवं अन्य अतिथि, साथ ही सभागार में उपस्थित हैं अनेक विशिष्ट जन

तमिलनाडु के राज्यपाल द्वारा पुस्तक लेखक के सम्मान का दृश्य साथ ही मंचासीन अतिथियों का सम्मान करते हुए चाणक्य वार्ता तमिलनाडु के पदाधिकारी

'चरैवेति! चरैवेति!! के तमिल संस्करण के लोकार्पण के बाद मंचासीन अतिथियों ने चाणक्य वार्ता के 'तमिल साहित्य सौन्दर्य' अंक का भी विमोचन किया

समारोह के सहयोगकर्ताओं का अभिनन्दन करते हुए चाणक्य वार्ता प्रकाशन समूह के सम्पादक डॉ. अमित जैन

विस्तृत रिपोर्ट पढ़ें पृष्ठ 23 पर